रत्न संचय

भाग-1

-: संपादक :-

प.पू. आचार्य देव श्री रत्नाकरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्य उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.

॥ श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री जित-हीर-बुद्धि-तिलक-शांतिचंद्र रत्नशेखर-राजेन्द्रसूरिभ्यो नमः ॥

रत्नसंचय

भाग-1

॥ दिव्याशिषदाता ॥

आचार्य देवश्री रत्नशेखर सूरिश्वरजी म.सा.

कलिकुंड तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्री राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा.

शुभाशीर्वाद दाता

आचार्य देव श्री राजशेखर सूरिश्वरजी म.सा.

संपादक

आचार्यदेव श्री रत्नाकर सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्य

उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.

प्रकाशक

श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय

मालवाड़ा (राज.)

पुस्तक नाम : रत्नसंचय भाग-1
संपादक : उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी
प्रथम आवृत्ति : नकल 2,000 संवत : 2052
द्वितीय आवृत्ति : नकल 3,000 संवत : 2055
तृतीय आवृत्ति : नकल 2,000 संवत : 2064
चतुर्थ आवृत्ति : नकल 2,000 संवत : 2070
किंमत : ₹ 50-00 (पच्चास रुपये)

प्राप्तिस्थान

(रत्नसंचय के चारो भाग नीचे के स्थान से मिलेगे)

अमदाबाद : श्री पारस गंगा ज्ञानमंदिर (राजेन्द्रभाई)
बी-१०४, केदार टावर, राजस्थान होस्पिटल के सामने,
शाहीबाग, अमदावाद-380004. (Mob.) 9426539076
राजेन्द्रभाई एन. शाह
बी–3, रत्नधरा एपार्टमेन्ट, गिरधरनगर ब्रीज के पास,
शाहीबाग, अमदावाद–380004
फोन : (079) 22860247 (Mob.) 9426539076

मुंबई : श्री मणीलाल यु. शाह
B-101, फिलजोय, अेम.सी.एफ. क्लब पासे, एस.वी. रोड़,
बोरीवली (वे.) मुंबई–400092 • (Mob.) : 9820185353

अमदावाद : श्री जैन प्रकाशन मंदिर
दोशीवाडानी पोल, कालुपुर, अमदावाद–1
• फोन : (ओ) 25356806

पालीताणा : श्री पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार
फुवारा के पास, तलेटी रोड, पालीताणा–364270 (सो.)

: मुद्रक :
नवनीत प्रिन्टर्स, (निकुंज शाह) 2733, कुवावाली पोल, शाहपुर,
अहमदाबाद • मोबाईल : 98252 61177

प्रस्तावना

मानव जीवन का चरम लक्ष्य है, जन्म जन्मांतर के बंधन से मुक्ति अर्थात् निवार्ण । सन्मति एवं सुसंस्कार उस चरम लक्ष्य की प्राप्ति के रास्ते हैं ।

मानव जीव में सन्मति एवं सुसंस्कार का आविभार्व या जागृति सत्साहित्य के अध्ययन एवं जिनवाणी के श्रवण से ही संभव हैं ।

जिनवाणी का श्रवण तो गुरु भगवंत के श्रीमुख से ही संभव है, और सदा लाभ किसी विरले पुण्यशाली को ही प्राप्य रहता है, किन्तु सत्साहित्य का अध्ययन तो मानव जब चाहे तब कर सकता है ।

शास्त्ररूपी अथवा सागर में अनेक अमूल्य आध्यात्मिक रत्न भरे पडे है । जिन्हे शास्त्रों व महापुरुषो के जीवन के चरित्र के गहन अध्ययन व मंथन से ही प्राप्त किया जा सकता है ।

यहाँ पर उपाध्यायश्री ने उन सभी अमूल्य उपयोगी रत्नो को एक साथ देने का प्रयास किया है, ताकि जिज्ञासु कम परिश्रम से ज्ञान गंगा में अवगाहन कर सके ।

पूर्व में इस पुस्तक की सात गुजराती संस्करण जिज्ञासुओ द्वारा हाथोहाथ अपना लिये गये । हिन्दी भाषी जिज्ञासुओ के अनुरोध पर सांचोर निवासी श्री पुनचंदजी मावाजी अंगारा के सहयोग से मूल्यपुस्तक 'रत्नसंचय' का हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है ।

शास्त्र के अमूल्य रत्नो से युक्त यह पुस्तक जिज्ञासुओं की ज्ञान पिपासा को तृप्त कर उनके ज्ञान व सुसंस्कृत जीवन के विकास में सहायक हो । मात्र ईसी कामना के साथ...

- आचार्य रत्नाकर सूरि

विषयानुक्रमणिका

नं.	विषय	पेज नं.
1.	नमस्कार करे भवपार	1
2.	आराधना के विशिष्ट दिन	3
3.	जिन दर्शन एवं पूजा के रहस्य	6
4.	जिन भक्ति में निमग्न अपने पूर्वज	8
5.	वस्तुपाल तेजपाल की जिन भक्ति	8
6.	पहिचानो एवं आदर करो	8
7.	नवांगी पूजा के कारण	10
8.	विरति वर्णन	11
9.	काउसग्ग का फल	13
10.	प्रतिक्रमण का उपदेश एवं उपकरण देने का फल	13
11	जैन धर्म के रहस्य	13
12	कर्म एवं काल के बारे में जानकारी	24
13	नौ तत्वों का सार	32
14	विविध प्रकार के प्रश्न	35
15	जिन पूजा का प्रभाव	45
16	संक्षिप्त प्रश्नोतरी	45
17	बत्रीस अनंतकाय के नाम	50
18	गुणीजनों के अनुमोंदनीय गुण	50
19	आदि भावों का आख्यान	50
20	चरम पदार्थ का परिचय	51
21	अतीत चोवीशी के नाम	51
22	प्रतिवासुदेव एवं बलदेव के नाम	51
23	कौनसा मद किसने किया	52
24	शत्रुञ्जय के इक्कीस नाम	52
25	सोलह सतीयाँ के नाम	52

नं.	विषय	पेज नं.
26	श्रावक के इक्कीस गुण	52
27	महावीर के 11 गणधर एवं उनका पर्याय	53
28	वीश स्थानक के प्रत्येक पद से परमपद प्राप्ति	53
29	चौद पूर्व के नाम एवं पद	54
30	पिस्तालीस आगम के नाम	54
31	नौ टुंक के निर्माता	55
32	कृष्ण महाराजा के पांच भव	56
33	छः आरोका स्वरुप	56
34	पौषध के अढारह दोष	56
35	श्रावक के 124 अतिचार	56
36	श्रावक के बारह व्रत	57
37	महावीर स्वामी के चातुर्मास	57
38	दशं अच्छेरे	57
39	उपवास का लाभ के उपाय	58
40	उपकारी श्रावको	58
41	कुमारपाल राजा का परिवार	58
42	श्रेणिक राजा की अनहोनी	59
43	राजगृही की आन बान व सान	59
44	नहि बोलने से नौ गुण की प्राप्ति	60
45	प्रभु के वर्षीदान की व्यवस्था एवं अतिशय	60
46	ज्ञान की आशातना से बचिये	61
47	उदयमान व अस्तमान	61
48	सात निन्हव	62
49	जिन पूजा से आठ कर्म का नाश	62
50	सूत्र के दूसरे नाम	63

नं.	विषय	पेज नं.
51	बार पर्षदा	63
52	वीर प्रभु की गति	63
53	महावीर स्वामी के उपासक राजा	64
54	64,000 कलशों का विवरण	64
55	चोवीश तीर्थंकरो का परिवार	64
56	जिन धर्म से जुडे हुए पशु आदि प्राणी	64
57	सूत्रो का क्या उपयोग	66
58	पदार्थो के नाम	67
59	दश प्रकार के कल्पवृक्ष का प्रभाव	70
60	सूत्र के उपयोग की मुद्रा	71
61	छः आवश्यक का स्वरूप	71
62	वीश विहरमान के माता-पिता एवं पत्नी के नाम	71
63	वीर प्रभु के दश स्वप्न का अर्थ	72
64	साध्वी तथा श्राविकाओ के उपकार	72
65	विक्रम राजा के संघ का विवरण	73
66	जैन शासन के उग्र तपस्वी	73
67	फटाके फोडने से आठ कर्म का बंध	74
68	चक्रवर्ती के नौ निधान	74
69	झुठ बोलने के चौदह कारण	74
70	रूप के कारण घटित दुःखद घटनाए	75
71	साधुनां दर्शनं पुण्यम्	75
72	किसको किस प्रकार से वैराग्य हुआ	76
73	आठ प्रभावक	76
74	छद्मस्थ के अदृश्य	76
75	वीर प्रभु के कुटुम्ब की आयु	77
76	देव किसका अपहरण नहिं करते	77
77	मोती की उत्पत्ति कहाँ	77

नं.	विषय	पेज नं.
78	सुघोषा घंट का परिमाण	77
79	अनंती दश वस्तुएं	78
80	पूजा से हुए लाभ	78
81	स्त्री को अप्राप्य भाव	78
82	किस को किस भावना से वैराग्य हुआ	78
83	सात भय	79
84	कुष्ण की आठ पट्टराणी	79
85	स्थूल भद्र की सात बहन	79
86	चक्रवर्ती की ऋद्धि	79
87	प्रभावक आचार्यो एवं साधुओ की संख्या	80
88	तेरह काठिये का स्वरूप	80
89	भाव श्रावक के छ लक्षण	81
90	कौन किस तरह केवली बने	81
91	सिध्धगिरिपर सिद्धि को प्राप्त आत्माएं	82
92	किसके समय में कितने संघपति हुए	83
93	आम राजा का एक प्रसंग	83
94	गिरनार की गरिमा	83
95	गिरनार तीर्थ के नाम एवं ऊंचाई	85
96	भावी तीर्थंकरो की यादी	85
97	निगोद जीवों के भव	85
98	वस्तुपाल तेजपाल के सुकृत	85
99	मंत्रीश्वर की समृद्धि	88
100	मंत्रीश्वरका परिवार	88
101	मंत्रीश्वर का उद्यापन	88
102	सत्संग से सद्योग की प्राप्ति	88
103	सत्संग से होने वाले छः लाभ	89
104	गिरिराज की महिमा	90

नं.	विषय	पेज नं.
105	सिध्धगिरी की वर्तमान कालीन विशेषता	90
106	गौरवशाली की गौरव गाथा	91
107	साधर्मिक भक्ति	93
108	संसारिक संबंधो की उपेक्षा	94
109	कौन कहाँ है ?	95
110	श्रेणीक राजा का परिवार	96
111	श्रेणीक राजा के दश पौत्र की गति	97
112	एसे थे पेथड़ मंत्री	97
113	अयोध्या नगर का वर्णन	99
114	वस्तुपाल तेजपाल के भव	100
115	आम राजा की पौषधशाला	100
116	अकबर बादशाह की क्रूरता	101
117	पंचम काल में सत्य होते तीस वाक्य	101
118	नवपद के नौ गुण एवं वर्ण	102
119	प्रभुके आगमन की बधाई लानेवाले को दिया जाने वाला दान	102
120	प्रभु का प्रसाद काल	102
121	हरिवंश की उत्पत्ति	103
122	वीतराग की विशिष्टता	103
123	भावी तीर्थंकर	103
124	होली का प्रायश्चित्त	104
125	मंगल चैत्य	104
126	जानने योग्य	105
127	विद्वान आचार्य एवं साधु	105
128	बालक हुए सुरीश्वर	107

नवकार करे भवपार

- भावपूर्वक नवकार मंत्र गिनने से चोर, जंगली प्राणी, सांप, अग्नि, राक्षस, राजा आदि का भय नाश होता है । (महानिशीथ सूत्र)
- बच्चे को जन्म के समय नमस्कार महामंत्र सुनाने से मनुष्य का जीवन दुःख रहित का बनता है । और मृत्यु के समय नवकार मंत्र सुनाने से आत्मा की सद्गति होती। जैसे समली का जीव राजपुत्री बनी व चोर का जीव यक्ष बना । (उपदेश - प्रसाद)
- नवकार मंत्र के जाप का फल क्रोड स्तोत्र समान है और
  एक स्तोत्र क्रोड पूजा समान है ।
  क्रोड स्तोत्र समान एक जाप है ।
  क्रोड जाप समान एक ध्यान है ।
  क्रोड ध्यान समान एक लय है । (लय यानि चित्त की एकाग्रता)
  (उपदेश-प्रासाद)
- नवकार मंत्र के एक अक्षर का जाप सात-सागरोपम जितना पाप नष्ट करता है ।
- नवकार मंत्र के एक पदका जाप पचास सागरोपम जितना पाप नष्ट करता है ।
- संपूर्ण नवकार मंत्र गिनने से पांच सो सागरोपम जितना पाप नष्ट होता है ।
- विधिपूर्वक एक लाख नवकार के जाप के साथ प्रभु पूजा करने से तीर्थंकर नाम कर्म उत्पन्न होता है ।
  80808808 नवकार मंत्र गिननेवाला मनुष्य तीसरे भव से मुक्ति को पाता है । (नमस्कार - चिंतामणी)

- कमलबंध से 108 नवकार का जाप करने से मनुष्य भोजन करता है तो भी हंमेशा उपवास का फल प्राप्त करता है ।
- अरिहंत - सिद्ध - आयरिय - उवज्झाय - साहु ये 16 अक्षर का 200 बार जाप करने से एक उपवास का लाभ मिलता है ।
- 'अरिहंत सिद्ध' ये छ अक्षर का 500 बार जाप करने से एक उपवास का लाभ मिलता है ।
- अंगूठे के उपर माला रखके तर्जनी अंगुली से जो नवकारवाली गिनता है, वो मुक्ति सुख को पाता है ।
- मध्यमा अंगुली से गिननेवाला द्रव्यादिक प्राप्त करता है ।
- अनामिका अंगुली से गिननेवाला ग्रहशांति को पाता है ।
- कनिष्ठा अंगुली से गिननेवाला का शत्रु मित्र बन जाता है ।

प्र. नवकारवाली किस तरह गिननी चाहिए ?

उ. नवकारवाली को दांये हाथ के अंगुठे पर रखकर हाथकी दूसरी अंगुली से गिन सकते है और नवकारवाली नासिका के अग्रभाग के उपर न जानी जाहिए व नाभिके नीचे न जानी चाहिए । मेरु का उल्लंघन करना नहिं व मणके को नाखून न लगाना चाहिए । (धर्मसंग्रह)

सूचना : सुबह उठते ही आठ अंगुली के 24 विभागो के कल्पना करके 24 तीर्थंकरो का स्मरण करना एवं हथेली इकठी करके सिद्धशील के आकार को नमस्कार करे । (हितशिक्षा का रास)

आराधना के विशिष्ट दिन

(गुजराती मिती)

- कारकत सुद-1 - गौतम स्वामी केवलज्ञान

- कारतक सुद-2 - दूज की आराधना का प्रारंभ
- कारतक सुद-5 - ज्ञानपंचमी (पंचमी तप का प्रारंभ)
- कारतक सुद-14 - चातुर्मासिक चौदस
- कारतक सुद-15 - द्राविड - वारिखिल्लजी सिद्धगिरि पर 10 करोड मुनिवर के साथ मोक्ष गमन
- कारतक वद-10 - महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
- मागशर सुद-10 - पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
- मागशर सुद-11 - मौन एकादशी (एकादशी तप का प्रारंभ)
- मागशर वद-11 - पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
- फागण सुद-3 - वीश विहरमान के दीक्षा कल्याणक
- फागण सुद-13 - कृष्ण के पुत्र सांब-पद्युम्न साढे आठ क्रोड मुनि के साथ सिद्धगिरि पर सिद्धगमन ।
- फागण सुद-14 - चातुर्मासिक चौदश
- फागण वद-8 - आदिनाथ प्रभु का जन्म व दीक्षा कल्याणक । (वर्षीतप का प्रारंभ)
- चैत्र सुद-7 - शाश्वतीओली का आराधना के दिन
- चैत्र सुद-13 - महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक व वीशविहरमान का केवलज्ञान कल्याणक ।
- चैत्र सुद-15 - पुंडरीक गणधर पांच करोड के साथ साथ सिद्धगिरि पर सिद्ध गमन ।
- चैत्र वद-10 - वीश विहरमान के जन्म कल्याणक
- वैशाख सुद-10 - महावीर स्वामी का केवलज्ञान कल्याणक
- वैशाख सुद-11 - शासन स्थापना दिन
- अषाढ सुद-6 - महावीर स्वामी च्यवन कल्यणक

- अषाढ सुद-14 - चातुर्मासिक चौदश
- अषाढ वद-1 - वीश विहरमान का च्यवन कल्याणक
- श्रावण वद-3 - वीश विहरमान का निर्वाण कल्याणक
- श्रावण वद-12 - अठाईधर (पर्युषण पर्व का प्रारंभ)
- भादरवा सुद-8 - दुबली अष्टमी (अष्टमी तप का प्रारंभ)
- आसो सुद-7 - शाश्वती ओली का प्रारंभ
- आसो सुद-15 - पांच पांडव का 20 करोड मुनि के साथ सिद्धगिरि पर सिद्धिगमन ।
- आसो वद-0)) - महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक

जिन दर्शन एवं पूजा का रहस्य

प्र.1 जिन किसे कहते है ?

उ. जिसने रागद्वेष को जीत लिया है उसे जिन कहते है ।

प्र.2 जिन दर्शन क्यों करना चाहिये ?

उ. अपनी आत्मा की शुद्धि के लिये ।

प्र.3 जिन पूजा कितने प्रकार की होती है ? कौन कौन सी ?

उ. जिन पूजा अष्ट प्रकार की होती है । जल, चंदन और फूल पूजा ये तीन अंग पूजाए है, एवं धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य तथा फल पूजा ये पाँच अग्र पूजाएँ है ।

प्र.4 पूजा करते समय कैसे वस्त्र धारण करना चाहिए ?

उ. पुरुषो को उत्तम प्रकार के बिना सिलाई के दो शुद्ध वस्त्रको पहनना (धारण करना) चाहिए । (नीशीथ सूत्र)

प्र.5 अपने भालस्थ पर तिलक क्यों ओर कैसा धारण करना चाहिए ?

उ. जिनेश्वर प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए मोक्ष प्राप्ति हेतु दीपशिखा

के आकार का तिलक करना चाहिए ।

प्र.6 देरासर (जिन मंदिर) जाते समय निसिहि शब्द क्यों और कहाँ बोलना चाहिये ?

उ. प्रथम निसीहि जिनमंदिर के मुख्य प्रवेश द्वारा मे प्रवेश करते समय तीन बार बोलना चाहिए । यह सांसारिक क्रिया कलापो के त्याग हेतु बोलते हैं । दूसरी निसीहि गंभारे में प्रवेश करते समय देरासर संबंधी कार्यो के त्याग निमित्त बोलना चाहिए । तीसरी निसीहि अष्टप्रकार की पूजा करने के बाद द्रव्य पूजा के त्याग निमित्त बोलना चाहिए । इसीलिए चैत्यवंदन करने के बाद द्रव्य पूजा का निषेध है ।

प्र.7 पूजा करने से पूर्व कितने प्रकार की शुद्धि करनी चाहिए ? कौन कौन सी ?

उ. पूजा करने पूर्व सात प्रकार की शुद्धि करनी चाहिए । वे सात प्रकार है - अंग, वस्त्र, मन, भूमि, उपकरण, द्रव्य एवं विधि-इन 7 की शुद्धि ।

प्र.8 प्रभु के कितने व कौन कौन से अंगो की पूजा करनी चाहिये ? पूजा में कुल कितने तिलक किऐ जाते है ?

उ. प्रभु के नौ अंगो की पूजा होती है । (1) दाहिना अंगूठा / बाया अंगूठा (2) दाहिना घुटना / बाया घुटना (3) दाहिनी कलाई / बायी कलाई (4) दाहिना कंधा (5) मस्तक शिखा (6) ललाट (7) कंठ (8) हृदय (9) नाभि । कुल तेरह तिलक किये जाते हैं ।

प्र.9 द्रव्य पूजा किसे कहते है ।

उ. समर्पण भाव से उत्तम द्रव्यो से की जाने वाली प्रभु की पूजा द्रव्य पूजा कहलाती है ।

प्र.10 भावपूजा किसे कहते है ?

उ. प्रभु के सामने भक्तिपूर्वक की जानेवाली स्तुति, चैत्यवंदन, स्तवन गीतगान आदि भावपूजा कहलाती है ।

प्र.11 स्वस्तिक अक्षत का ही क्यों किया जाता है ?

उ. अक्षत बोने से वापिस उगते नही है । ईसी तरह हमें वापिस जन्म न लेना पडे इस भावना से अक्षत का स्वस्तिक किया जाता है । अक्षत पूजा अक्षय सुखों को दिलानेवाली है ।

प्र.12 स्वस्तिक क्यों किया जाता है ?

उ. संसार भ्रमण की चारो गतियों की मुक्ति के लिये ।

प्र.13 नैवेद्य पुजा किस लिये करते हैं ?

उ. आहार संज्ञा (चेतना) पर नियंत्रण रखने हेतु एवं अणहारी पद प्राप्त करने हेतु ।

प्र.14 फल पूजा क्यों करते हैं ?

उ. मोक्ष फल की प्राप्ति हेतु ।

प्र.15 दर्पण पूजा क्यों की जाती हैं ?

उ. दर्पण में मुख निहार कर प्रभुके समान वीतराग बनने के लिए ।

प्र.16 चामर पूजा किस हेतु करते हैं ?

उ. प्रभु के समक्ष भक्ति एवं बहुमान प्रगट करने के लिये ।

प्र.17 जिन मंदिर जाने से क्या लाभ हैं ?

उ. मात्र इच्छा करने से - **एक उपवास** के फल की प्राप्ति । जाने हेतु खडे होने से - **दो उपवास** के फल की प्राप्ति । जाने हेतु पैर उठाने से - **तीन उपवास** के फल की प्राप्ति । जिनालय तरफ चलने से - **चार उपवास** । आधा मार्ग पार करने से - **पन्द्रह उपवास** के फल की प्राप्ति । जिनालय दिखने लगे तब - **एक मास के उपवास** के

फल की प्राप्ति । जिनालय पहुंचने से - **छः मास के उपवास** का लाभ। जिनालय के द्वार पर पहुंचने से - **एक वर्ष के उपवास** का लाभ । प्रदक्षिणा देने से - **सो वर्ष के उपवास का लाभ** । पूजा करने से - हजार वर्ष के उपवास का लाभ । स्तुति करने से - अनंत गुण फल की प्राप्ति होती है । **(पद्म-चरित्र के अनुसार)**

प्र.18 अष्ट मंगल के नाम क्या है ?

उ. 1. दर्पण, 2. भद्रासन, 3. वर्द्धमान, 4. श्रीवत्स, 5. मीन-युगल, 6 कलश, 7. स्वस्तिक, 8. नंदावर्त, पुद्गलके आकार मनःपरिणाम के साथ गहरा संबंध रखते है, और स्वस्तिक आदिके आकार मंगल परिणाम के हेतु है, अतः उन्हे मंगल रुप माना जाता है ।

प्र.19 बीच में जिनालय आने पर 'नमो जिणाणं' नही कहने पर क्या प्रायश्चित आता है ?

उ. छट्ठ तप का (दो उपवास का) ।

प्र.20 जिनेश्वर प्रभु के सामने कैसे स्तवन, स्तुति बोलने जाने चाहिए ?

उ. जो पूर्वाचार्यो द्वारा रचित हो, और जिस में प्रभु के कल्याणक का या प्रभु के गुणों का वर्णन हो अथवा जिनमें भक्त के दुःखो या दुर्गुणो का वर्णन हो ऐसे स्तवन स्तुति बोले जाने चाहिए ।

प्र.21 त्रिकाल पूजा किस किस समय की जाते हैं ?

उ. प्रथम-सूर्योदय के पश्चात, द्वितीय-दोपहर को दिन के मध्यभाग में, तृतीय-शाम को सूर्यास्त से पहेले ।

प्र.22 फूल पूजा किस प्रयोजन से करते है ?

उ. प्रभु के अंग पर चढने से फूल को जैसे भव्यत्व मिलता है, उसी प्रकार फूल पूजा करने वाले को भी सम्यक्त्व प्राप्त हो इसी भावना से पुष्प पूजा करनी चाहिए । पुष्प जैसी कोमलता हृदय में प्राप्त हो इसलिए ।

प्र.23 धूप पूजा क्यों करते हैं ?

उ. धूप की सुवासित धूम-शेर जैसे उपर जाती है धूप पूजक भक्त भी इसी प्रकार उर्ध्वगति प्राप्त करने की इच्छा से धूप पूजा करता है ।

प्र.24 दीप, पूजा क्यों अथवा किस प्रयोजन से करते हैं ?

उ. अज्ञानरुपी अंधकार को हटाकर सम्यग्ज्ञानरुपी प्रकाश प्राप्त करने हेतु दीपक की पूजा की जाती है ।

प्र.25 मुख कोष कैसा बांधना चाहिये ?

उ. खेस (उतरीय वस्त्र) के आठ पटल करके मुंह बव नाक पर उस प्रकार बांधना चाहिऐ जिससे पूजक का श्वासोश्वास प्रभु को न लगे । बहनो को रेशमी रुमाल उपर वर्णित प्रकार से बांधना चाहिए ।

प्र.26 पूजा के वस्त्र सामायिक प्रतिक्रमण में प्रयोग किये जा सकते है अथवा नहीं ?

उ. पूजा के वस्त्र सामायिक प्रतिक्रमण में प्रयोग नहीं किये जा सकते हैं। वे केवल पूजा व चैत्यवंदनादि तक ही धारण करने चाहिए । (पूजा के कपडे पहनकर व्याख्यान नहि सुना जाता है ।)

जिन भक्ति में निमग्न अपने पूर्वज

- पालनपुर के जिनालय में प्रतिदिन मूडाप्रमाण (100 मण) अक्षत (चावल) व 16 मण सुपारी प्रभु को चढाये जाते थे तथा प्रति दिन 84 श्रीमंत (श्रेष्ठीगण) पालखी में बैठकर देवदर्शन हेतु जिनालय आते थे ।
- कुमारपाल राजा त्रिभुवनपाल विहार में प्रतिदिन 62 सामन्तो तथा 1800 दुर्गपतियो के साथ अष्टप्रकारी पूजा करते थे । वे प्रतिदिन उनके द्वारा निर्मित 32 जिनालयो की चैत्यपरिपाटी पूर्ण करके भोजन करते

थें । उन्होंने 1444 नये जिन बिम्ब भरवाये तथा **त्रिभुवनपाल** विहार में 24 मूर्ति चांदी की एवं 125 इंच की मुलनायक **श्री नेमिनाथ** प्रभु की प्रतिमा बहुमूल्य रत्नो से भरवाई । उन्होने 96 करोड सुवर्ण मुद्राएं केवल एक जिनालय बंधाने मे व्यय की ।

- लंकेश्वर **रावण** के यहां एक गृह मंदिर था । जिसमें नीलमणि की **मुनिसुव्रत** स्वामीजी की प्रतिमाथी जिसकी वह रोज भक्ति करता था । उसने अष्टापद पर्वत पर जिनभक्तिं करते हुए तीर्थंकर नामकर्म बांधा था ।
- हंसराज धारु के पुत्र **जगडूसाहने** सिद्धाचल गिरिपर सवा करोडो के रत्न को देकर तीर्थ-माला को पहना था ।
- सूरिसम्राट बप्पभट्टिसूरीश्वरजी म.सा. प्रतिदिन आकाशगामिनी विद्या द्वारा सिद्धाचल, गिरनार, मथुरा, भरुच तथा गोपालगिरि के दर्शन करके आहार पानी ग्रहण करते थे ।
- आबू के पास स्थित **उवरग्राम** निवासी **पारस** शाह के सुपुत्र **देसल** शाहने 14 करोड स्वर्ण मुद्राए खर्च करके शत्रुंजय आदि तीर्थो की यात्रा की थी ।
- **संप्रति** महाराज हंमेशा एक जिनालय के शिलान्यास (खातमुहुर्त) के समाचार के बाद ही भोजन किया करते थे ।
- **श्रेणीक** महाराज जिस दिशा में प्रभु महावीर विचरते उस दिशा में सात कदम आगे जाके 108 सुवर्ण जव का स्वस्तिक बनाते थे ।

वस्तुपाल - तेजपाल की जिनभक्ति

वस्तुपाल - तेजपाल ने आबू पर 12,5300,000 द्रव्य व्यय करके एक मुख्य जिनालय का निर्माण कराया जिसका नाम लुणिगवसही है ।

उन्होने शत्रुंजय पर 18 करोड 86 लाख द्रव्य खर्च किया ।

उन्होने गिरनार पर भी 12 करोड 80 लाख द्रव्य खर्च किया तथा सभी मंदिरो में स्वर्णालंकार भेट किये ।

थराद के आभु संघवी ने 12 करोड स्वर्णमुद्राएं खर्च करके शत्रुंजय का संघ निकाला ओर 6 लाख 30 हजार धार्मिक पुस्तको का लेखन करवाया तथा 360 कमजोर आर्थिक स्थिति वाले साधार्मिक को अपने समान किया।

प्र. जिनालय में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के नाम गिनाइये ?

उ. कलश, थाली, कटोरी, केशर, बरास, चामर, प्रभु के अंग पींछने के वस्त्र (अंगलुछणा) । किन्तु प्रभु भक्ति कामुख्य उपकरण है विनय व विवेक पूर्वक प्रभु की पूजा करना ।

प्र. प्रभु की तीन प्रदक्षिणा क्यों की जाती है ?

उ. ज्ञान दर्शन एवं चारित्र की प्राप्ति हेतु तथा संसार की 84 लाख जीवायोनियों में निरंतर भटकने के चक्कर से मुक्ति पाने के लिये ।

पहिचानों एवं आदर करो

साधर्मिक : स्वधर्म को मानने वाले साधर्मिक कहलाते है । साधर्मिक को अपने घर लाकर उनकी भक्ति एवं सहायता करनी चाहिये ताकि उनकी हालत भी सुधरे और वे अपने धर्म में आगे बढे ।

स्नात्रपूजा : जिस पूजा में प्रभु के जन्माभिषेक का वर्णन आता है उसे स्नात्रपूजा कहते हैं । स्नात्रपूजा हमारे हृदय के उल्लास को बढाती । इससे हमारे मोहनीय कर्म का नाश होता है तथा विकारभाव क्षीण होता है । स्नात्रपूजा के रचयिता वीरविजयजी म.सा. है ।

उपधानतप : जैन शासन में विविधपूर्वक सूत्र को ग्रहण करने का विशेष महत्त्व है । उपधानतप में तप के साथ विधिपूर्वक गुरु से सूत्र ग्रहण किये

जाते है । अतः उपधान तप अवश्य करना चाहिये ।

जैन पाठशाला : ऐसी पाठशाल जिसमें उत्तम संस्कारो का बीजारोपण एवं सिंचन हो जहां जैन धर्म के रहस्य समझाया जाय एवं सम्यक्ज्ञान का पान कराया जाय उसे जैन पाठशाला कहेंगे ।

जिनागम : जिनेश्वर भगवंत द्वारा अपने श्री मुख से कहे गये शब्दों का गणधर भगवंतो ने संग्रह किया । वे ही संग्रहीत ग्रन्थ जिनागम कहे जाते है । जिन्हें सुनकर स्व पर का कल्याण किया जा सकता है ।

उद्यापन : जिस समारोह में ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र के उपकरण रखे जाते उसे उद्यापन कहते है । उससे ज्ञान दर्शन व चारित्र की अपूर्व भक्ति का लाभ प्राप्त होता है तथा जिससे अपना समकित निर्मल होता है । और साधु-साध्वीको निर्दोष उपकरण की प्राप्ति होती है ।

मौन एकादशी : यह जैन धर्म का एक महान पर्व है । इसदिन मल्लिनाथ अरनाथ एवं नेमिनाथ भगवान के कल्याणक हुए हैं । इस दिन एक उपवास से 150 उपवास का लाभ प्राप्त होता है । इसि दिन 150 नवकारवाली गिनने का प्रावधान है । 5 भरत व 5 ऐरावत क्षेत्रमें अतीत अनागत व वर्तमानकाल के 150 जिनकल्याणक इस पावन दिन में हुए ।

ज्ञानपंचमी : यह भी हमारा महान पुन्यपवित्र दिवस है । इस दिन ज्ञान प्राप्ति एवं ज्ञान वृद्धि की कामना से ज्ञान के पांचो स्वरुपो की आराधना की जाती है । पांच वर्ष व पांच मास तक प्रत्येक शुक्ला पंचमी को उपवासादि करने से ज्ञान पंचमी की आराधना का लाभ मिलता है ।

दीपावली पर्व : इस दिन अपने आसन्न उपकारी वीर प्रभु का निर्वाण कल्याणक व गौतम स्वामी का केवल ज्ञान कल्याणक हुआ था । इस दिन छट्ठ या अट्ठम उपवास करने से कोटि गुणा पुण्य होता है ।

खास पढिये : वीर प्रभु अपने आसन्न उपकारी है । अभी उनका ही शासन

चल रहा है । अतः वीर प्रभु के पांचो कल्याणक के दिनो में उपवास छठ्ठ, अठ्ठम करने से बहुत अधिक लाभ प्राप्त होता है ।

जिनेश्वर भ. के नवांगी पूजा के कारण

प्र.1 चरण अंगूठे की पूजा क्यों करते हैं ?

उ. कैवल्य ज्ञान प्राप्ति के बाद प्रभु ने अपने चरणों द्वारा निरंतर विचरण करते हुए लोगों का उपकार किया ।

प्र.2 घुटने पर पूजा (किस प्रयोजन से) क्यों करते हैं ?

उ. केवल ज्ञान प्राप्ति के पूर्व घुटनों के बल से खडे रहकर समस्त परिषह सहन किए थे इस हेतु ।

प्र.3 भुजा (कलाई) की पूजा क्यों ?

उ. भुजा द्वारा दान देकर ही प्रभु ने जगत का दारिद्रय दूर किया था ।

प्र.4 कंधे की पूजा करने का क्या कारण है ?

उ. समस्त सृष्टि को उठाने की क्षमता होते हुए भी गोवालियादि के दुःसह कष्ट समभाव से सहन किए व कंधे ऊंचे करके अभिमान नहीं बताया इसी से कंधो की पूजा की जाती है ।

प्र.5 मस्तक की पूजा किस कारण से करतें हैं ?

उ. प्रभुने इस लोक में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है । वैसा ही सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिये प्रभु के मस्तक की पूजा की जाती है ।

प्र.6 प्रभु के ललाट पर तिलक (पूजा) किस प्रयोजन से की जाती है ?

उ. प्रभु तीनों लोको में तिलक समान है । प्रभु की भक्ति करके भक्त उनकें समान भाग्य पाने हेतु प्रभु के ललाट की पूजा करता है ।

प्र.7 प्रभु के कंठ की पूजा क्यों की जाती है ?

उ. प्रभुने अपने कंठ से ही उपदेश देकर संसारिक प्राणियो के दुःख दुर किये । उन्हे निर्वाण का सच्चा रास्ता, दिखाया ।

प्र.8 प्रभु के हृदय पर पूजा क्यों करते हैं ?

उ. प्रभु ने अपने उपकारी व अपकारी पर सच्चे हृदय से समभाव रखा। वैसा ही हृदय पाने के लिये हृदय की पूजा की जाती है ।

प्र.9 प्रभु की नाभि की पूजा क्यों की जाती है ?

उ. प्रभु की नाभि के आठो प्रदेश कर्म से रहित है । उसकी पूजा द्वारा हमारे सभी प्रदेश कर्म रहित हों । इसी कामना से नाभि की पूजा की जाती है।

विरति (विरक्ति) वर्णन

प्र.10 सामायिक का क्या अर्थ है ?

उ. जिस क्रिया (आराधना) से समभाव की प्राप्ति हो । उसे सामयिक कहते हैं ।

प्र.11 सामायिक कितने प्रकार का होता है ? कौन कौन ?

उ. सामायिक चार प्रकार का होता है । श्रुत सामायिक, समाकित समायिक, देशविरति सामायिक, सर्वविरति सामायिक ।

प्र.12 सामायिक कहाँ पर किया जा सकता है ?

उ. सामायिक निम्न स्थानो पर किया जा सकता है । (1) पौषधशाला में (2) घर में एकान्त स्थान पर (3) चैत्यशाला में (4) जहां साधु साध्वी ठहरे हो वहां ।

प्र.13 वीर प्रभु ने किस श्रावक के सामायिक की प्रशंसा की ?

उ. पूणिया श्रावक के सामायिक की प्रशंसा की ।

प्र.14 गौतम स्वामी ने कितने तापसो को 'करेमि भन्ते' दिया था ?

उ. 1503 तापसो को ।

प्र.14 सामायिक करते समय कितने दोष लगने की संभावना रहती है ? कौन से ?

उ. 32 दोष लगने की संभावना रहती है । उसमें 10 मन के दोष, 10 वचन के दोष व 12 काया (शरीर) के दोष है । जो निम्न है ।

- **मन के 10 दोष :** (1) शत्रु को देख कर द्वेष / क्रोध करना (2) अविवेक पूर्ण चिन्तन । (3) भावो का विचार न करना । (4) मन से उद्वेग का होना । (5) यश की ईच्छा करना । (6) विनय न करना (7) भयपूर्वक चिन्तन । (8) व्यापार का चिन्तन । (9) (सामायिक के) फल में संदेह रखना । (10) फल की इच्छा से क्रिया करना । (कामना युक्त क्रिया)
- **वचन के 10 दोष :** (1) खराब बोलना । (2) तुंकारा देना । (3) पाप कर्म का आदेश देना । (4) बडबडाना (व्यर्थ प्रलाप करना) (5) कलह अथवा क्लेश करना । (6) संसारी का स्वागत करना । (7) गाली देना (8) बालक को खिलाना । (9) विक्रिया करना । (10) हँसी मजाक करना ।
- **काया (शरीर के 12 दोष) :** (1) आसन को बार बार बदलते रहेना । (2) चारो तरफ देखा करना । (3) पाप कर्म करना । (4) आलस्य मरोड़ना । (5) अभिनय पूर्वक बैठना । (6) दिवार बगैरा का सहारा लेकर बैठना । (7) शरीर का मैल उतारना । (8) खुजली या खाज रखना । (9) पैर पर पैर चढाना । (10) काम वासना से अंग उघाडे-खुल्ले रखना । (11) जंतु / कीटाणु के उपद्रव से भयभीत हो संपूर्ण अंग ढकना । (12) निंदा करना ।

प्र.16 एक 'ईरियावही' में कितने प्रकार से मिच्छामि दुक्कडंम् दिया जाता है ?

उ. अठारह लाख चोवीस हजार एकसो बीस प्रकार से ।

प्र.17 प्रतिक्रमण का क्या अर्थ है ?

उ. पापों से विमुख होना, पाप की शुद्धि करने का अनुष्ठान विशेष ।

प्र.18 प्रतिक्रमण के कितने प्रकार है ? कौन कौन से ?

उ. प्रतिक्रमण के पांच प्रकार है । 1-देवसी, 2-राई, 3-पक्खी, 4-चौमासी, 5-संवत्सरी ।

प्र.19 गृहस्थ के 6 कर्तव्य कौन कौन से है ?

उ. देवपूजा, गुरुवंदन, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान ।

प्र.20 पौषध मे कितने प्रकार के पच्चक्खाण होते है ? कौन कौन से ?

उ. चार प्रकार के पच्चक्खाण होते है । आहार पौषध, शरीर सत्कार पौषध, ब्रह्मचर्य पौषध, अव्यापार पौषध ।

प्र.21 मुहपत्ति का प्रमाण कितना होता है ?

उ. खुद की एक (वेंत) बालिस्त एवं चार अंगुल के बराबर होनी चाहिए। मुंहपत्ति एक तरफ किनारीवाली होनी चाहिये । क्योंकि तीन गति से किनारा नहीं मिलता है । केवल मनुष्य जन्म में ही मोक्षरुपी किनारा है । मुहपत्ति के उपर चित्रामण आदि से दोष लगता है ।

काउसग्ग का फल

1. शुद्ध भाव युक्त श्वासोश्वास प्रमाण का काउसग्ग करने वाला 24508 पल्योपम से कुछ अधिक देवलोक के आयु का पुण्य अर्जित करता है ।
2. आठ श्वासोश्वास अर्थात् समग्र नवकार के काउसग्ग करने से जीव 1963267 पल्पोपम् के देव आयुष्य बांधता है ।
3. पच्चीस श्वासोश्वास अर्थात् चंदेसुनिम्मलयरा तक काउसग्ग करने वाली आत्मा 6135210 पल्पोपम का देव आयुष्य बाँधती है ।

प्रतिक्रमण का उपदेश एवं उपकरण देने का फल

- दस हजार गायो का एक गोकुल होता है वैसे दस हजार गोकुलो की गायो का दान देने के बराबर पुण्य किसी को प्रतिक्रमण का उपदेशदेने से होता है ।
- चौरासी हजार दानशालाओं बंधवाने से जितना पुण्य मिलता है उतना पुण्य गुरु को द्वादशावर्त वंदन करने से मिलता है ।
- 5500 सोना मोहर खर्च कर के **जीवाभिगम पन्नवणा भगवती** सूत्रादि आगम लिखने से जितना पुण्य होता है, उतना ही पुण्य मुँहपति देने से होता है।
- 5500 गर्भवती गायों को अभयदान देने से जितना पुण्य मिलता है उतना पुण्य एक मुँहपति देने वाले को मिलता है ।
- 25000 शिखर युक्त जिनालयो के निर्माण करवाने से जितना पुण्य होता है उतना पुण्य एक चरवला देने से होता है ।
- मासक्षमण की तपस्या अथवा जीवदया हेतु एक करोड पिंजरे निर्मित करवाने के समान पुण्य एक कटासणा देने से होता है ।
- पाँच सो धनुष प्रमाणवाली 28 हजार प्रतिमाएँ भरवाने में जितना पुण्य अर्जित होता है उतना ही पुण्य एक बार ईरियावही करते हुए अर्जित होता है । ('आवश्यक सूत्र' की ऋजुगती सूत्र में वर्णित)
- मुँहपति अथवा चरवला बिना सामायिक आदि कोई क्रिया नहि हो सकती एसी जिनाज्ञा है, अतः चरवला न रखना यह जिन आज्ञा का उल्लंघन है, जो दोष है ।
- कटासणा त्रसकाय जीवो के रक्षार्थ उन का होना चाहिये तथा उसका परिमाण 24 × 21 अंगुल होना चाहिये । कटासणे की किनारी ओटना जीवहिंसा का

कारण है, व नाम लिखना ज्ञान की अशातना का कारण है । हो सके तो कटासणा सफेद रखना चाहिये, जिससे जयणा हो सके ।

- सामायिक, प्रतिक्रमण आदि में श्रावक के लिये जीवरक्षा का साधन चरवला है ।
- दर्शन, पूजन, गुरुवंदन आदि क्रियाओं में जयणा का साधन उत्तरासंग (खेस) है ।

प्र.14 चरवला का माप कितना होना चाहिये ?

उ. खुद के हाथ के अनुसार 24 अंगुल दंडी एवं 8 अंगुल ऊन के दोरे ।

प्र.15 रात्रि में गुरु महाराज के पास जाते समय क्या बोलना चाहिये ?

उ. उपाश्रय में प्रवेश करते समय 'मत्थएण वंदामि' एवं निकलते समय 'त्रिकाल वंदना' बोलना चाहिए । रात को वासपेक्ष का निषेध है ।

प्र.16 तपयुक्त पौषध करने से कितना लाभ होता है ?

उ. मणिजडित सोने की सीढियों से युक्त, सोने के फर्शवाले, हजार खंभो के जिन मंदिर को बनाने से जो फल प्राप्त होता है उससे भी तप युक्त पौषध का फल अधिक है ।

प्र.17 एक सामायिक में कितना लाभ ?

उ. एक लाख वर्ष तक निरंतर एक लाख सोने की मोहर दान की जाएँ तो भी वह लाभ एक सामायिक से प्राप्त होने वाले लाभ से कम ही रहेगा।

प्र.18 कुमारपाल महाराजाने पौषध में क्या सहन किया ?

उ. काउसग्ग अवस्था में उनके शरीर पर एक मकोड़ा चिपट गया जो उन्हें काटने लगा । महाराजा ने शरीर के उस भाग की चमड़ी को काट कर मकोडे की रक्षा की ।

प्र.19 वीर प्रभु के निर्वाण समय में किस स्थान पर कितने राजाओने पौषध किए थे ?

उ. वीर प्रभु के निर्वाण के समय दिपावली के दिन पावापुरी में नव लच्छी नव मल्ली गणराज्यों के राजाओं ने आहार पौषध किया था ।

प्र.20. एक पौषध में कितना लाभ होता है ?

उ. एक दिन के पौषध में 27 अरब 77 करोड 77 लाख 77 हजार 777 पल्योपम से अधिक देवलोक के आयुष्य का बंध होता है ।

(धर्म-संग्रह)

प्र.21 सात क्षेत्रो के नाम बताये ?

उ. सात क्षेत्र है । (1) जिन प्रतिमा, (2) जिनालय, (3) जिनागम, (4) साधु (5) साध्वी (6) श्रावक (7) श्राविका

प्र.22 साधु के उपकरणो के नाम बताईये ?

उ. रजोहरण (ओघा), मुँहपति, दंडा, दंडासण, आसन, संथारा, उत्तरपट्टा, पात्रा, चेतना, तरपणी, चोलपट्टा, कांबली, कपडा आदि ।

प्र.23 शुध्धिपूर्वक एक सामायिक से कितने देव लोक के आयु का बंध होता है।

उ. एक सामायिक में 92 करोड़ 59 लाख 25 हजार 925 से अधिक पल्योपम देवलोक के आयु का बंध होता है ।

प्र.24 सुबह का राई प्रतिक्रमण कितने बजे तक होता है ।

उ. राई प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र की चूलिका के अनुसार सूर्योदय के पूणे घंटे के बाद तक । व्यवहार सूत्र के अनुसार मध्यान्ह तक हो सकता है ।

(धर्म संग्रह)

जैन धर्म के रहस्य

प्र.1 शाश्वत सूत्र कौन से है ?

उ. नवकार मंत्र, करेमिभंते, नमुत्थुणं ।

प्र.2 नवकार मंत्र का आगमिक नाम क्या है ?

उ. पंच मंगल महाश्रुत स्कंध, सर्व सूत्रों में अन्तर्निहित होने से (भगवती सूत्र)

प्र.3 प्रातः 8 नवकार व सायं को 7 नवकार का स्मरण क्यों ?

उ. आठ कर्म के क्षय के लिये प्रातः 8 नवकार व सात भय के नाश के लिए 7 नवकार का स्मरण किया जाता है ।

प्र.4 आठ प्रातिहार्यो के नाम बताइये ?

उ. अशोक वृक्ष, सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल दुंदुभि, छत्रत्रय ।

प्र.5 दस श्रावको के नाम लिखिये ।

उ. (1) आनंद (2) कामदेव (3) चुलणी पिता (4) सुरादेव (5) चुल्लक शतक (6) कुंड कोलीक (7) सद्-दाल पुत्र (8) महाशतक (9) नंदिनी पिता (10) तेतली पिता ।

प्र.6 नियम (बाधा) लेने से क्या फायदा न लेने से क्या हानि होती है ?

उ. नियम लेने से द्रढता बढती है, त्याग की शिक्षा मिलती है, स्थिरता आती हैं, कर्म के दरवाजे बंद होते है और उत्तरोत्तर सच्चे सुख की प्राप्ति होती है । नियम न लेने से पाप की अनुमोदना चालु रहने से कर्म बंध होता है तथा छूट होने से कभी न कभी निर्धारीत नियम का भंग भी होता है । जेसे व्याज पर राशि लाने के बाद उसे काम न लो तो भी व्याज तो लगता है ठीक उसी प्रकार से नियम न लेने से तत्सबंधी पाप तो लगता है ।

प्र.7 संसारी जीव के सात सुख कौन से है ?

उ. (1) रोग रहित होना । (2) कर्ज (ऋण) रहित होना । (3) यात्रादि के सिवाय परदेश न जाना पडे । (4) सुशील पत्नी । (5) पुत्र-पौत्रादि का सुख । (6) सगे-संबंधी अपने पास के हो । (7) पंच महाजनो में प्रतिष्ठा हो ।

प्र.8 तप कितने प्रकार के है ? कौन कोन से ?

उ. तप बारह प्रकार के है । छः बाह्य व छः अभ्यन्तर ।

बाह्य छ तप : (1) अनशन, (2) वृत्ति, (3) संक्षेप, (3) कायक्लेश, (4) उणोदरी, (5) रसत्याग, (6) संलीनता

अभ्यन्तर छ तप : (1) प्रायश्चित, (2) विनय, (3) वैयावच्च, (4) स्वाध्याय, (5) व्युत्सर्ग, (6) ध्यान ।

प्र.9 महावीर प्रभु ने कौन कौन से तप किये थे ?

उ. महावीर प्रभु ने निम्न तप किये थे । एक बार छः मास के उपवास, एक बार 175 दिन के उपवास, दो बार चार महिने के उपवास, दो बार तीन मास के उपवास, दो बार ढाई मास के उपवास, दो बार डेढ मास के उपवास, 12 मासक्षमण, 12 अट्ठम, 12 पांच उपवास, 229 छट्ठ, एक भद्र प्रतिमा तप, एख महाभद्र प्रतिमा तप, एक सर्वतोभद्र प्रतिमा तप । 12 साल 6 मास में 349 दिन आहार लिया तथा 48 मिनिट प्रमाय किया ।

(महावीर चरित्र)

प्र.10 सात प्रकार के गरणो के नाम लिखिए ?

उ. (1) पानी छानने का गरणा (2) छाछ छानने का गरणा (3) दूध छानने का गरणा (4) गरम पानी छानने का गरणा (5) तेल छानने का गरणा (6) घी छानने का गरणा एवं (7) आटा छानने की चारणी (गरणा) ।

प्र.11 जीवो के प्रकार

उ. **भव्य** - मोक्ष जाने की योग्यता वाला ।

अभव्य - मोक्ष जाने में अयोग्य ।

जातिभव्य - मोक्ष जाने की योग्यता होते हुए भी सामग्री के अभाव के कारण जा नहीं सकता ।

तथा **भव्यत्व** - प्रत्येक जीव को विशेष प्रकार की योग्यता ।

प्र.12 बीस विरहमान के नाम लिखिये ।

उ. 1. श्री सीमंधर स्वामी, 2. श्री युगमंधर स्वामी, 3. श्री बाहु स्वामी, 4. श्री सुबाहु स्वामी, 5. श्री सुजात स्वामी, 6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी, 7. श्री ऋषभानन स्वामी, 8. श्री अनंतवीर्य स्वामी, 9. श्री सुरप्रभ स्वामी, 10. श्री विशाल स्वामी, 11. श्री वज्रधर स्वामी 12. श्री चन्द्रानन स्वामी, 13. श्री चन्द्रबाहु स्वामी, 14. श्री भुजंगम स्वामी, 15. श्री ईश्वर स्वामी, 16. श्री नेमिप्रभ स्वामी, 17. श्री वीरसेन स्वामी, 18. श्री महाभद्र स्वामी, 19. श्री देवयशा स्वामी, 20. श्री अजितवीर्य स्वामी.

प्र.13 पच्चक्खान करने से क्या लाभ है ?

उ.
- नवकारसी करने से- 100 वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- पोरसी करने से - 1000 वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है।
- साढपोरसी करने से- 10000 वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है।
- परिमुडढ करने से - 100000 वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है।
- एकासना करने से- 10,00,000 वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है।
- नीवी करने से - एक करोड वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है।

- एकलठाणा करने से - दस करोड वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- दत्ति करने से - 100 करोड वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- आयंबिल करने से - 1000 करोड वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- उपवास करने से - 10,000 करोड वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- अट्ठम करने से - दस लाख वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- हंमेशा गरमपानी पीने से - कोटि कोटि वर्ष का नारकीय का आयुष्य टलता है ।
- एकलठाणा - दिन में एकबार एक आसन पर बैठ के मुँह व हाथ बिना दूसरा अंग नहीं हिलना व भोजन के बाद उसी समय चोविहार करना उसे एकलठाणा कहते है ।
- दत्ति - दिन में एकबार एकधारा से थाली में जो भोजन आता है उसे एक दत्ति कहते है ।

प्र.14 जम्बू स्वामी के निर्वाण के बाद किन किन वस्तुओ का विच्छेद हुआ ?

उ. (1) परम अवधिज्ञान, (2) मनः पर्यवज्ञान, (3) केवलज्ञान, (4) उपशम श्रेणी (5) क्षपक श्रेणी (6) परिहार विशुद्धि चारित्र, (7) सक्ष्य संपराय चारित्र, (8) यथाख्यात् चारित्र, (9) पुलाक लब्धि, (10) आहारक लब्धि, (11) सिद्धिगमन, (12) जिनकल्प (कल्पसूत्र)

प्र.15 चक्रवर्ती के चौदह रत्नों के नाम बताइये ?

उ. 1. चक्र, 2. छत्र, 3. दंड, 4. मणि, 5. काकिणी, 6. सेनापति, 7. गाथापति, 8. पुरोहित, 9. सूत्रधार, 10 स्त्री, 11. घोडा, 12. हाथी, 13 चर्म, 14 तलवार । ये चौदह रत्न 1000 यक्षो से अधिष्ठित होते है । इनका स्पर्श भी आरोग्य दायक होता है ।

प्र.16 वाणी के 6 गुण लिखिये ।

उ. 1. हित, 2. मित, 3. मधुर, 4. अतुच्छ, 5. गर्व रहित, 6. सत्य.

प्र.17 बंबईमें सर्व प्रथम जिनालय का निर्माण कहाँ हुआ ?

उ. सन 1813 में सर्व प्रथम फोर्ट में शान्तिनाथजी के जिनालय का निर्माण हुआ ।

प्र.18 बंबई शहर का नाम मुंबई कैसे पडा ?

उ. सन 1302 में इस शहर मे मुम्बादेवी के मंदिर का निर्माण हुआ और उसी के पीछे मुंबई नाम पडा ।

प्र.19 तुंगीया नगर की क्या विशेषता है ?

उ. उस नगर के लोग रात दिन दरवाजे खुले रखते थे ।

प्र.20 साधु आधाकर्मी (दोषयुक्त) आहार ले तो क्या होता है ?

उ. साधु बिना कारण आधाकर्मी आहार ले तो उसे अनंत सांसारिक भव करने पडते हैं ।

प्र.21 कुमारपाल राजा का क्या नियम था ?

उ. कुमारपाल महाराजा मन से पाप होने पर उपवास, वचन से पाप होने पर आयंबिल, व काया से पाप होने पर एकासणा करते थे । इससे स्पष्ट है कि मन का पाप सबसे बडा पाप है जो अनेक अशुभ कर्मो का जन्म दाता है ।

प्र.22 श्रेणिक राजा के कुल में कितने लोगो ने दीक्षा ली थी ?

उ. राजा की 23 पत्नीयाँ, 23 पुत्रों व 10 पौत्रों ने दीक्षा ग्रहण की थी कुल 56 दीक्षाएँ हुए थी ।

प्र.23 जीवो का हत्यारा होते हुए भी किसने संयम व्रत ग्रहण किया था ?

उ. अर्जुनमाली दृढप्पहारी जिसने वीर प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की थी ।

प्र.24 वासुदेव तथा प्रतिवासुदेव मरकर किस योनी में जाते हैं ?

उ. वासुदेव के हाथ से ही प्रतिवासुदेव की मृत्यु होती है तथा दोनो मरकर नियमा नरक में जाते हैं ।

प्र.25 एकपूर्व का प्रमाण क्या है ?

उ. 70 लाख करोड एवं 56 हजार करोड वर्ष (7056000 करोड वर्ष) ।

प्र.26 छरी पालक के 6 नियम क्या है ?

उ. (1) एकलआहारी, (2) आवश्यकधारी, (3) भूमिसंथारी, (4) सचित्तपरिहारी, (5) पादचारी, (6) ब्रह्मचारी ।

प्र.27 प्रमादवश निगोद में गये चौदह पूर्वी महात्माओं के नाम बताइए ?

उ. भानुदत्तमुनि एवं एसे ही अनेक महात्मा ।

प्र.28 एक सोपारी उछालकर नीचे पडे तब तक 6 श्लोक बनाने वाले का नाम बताईए ?

उ. उपाध्याय यशोविजयजी महाराज साहेब ।

प्र.29 एक नींबु उछालकर नीचे गिरे उतने समय में 9 श्लोक बनाने वाले का नाम ?

उ. आचार्य हेमचन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. ।

प्र.30 शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा किसने भराई थी ?

उ. गत चोवीसी के नवमें तीर्थंकर दामोदर स्वामी से बोध पाकर अषाढी श्रावक ने यह प्रतिमा भराई थी । बाद में उन्हीका गणधर बनकर वह श्रावक मोक्ष गया ।

प्र.31 नेमनाथ प्रभु की प्रतिमा किसने भरायी थी ?

उ. गत चोवीसी के तीसरे तीर्थंकर सागर प्रभु से बोध प्राप्त करके ब्रह्मेन्द्र ने नेमनाथ प्रभु की प्रतिमा भराई थी तथा बाद में वे उनके गणधर बन कर मोक्ष गामी हुए थे ।

प्र.32 बलदेव आयुष्य पूरा करके कहाँ जाते है ?

उ. वे उसी भव में दीक्षा लेकर कर्म शेष होने पर वैमानिक में अन्यथा मोक्ष जाते है ।

प्र.33 वृक्ष पर बैठे बैठे जाति स्मरण ज्ञान किसे हुआ ?

उ. पुरोहित के दो पुत्र देवभद्र व यशोभद्र को ।

प्र.34 प्रत्येक बुद्धों को किस तरह से वैराग्य हुआ ?

उ. नमि - कंकण की आवाज बंद होने से । करकंडू - वृद्ध वृषभ (बेल) को देखने से । दुर्मुख - इन्द्र स्तम्भ को देखकर । नग्गई - वृक्ष के ठूंठे को देखकर ।

प्र.35 प्रभु महावीर के साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओं की संख्या बताओ ?

उ. साधु - 14000, साध्वी - 36000, श्रावक - 159000, श्राविकाओ - 318000 ।

प्र.36 फागुण सुद 13 को 6 कोष की यात्रा क्यो की जाती है ?

उ. इस दिन कृष्ण के पुत्र शांब एवं प्रद्युम्न साढे 8 करोड मुनियों के साथ भाँडवाजी पहाड के शिखर पर मोक्ष गये थे ।

प्र.37 सनत्कुमार चक्र के शरीर में कितने रोग थे तथा कितने समय तक वेदना सहन की ?

उ. सात रोग थे और 700 साल तक वेदना सहन की ।

प्र.38 गजसुकुमालने जिस समय दिक्षा ग्रहण की उस समय उसकी माँ ने उससे क्या कहा था ?

उ. हे पुत्र मुझे छोडकर अब तुं दूसरी माता मत करना (अर्थात् दूसरा जन्म धारण किये बिना मुक्ति को वरना) ।

प्र.39 द्रोपदी ने पूर्व में अनंत भव क्यों किये ?

उ. उसने पूर्वभव में साधु महाराज को कडवी तुंबडी का शाक वोहराया था ।

प्र.40 संग्राम सुनार ने क्या सुकृत किया था ?

उ. मांडवगढ में आचार्य सोम सुंदर सूरीश्वरजी जिस समय भगवती सूत्र का वांचन कर रहे थे उस समय उसने सूत्र वांचन के दौरान आने वाले प्रत्येक 'गोयमा' शब्द के लिये स्वयं स्वर्णमुद्रा अर्पित कि थी । कुल 36,000 स्वर्णमुद्रा रखके ज्ञान भक्ति की ।

प्र.41 नरक के कितने दरवाजे है ? और कौन से ?

उ. नरक के चार द्वार है । (1) रात्रिभोजन, (2) परस्त्रीगमन, (3) बोल आचार भक्षण (4) अनंतकाय भक्षण ।

प्र.42 जम्बूस्वामी ने कितनो के साथ दीक्षा ली ?

उ. जम्बूस्वामी ने अपनी आठ पत्नीयों, आठ पत्नीयों के माता पिता और स्वयं के माता पिता तथा 500 चोरो के साथ दीक्षा ग्रहण की थी ।

प्र.43 वीर प्रभु से दीक्षा लेने वाले श्रीमंतो के नाम बताई ये ?

उ. वीर प्रभु से गोभद्र सेठ, शालीभद्र सेठ, अभयकुमार मंत्री, सुदर्शन शेठ, धन्य कुमार आदि ने दीक्षा ग्रहण की थी ।

प्र.44 वंकचूल ने कौन से चार नियम लिए थे ?

उ. उसने भिन्न चार नियम लिये थे । (1) अनजाना फल नहीं खाना । (2) कौए का मांस न खाना । (3) राजरानी का गमन त्याग । (4) सात कदम पीछे जाकर फिर किसी पर प्रहार / हत्या करना ।

प्र.45 दीपावली पर्व में किस राजा की सभा में कौन सा सूत्र रचा गया ?

उ. हस्तिपाल राजा की सभा में उत्तराध्ययन सूत्र की रचना की गई ।

(दीपाली का कल्प)

प्र.46 पर्युषण पर्व के पाँच कर्तव्य के नाम लिखो ?

उ. (1) अमारी प्रवर्तन (अहिंसा का प्रवर्तन), (2) साधर्मिक भक्ति, (3) चैत्य परिपाटि, (4) अट्ठम का तप, (5) परस्पर क्षमापना (कल्पसूत्र) ।

प्र.47 चूल्हे पर चन्दरवा बाँधने से क्या लाभ है ?

उ. ऐसा करने से प्रतिदिन पाँच तीर्थो की यात्रा अथवा पाँच मुनि महात्माओं को मान से आहार वोहराने के समकक्ष पुण्य लाभ होता है ।

प्र.48 वीर प्रभु की परंपरा में अढारवी पाट प्राप्त करने वाले प्रद्योतन सूरिजी के शिष्य मानदेव विजय ने आचार्य पदवी ग्रहण करने के पूर्व क्या नियम लिया था ?

उ. उन्होंने आचार्य पद ग्रहण करते समय छः विगई के त्याग व भक्त के घर की गोचरी न लेने का नियम लिया था ।

प्र.49 कौन से आचार्य मृत्यु उपरांत सांप बने ? किस कारण से ?

उ. आचार्य **नयशील** सूरिश्वरजी म.सा. । शिष्य के इर्षा रखने के कारण **कालधर्म** प्राप्त करने के बाद साप बने । **(संवेगरंग शाला)**

प्र.50 सुखी कौन ?

उ. श्राद्धविधि के अनुसार बिना फटे वस्त्र वाला व्यक्ति हो, **कर्ज से रहित** हो तथा अल्प घी से रोटी खाने वाला हो, वही व्यक्ति सुखी है ।

प्र.51 60,000 साल तक किसने और क्यो आयंबिल किये ?

उ. भगवान **ऋषभदेव** की पुत्री **सुन्दरी** ने भरत के राग को कम करने के लिये 60,000 साल तक आयंबिल किये थे ।

प्र.52 अष्ट प्रवचन माता का क्या तात्पर्य है ?

उ. संयमधर्म रुपी पुत्र का जन्म व पालन पोषण पाँच समिति एवं तीन गुप्ति से होता है अतः उन्हे (अष्ट) माता कहा गया है ।

प्र.53 कौन से सेठ ने 100 पंखुडियों वाले कमलों की माला से परमात्मा की पूजा की ?

उ. छाडा सेठ ने ।

प्र.54 कौन से श्रावको ने अधिकतम कितने पुष्पो से परमात्मा की पूजा की थी ?

उ. धाईदेव श्रावक ने नौ लाख पुष्पो से व तेजपाल श्रावकने एक करोड पुष्पो से प्रभु की पूजा की थी ।

प्र.55 रात्रिभोजन न करने से क्या लाभ है ?

उ. रात्रिभोजन न करने से अनेक जीवो के घात के पाप से बचते है तथा एक माह रात्रिभोजन न करने से 15 उपवास के समान पुण्य अर्जित होता है ।

प्र.56 लाख योजन की कौन कौन सी वस्तुएँ है ?

उ. जम्बूद्वीप, अप्रतिष्ठान नरकावास, पालक विमान, तथा सर्वार्थसिद्ध विमान ।

प्र.57 45 लाख योजन की कौन कौन सी वस्तुएँ है ?

उ. अढीद्वीप, उडुविमान, सीमंतक नरकावास, एवं सिद्धशीला ।

प्र.58 प्रतिमा से क्या तात्पर्य है यह क्यों करनी चाहिये ?

उ. श्रावक जीवन विशुद्ध बनाने हेतु शास्त्र में 11 प्रतिमाऐ बताई गई है ।

(1) **सम्यक्त्व दर्शन प्रतिमा** - एक महीने तक धर्म में पूर्ण रुचि रखकर विशुद्ध आत्मा/हृदय से समकित के दोषो का त्याग करना ।

(2) **व्रत प्रतिमा** - 2 मास तक श्रावक के 12 व्रतों को पालन करना ।

(3) **सामायिक प्रतिमा** : तीन महिने तक द्विसन्ध्य सामायिक करना एवं देशावगासिक व्रत का पालन करना । (4) **पौषध प्रतिमा** : चार मास तक पाँच तिथि पौषध करना । (5) **कायोत्सर्ग प्रतिमा** : 5 माह तक स्नान नहीं करना, रात्रि भोजन नहीं करना, धोती की लाँग खूली रखना, दिन में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा रात्रि में भी पूर्ण ब्रह्मचर्य की मर्यादा बांधकर तद्नुसार आचरण करके कायोत्सर्गो करना । (6) **ब्रह्मचर्य प्रतिमा** : छः महिने तक मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य का पालन करना । (7) **सचित्ताहार वर्जन प्रतिमा** : आठ महिने तक स्वयं (खुद) आरंभ समारंभ न करे । (9) **प्रेष्यारंभ वर्जन प्रतिमा** : नौ महिने तक संसार व्यवहार संबंधी प्रश्नो मे हाँ / नाँ में परिमित जवाब देना तथा स्वयं आदेश देकर किसी के पास से आरंभ न करना । (10) **उद्दिष्ट त्याग** : दस मास तक अपने उद्देस से बनायी हुई चीजवस्तु का त्याग । (11) **श्रमणभूत प्रतिमा** : 11 माह तक साधु जीवन व्यतीत करना । साधु समान ही भिक्षा आहार करना । ये प्रतिमा धारण करने से साधु जीवन की शिक्षा मिलती है । **(धर्म संग्रह)**

प्र.59 पानी छान कर क्यों पीना चाहिये ?

उ. पानी में अनेकों जीव होते है जो कोरी आँखो से नही देखे जा सकते । उन जीवो के रक्षण के लिये ही पानी छानकर पीना चाहिये । पानी छानने के बाद गरणे को छाने हुए पानी में धोकर सुखाना चाहिये । नल को थेली बांधने से जीवो का रक्षण नही होता सूक्ष्म जीव थेली में ही पडे पडे समाप्त हो जाते है । कुमारपाल महाराज के राज्य में साज लाख घोडो / अश्वो को भी छानकर पानी पिलाते थे ।

प्र.60 द्विदल से आप क्या समझते है ? यह क्यों नहीं खाया जाता ?

उ. कच्चे दूध दहीं या छास के साथ किसी भी कठोल का संयोग द्विदल कहलाता है । द्विदल से असंख्य बेइन्द्रिय जीवो की उत्पत्ति होती है । द्विदल सेवन से उन जीवो का नाश होता है । जो पाप है इसके अलावा द्विदल सेवन

से शरीर में विजातीय द्रव्य पैदा होता है जो शरीर के लिये हानिकारक है। जैसे दहीवडा बनाते समय दही को बराबर उबालना चाहिये नहीं तो द्विदल का दोष लगता है ।

कर्म एवं काल के बारे में जानकारी

प्र.1 कर्म कितने प्रकार के होते है ? कौन कौन से ?

उ. कर्म आठ प्रकार के होते है । (1) ज्ञानवरणीय (2) दर्शनावरणीय (3) वेदनीय (4) मोहनीय (5) आयुष्य (6) नाम (7) गोत्र (8) अन्तराय ।

प्र.2 कर्म के अस्तित्त्व को कैसे जाना जा सकता है ? (अर्थात् कर्म है किस आधार पर कहेगे ?)

उ. दो सगे भाईयों में समान सामग्री का संयोग हेने पर भी एक बुद्धिमान और दूसरा जड होता है । उसका का क्या कारण है ? जो कारण है तो उसे कर्म कहेगे ।

प्र.3 कर्म तो जड है फिर इसका प्रभाव आत्मा पर कैसे पडता है ?

उ. जिस प्रकार ब्राह्मी औषधी के लेने से बुद्धि विकसती होती है तथा मदिरापान से बुद्धि विकृत होती है ठीक वेसा ही प्रभाव कर्म का है । जैसे **मोहनधूल** मस्तक पर पडते ही मानव पागल हो जाता है उसी प्रकार जीव कर्म को ग्रहण करके दुःखी हो जाता है ।

प्र.4 किस क्रिया से कौन सा कर्म बंधन होता है ?

उ. (1) **ज्ञानावरणीय** : ज्ञानी की तथा समकितधारी की ईर्षा करने से गुरु की अवज्ञा से, विद्या पढते विद्यार्थी को अन्तराय करने से, ज्ञान के उपकरणो व अक्षरो वाले साधनों की आशातना करने से, इन्द्रियों के दुरपयोग से इस कर्म का बंध होता है ।

(2) **दर्शन मोहनीय कर्म** : जिनालय में आशातना करने से, समकित की निंदा करने से, देवद्रव्य के भक्षण (हडपने) से, तथा उत्सूत्र प्ररुपणा करने से दर्शन मोहनीय कर्म का बंध होता है ।

(3) **वेदनीय कर्म :** बडे के प्रति भक्तिभाव व आदर रखने से, प्राणी मात्र के प्रति दया व उदारता का भाव रखने से शाता वेदनीय कर्म तथा इससे विपरीत आचरण से अशातावेदनीय कर्म का बंध होता है ।

(4) **मोहनीय कर्म :** विषय कषायो में आसक्त रहने से मोहनीय कर्म का बंध होता है ।

(5) **आयुष्य कर्म :** यह चार प्रकार का होता है ।

(1) **नरकायुष्य (नरकायु) :** महारंभ महा परिग्रह एवं क्रूर भाव से नरकायु बंध होता है ।

(2) **तिर्यञ्च आयु :** माया, छल, कपट आदि से उस आयु का बंध होता है ।

(3) **मनुष्य आयु :** सरल स्वभावी, मंद कषायी तथा दान में रुचिवाला, मनुष्य आयु बंध करता है ।

(4) **देव आयु :** अज्ञान कष्ट सहने से एवं सर्वांग संयम से देशविरति से इस आयु का बंध पडता है ।

(5) **नाम कर्म :** मन, वचन एवं काया की वक्रता से अशुभ नाम कर्म एवं सहयोग की भावना से शुभ नाम कर्म का बंध पडता है ।

(6) **गोत्र कर्म :** स्वप्रशंसा एवं परनिंदा से नीच गोत्र कर्म का एवं इससे विपरीत आचरण से उच्च गोत्र कर्म का बंध पडता है ।

(7) **अंतराय कर्म :** पूजादि में विघ्न पहुँचाने तथा हिंसा के लिये तत्पर रहने से अंतराय कर्म का बंधन होता है ।

प्र.5 योग वक्रता कहते है ?

उ. मन, वचन व काया में अन्तर होना तथा मन वचन काया की अशुभ प्रवृत्ति को योग वक्रता कहा गया है ।

प्र.6 महावीर प्रभु के कान में खीले क्यों टोके गये थे ?

उ. महावीर प्रभु के जीवने त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में शय्या पालक के कान में तप्त शीशा डाला था उसी के परिणाम स्वरुप ।

प्र.7 भगवान सब सत्य कहते है इसकी क्या गारंटी है ?

उ. परमात्मा वीतराग एवं कृतार्थ होने से असत्य कथन से उनको कोई प्रयोजन / तात्पर्य नहीं है । राग द्वेष एवं अपूर्णता के कारण हम (प्राणी) असत्य आचरण करते है किन्तु परमात्मा इन दुर्गुणो से रहित है अतः वहाँ असत्य कथन की कोई गुन्जाइश नही है ।

प्र.8 भगवान वीतराग थे इसकी क्या तसल्ली ?

उ. इनकी प्रतिमा एवं जिनालय होना ही उनके वीतराग होने की गारंटी है । आचार्य हरिभद्र सूरीश्वरजी ने भी कहा है, वपुरेव तवाचस्टे भगवान वीतरागतां ।

प्र.9 श्रावक को सदा क्या करना चाहिये ?

उ. श्रावक को हंमेशा साधु समाचारी सुनना चाहिये ।

प्र.10 किसी भी कार्य सम्पादन के 5 कारण बताइये ?

उ. नियति, स्वभाव, काल, कर्म पुरुषार्थ ।

नियति - भवितव्यता अर्थात् जो होनहार वह होगा, स्वभाव - योग्यता, काल - कार्य परिपाक (पूर्णता) का समय, कर्म - कर्त्ता का विपाक, पुरुषार्थ - परिश्रम करना ।

प्र.11 पदार्थ का स्वरुप बताइये ?

उ. समस्त पदार्थ - अपने पुराने पर्याय रुप से नष्ट होकर नये पर्याय रुप में उत्पन्न होते है किन्तु अपने द्रव्य मूल रुप सभी पदार्थ स्थिर रहते है जैसे सोने से अंगूठी बनाई जाय तो सोना सोने के रुप में ही रहता है ।

प्र.12 रात दिन किस प्रकार होते है ?

उ. सूर्य का प्रकाश नित्य नियमित है ज्यों ज्यों वह आगे बढता है त्यों त्यों पीछे अंधेरा होता जाता है । जैसे मोटर की लाईट ज्यों ज्यों दूर जाती है पीछे अंधेरा होता जाता है ।

प्र.13 गर्मी कम-ज्यादा क्यों होती है ?

उ. सर्दी के सूर्य बाह्य मंडल में होता है इससे हमारे व सूर्य के बीच अन्तर ज्यादा होता है । इससे हमें गर्मी कम मिलती है तथा गर्मी में सूर्य अभ्यंतर मंडल में होने से हमारे नजदीक होता है, इससे हमे गर्मी ज्यादा लगती है । जैसे अग्नि के पास रहने से गर्मी अधिक व दूर रहने से कम लगती है ठीक यही स्थिति गर्मी-सर्दी में सूर्य की रहती है ।

प्र.14 पृथ्वी किस आधार पर स्थिर है ?

उ. पृथ्वी किसी धूरी अथवा कीली के आधार पर स्थिर नहीं है । बलकी आकाशास्तिकाय उसके ऊपर तनवात, उसके ऊपर घनवात, उसके ऊपर घनोदधि, उसके उपर पृथ्वीकायमय रत्नप्रभा नामक नारकी है वही अपनी पृथ्वी है । इसकी मोटाई १ लाख 80 हजार योजन है । अभी तक किसी ने पृथ्वी की कीली देखी नहीं है ।

प्र.15 पृथ्वी की मोटाई में क्या है ?

उ. ऊपर व नीचे के एक हजार योजन छोडकर बीच में नरकावास है ऐसै भुवनपति के भवन है तथा उसके ऊपर हजार योजन में व्यन्तर देवो के आवास है ।

प्र.16 तीर्थंकर का स्वरुप क्या (कैसा) है ?

उ. चतुर्विध संघ की जो स्थापना करे उसी तीर्थंकर कहते है । उसका शरीर सुगन्धमय होता है, उसका रूप देवो से भी अधिक सुन्दर होता है । यह अनंत बल के स्वामी होते है तथा आहार निहार अदृश्य रहता है ।

प्र.17 भगवान सर्व जीवो को शासन रसीक क्यों बनाना चाहते थे ?

उ. उनके हृदय में परम मैत्री भाव था एवं वे सब का कल्याण चाहते थे ।

प्र.18 भगवान ने केवल ज्ञान से क्या देखा ?

उ. उन्होने देखा कि संपूर्ण जगत दु:खी है । उनका दु:ख दिनप्रतिदिन बढता रहता है । इसे समझाना अति कठिन है । संसार के प्राणियों को बोध देने हेतु उन्होने जिन शासन की स्थापना की ।(आचारंग सूत्र)

प्र.19 संसार में रहते हुए धर्म किया जा सकता है । तो फिर दिक्षा की क्या आवश्यकता है ?

उ. संसार में रहते हुए 5 स्थावर काय की हिंसा से बचा नही जा सकता । इसके अलावा संतान प्राप्ति एवं संपत्ति की अनुमोदना की आदत भी बनी रहती है । अत: इन्ही से निजात पाने के लिये दीक्षा आवश्यक है ।

प्र.20 उबाला हुआ पानी (गर्म पानी) पीने में तेऊकाय की बडी विराधना होती है । अत: गर्म पानी पीने में अधिक दोष लगता है तब फिर गर्म पानी क्यों पिया जाता है ?

उ. पानी उबालने में कुछ हिंसा अवश्य होती है किन्तु उसके बाद किसी प्रकार की कोई हिंसा नहीं होती जबकी कच्चे पानी में तो असंख्य जीव पुन: पुन: उत्पन्न होते एवं मरते रहते है । इसी से कच्चा पानी पीने से ज्यादा विराधना होती है ।

प्र.21 फ्रिज में रखी वस्तु क्यों नहीं खानी चाहिये ?

उ. फ्रिज के तापक्रम से अनेको अपकाय के जीव फ्रिज मे रखी चीज के अन्दर प्रवेश कर जाते है तथा ऊपर चिपक जाते है । उन जीवो की विराधना से बचने के लिये फ्रिज में रखी वस्तु नही खाना चाहिये ।

प्र.22 धर्म तो सभी समान है ऐसा लोग क्यों कहते है ?

उ. सभी दर्शनियों ने अपने आचार / आदर्श को धर्म काम नाम दिया ताकि इस नाम से प्रभावित होकर लोग उसे ग्रहण करे । लेकिन प्राणीको मध्यस्थभाव से परीक्षा करके ही सत्य आचरण को ग्रहण करना चाहिये जिससे दुर्गति जाते रुक जाय ।

प्र.23 धर्म के कितने प्रकार है ?

उ. धर्म के चार प्रकार है - दान, शियल, तप एवं भाव दुसरे प्रकार से धर्म के दो प्रकार भी है देशविरति, एवं सर्व विरती ।

प्र.24 द्रव्य प्राण किसे कहते है ? ये कितने होते है ?

उ. जिसके सहयोग से प्राणी जीवत रहता तथा जिसके असहयोग (वियोग) प्राणी मृत्यु प्राप्त करता है उसे द्रव्य प्राण कहते है । उसके 10 भेद है। 5 इन्द्रिय तीन बल श्वासोश्वास एवं आयु ।

प्र.25 सिद्ध का जीव किसे कहते है ?

उ. जो जन्म-मरण, सुख-दुःख, हर्ष-शोक, भूख-प्यास, कर्म एवं शरीर तथा चार गतियों में गमनागमन से मुक्त हो, सिद्ध क्षेत्र में स्थिर हो गये हैं, जो अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन व अनंत सुख के स्वामी है तथा नित्य स्व-सुख में लीन रहते हैं ।

प्र.26 व्यवहार राशि वाला जीव किसे कहते हैं ?

उ. जो जीव एक बार निगोद का स्थान छोडकर पृथ्वी कायादि में उत्पन्न होते हैं ।

प्र.27 अव्यवहार राशि वाले जीव किसे कहते हैं ?

उ. जो जीव अनादि काल से निगोद में पडे हैं ।

प्र.28 विकलेन्द्रिय जीव कौन कौन से है ?

उ. बेइन्द्रिय जीव (अलसीया इत्यादी), तेइन्द्रीय जीव (चीटी-मकोडा इत्यादि) तथा चउरिन्द्रिय जीव (भ्रमर, बिच्छु आदि) ।

प्र.29. पर्याप्ति किसे कहते है ?

उ. आहारादि पुद्गल ग्रहण करके शरीर इत्यादी बनाने की जीव की पौद्गलिक शक्ति विशेष को पर्याप्ति कहते है ।

प्र.30 अकर्म भूमि किसे कहते हैं ?

उ. जिन क्षेत्रों में असि-मसि कृषि का व्यवहार नहीं होता है तथा युगलिकपन का व्यवहार हो उसे अकर्म भूमि कहते हैं ।

प्र.31 देव किसे कहते है ? तथा उसके कितने भेद होते हैं ?

उ. देवगति नामकर्म के उदय से जीव देव गति में उत्पन्न होते है, वे देव कहलाते हैं । इनके चार भेद है : (1) भुवनपति, (2) व्यंतर, (3) ज्योतिषी एवं (4) वैमानिक ।

प्र.32 जब जीव मरता ही नही तो फिर पाप कैसे लगता है ?

उ. प्रत्येक जीव को प्राण अति प्रिय होते है जीवो के अति प्रिय प्राणो को नष्ट करके दुःख पहुँचाने से पाप लगता है ।

प्र.33 जीव तो सभी समान है तब फिर एकेन्द्रिय जीव की हत्या से कम एवं मनुष्यकी हत्या से अधिक पाप क्यों लगता है ?

उ. जीवों की प्राणादी शक्ति में तारतम्यता होने से पाप में अन्तर होता है । पंचेन्द्रिय प्राणी की हत्या में भावों की मलीनता प्रायः अधिक होती है इसी से पाप अधिक होता है ।

प्र.34 किसके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिये ?

उ. अपने से छोटे अथवा अपने निम्न कोटि के सभी जीवों पर दया, अपने समकक्ष प्राणियों के साथ समभाव व अपने बडे अथवा उच्च कोटि के प्राणियों के साथ पूज्य भाव रखना चाहिये ।

प्र.35 परमाधामी देव किसे कहते हैं ?

उ. घोर पापाचार एवं क्रुर व्यवहार करने वाले असूर जाति के देवों को, जो तीसरी नरक तक के नारकीय जीवों का घोर व विविध प्रकार के दु:ख देते हैं। परमाधामी मरकर अंडगोलिक जलचर मनुष्य बनता है वहां यंत्र पीलण में छ महीने तक वेदना सहन कर नरक में जाता हैं ।

प्र.36 तारों से सूर्य कितना ऊँचा हैं ?

उ. भूमि से 780 योजन ऊँचे तारे हैं। तथा वे 2 कोस (1 मील) के आकार के हैं। उनसे 10 योजन ऊँचे सूर्य है किन्तु सूर्य 8 गुणा बडा होने से वह हमें बडा दिखाई देता हैं ।

प्र.37 अजीव द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उ. पांच भेद है। (1) धर्मास्तिकाय, (2) अधर्मास्तिकाय (3) आकाशास्तिकाय (4) पुद्गलास्तिकाय, (5) एवं काल

प्र.38 अस्तिकाय किसे कहते हैं ?

उ. प्रदेशो के समूह को अस्तिकाय कहते हैं ।

प्र.39 धर्मास्तिकाय किसे कहते हैं ?

उ. गति करने में सक्षम हो ऐसे जीव व पुद्गलो की गति में सहायक होता हैं।

प्र.40 अधर्मास्तिकाय किसे कहतै हैं ?

उ. जो स्थिति विशेष में परिणत में सहायक होता है। जैसे थके हुए पथिक को वृक्ष की छाया सहकारी कारण हैं ।

प्र.41 पुद्गल किसे कहतै हैं व इसके कितने भेद हैं ?

उ. सडन, पडन, विध्वंसन, अलग, होने के स्वभाववाले अजीव पदार्थो को पुद्गल कहते हैं। उसके 4 भेद हैं 1. स्कंध, 2. स्कंधदेश, 3. प्रदेश, 4. परमाणु.

प्र.42 परमाणु किसे कहते है ?

उ. स्कंध या प्रदेश से पृथक् हुआ अविभाज्य सूक्ष्मत्तम अंश परमाणु कहलाता है ।

प्र.43 समय कितना सूक्ष्म होता है ?

उ. पलक झपकते ही समय की एक आवलिका एसी 256 आवलिकाओं में निगोद जीव का एक भव होता है । एसे $17^{1}/_{2}$ भवो एक श्वासोश्वास में करता है सात श्वासो श्वास का एक स्तोक एवं सात स्तोकों का एक लव तथा 77 लव का एक मुहूर्त होता है ।

प्र.44 अद्धापल्योपम किसे कहते है ?

उ. असंख्य पूर्व का एक पल्योपम होता है । एक योजन लम्बा, एक योजन चौडा व एक योजन गहेरा कुँआ, युगलीया के बालों से भरना तथा इस में से 100 साल के दौरान एक बाल निकालना इस तरह बाल निकालते निकालते जितनी अवधि मे कुँआ काली होगा उस अवधि को एक पल्य कहेगे । पल्य की उपमा से काल की गिनती करने को पल्योपम कहते हैं ।

प्र.45 सागरोपम किसे कहते है ?

उ. दस कोटाकोटि पल्योपम का एक सागरोपम होता है ।

प्र.46 उत्सर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उ. यह काल दस कोटा कोटि सागरोपम का होता हैं इस काल में जीवों का संघयण एवं संस्थान क्रमशः अधिकाधिक शुभ होते जाते हैं । आयु वृद्धि के साथ साथ उत्थान कर्म बल, वीर्य पुरस्कार एवं पराक्रम बढता जाता है ।

प्र.48 अवसर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उ. यह भी दस करोड सागरोपम का होता है इस काल में शरीर का अवगाहन बल, वायु आदि घटते जातें हैं तथा उत्थान, कर्म बल, पराक्रम एवं साहस कम होते जाते है ।

प्र.48 पुण्य कब व कितने प्रकार से अर्जित होता है ?

उ. पुण्य निम्नानुसार अर्जित किया जा सकता है । इसमें सर्वत्र सात्विक भाव अनिवार्य हैं ।

(1) **अन्न पुण्य** : अन्न दान देने से ।

(2) **पाप पुण्य** : जल दान देने से ।

(3) **लयन पुण्य** : स्थान प्रदान करने से ।

(4) **शयन पुण्य** : शय्या, पाट आदि दान करने से ।

(5) **वस्त्र पुण्य** : वस्त्र दान देने से ।

(6) **मन पुण्य** : मन को शुभ (सात्विक) रखने से ।

(7) **वचन पुण्य** : मुँह से शुभ वचन बोलने से ।

(8) **काम पुण्य** : काया द्वारा जीव दया पालने से ।

(9) **नमस्कार पुण्य** : गुणी जनो को बारंबार नमस्कार करने से ।

प्र.49 परमात्मा का बल कितना होता है ?

उ. परमात्मा अनंत बल के स्वामी होते हैं उनके बल का परिणाम बताना अति कठिन है फिर भी सामान्य व्याख्या निम्न हैं ।

12 योद्धाओ का बल - एक बैल मैं, 10 बैलो का बल - 1 अश्व में, 12 अश्वो का बल - 1 हाथी में, 500 हाथियों का बल - 1 केशरी सिंह में, 2080 केशरी सिंहो का बल - एक अष्टापद में, 10 अष्टापदो का बल - एक वासुदेव में, 2 वासुदेव का बल - एक चक्रवर्ती में, करोडो चक्रवर्ती का बल - एक देव में, करोडो देवों का बल - एक इन्द्र में । इसी प्रकार के अनंत इन्द्र मिलकर भी परमात्मा की तर्जनी को नहीं झुका सकते ।

प्र.50 स्वाध्याय से क्या तात्पर्य है यह कितने प्रकार होता है ?

उ. काल वेला छोडकर नये अथवा पुराने सुत्रो का अध्ययन करना उसे

स्वाध्याय कहते है वह 5 प्रकार का होता है । (1) वाचना, (2) पृच्छना, (3) परावर्तना, (4) अनुप्रेक्षा एवं (5) धर्मकथा । काल वेला में स्वाध्याय करने से जिनाज्ञा का भंग व देव का उपद्रव होता है ।

प्र.51 ध्यान से क्या तात्पर्य है ? ध्यान किसे कहते है ?

उ. एक लक्ष्य मन एकाग्र करना उसे ही ध्यान कहते हैं ।
ध्यान के 4 प्रकार होता हैं । (1) आर्तध्यान, (2) रौद्रध्यान, (3) धर्मध्यान, (4) शुक्लध्यान

प्र.52 जातिस्मरण ज्ञान किसे कहते है ?

उ. पूर्व भव का स्मरण जाति स्मरण ज्ञान कहलाता है ।

प्र.53 जीव एक समय में कितने कर्म पुद्गल परमाणु बाँधता है ?

उ. जीव एक समय में अनंत कर्म पुद्गल परमाणु बाँधता है एवं छोड़ता है ।

नौ तत्त्वो का सार

प्र.54 जीव व अजीव का ज्ञान क्यों होना चाहिये ?

उ. सभी जीव दुःख से निजात पाना व सुख प्राप्त करना चाहते हैं । किन्तु सत्य सार्तक उपायो के अभाव में यह इच्छा पूरी नही होती है । इसी से सर्व प्रथम तो स्वरुप का ज्ञान आवश्यक है । क्योंकि हम पर को स्वमान कर उसे प्राप्त करने के प्रयास करने से दुःखी होते हैं । इसी से स्वआत्मा जीवतत्त्व पर पुद्गल इत्यादी अजीव तत्त्व है । इनका ज्ञान आवश्यक है ।

प्र.55 जीव को किसी ने देखा नहि है ? फिर जीव को कैसे पहचाना ?

उय जीव अरुप होने से आँख से नही देखा जा सकता । परन्तु किस प्रकार शब या मारुति कार को पत्थर मारने पर वे बोलते नहीं हैं किन्तु मारुति कार के मालिक को पत्थर मारने पर वह चिल्लाने लगता है उसका चिल्लाना ही उसमें जीव होना सिद्ध करता है ।

प्र.56 (1) जीव का स्वरुप क्या है ?

उ. दर्शन ज्ञान एवं चारित्र ये ही जीव का स्वरुप है । इसके अलावा, धन, पुत्र, पत्नी आदि जीव का स्वरुप नही हैं । इनके लिये प्रयत्न तो जीव को दुःखी करने वाली क्रिया है । यह ज्ञान होते ही जीव अपने सच्चे स्वरुप को प्रकट करने के सद्उपायों में विरल होता है और उसी से सुखी होता है ।

प्र.56 (2) अजीव का स्वरुप क्या हैं ?

उ. अचेतन पदार्थ को अजीव कहते हैं । अधर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ हैं । जिसका स्वरुप आ गया है ।

प्र.56 (3) पुण्य का स्वरुप क्या है ?

उ. जो आत्मा को पवित्र करता है, जिसकी प्रकृति सुखदायक हो, जिसकी प्राप्ति कठिन हो किन्तु जिसका भोग सुखदायक हो तथा जिसका फल मीठा वही पुण्य हैं ।

प्र.56 (4) पाप का स्वरुप क्या है ?

उ. जो आत्मा को अपवित्र व मलीन करता हैं । जो अर्जित करने में सरल तथा भोग में अत्यन्त दुःख दायक है, उसे पाप कहते है । यह 18 प्रकार से अर्जित किया जाता है ।

प्र.56 (5) आश्रव तत्त्व को जानने की क्या आवश्यकता है ?

उ. जिस क्रिया से शुभ अथवा अशुभ कर्म बंधन होता है, उसके ज्ञान के बिना उचित क्रिया में प्रवृत्त नही हुआ जा सकता है । जैसे मुंबई जाने की इच्छा होते हुए भी मुंबई वाली ट्रेन आदि की जानकारी के अभाव में मुंबई नही जाया जा सकता ।

प्र.56 (6) आश्रव का स्वरुप क्या है ?

उ. जीव की शुभाशुभ प्रवृत्ति में आकर्षित होकर कर्म वर्गणा जीव रुपी

तालाब में पुण्य-पाप रुपी जल के रुप में आते रहते हैं । इस प्रकार कर्म के आगमन को आश्रव कहते है । अथवा जिसके द्वारा आत्मा में कर्म आते है ऐसे शुभ/अशुभ योग को आश्रव कहते हैं ।

प्र.56 (7) संवरका स्वरुप क्या है ? वह क्यों आवश्यक है ?

उ. आश्रव का निरोध होना संवर है । शुभ क्रिया करते हुए भी यदि पाप के विचारों का उपद्रव मन में होता हो तो शुभ क्रिया उचित फल नही दे सकती । अत: पाप के विचारो को रोकना शुभ क्रिया के फल की प्राप्ति के लिये आवश्यक है । जिस प्रकार गटर के पानी में निरन्तर होनेवाली आवक को रोके बिना गटरके पानी में अत्तर डालने से अत्तर सुगन्ध नहीं दे सकती ।

प्र.56 (8) निर्जरा का क्या स्वरुप है ? तथा उसकी क्या आवश्यकता है ?

उ. अंशत: कर्म का परिशाटन होना वह निर्जरा है । मोक्ष प्राप्त करने की ईच्छा वाला जीव एक साथ सभी कर्मबंधन समाप्त नही कर सकता । किन्तु तपादि के द्वारा थोडे थोडे कर्मबंधन को समाप्त कर सकता है । यही सान्त्वना निर्झरा तत्त्व देता है । जैसे एक कर्ज में डूबा व्यक्ति सारा कर्ज एक साथ नहीं अदा कर सकता किन्तु थोडा थोडा अदा करके सारा कर्ज चुका सकता है ।

प्र.56 (9) बंध तत्त्व से आप क्या समजते हैं ?

उ. जैसे क्षीर, नीर के साथ एक हो जाता है । ठीक उसी प्रकार कर्म का आत्मा के साथ जुडना बंध कहलाता है ।

प्र.56 (10) मोक्ष तत्त्व का स्वरुप क्या है ?

उ. सर्व दु:खो का अन्त तथा आत्मा स्वरुप की प्रगटता का नाम ही मोक्ष है । जैसे रेडियो टी.वी. आदि उपकरणो के उपयोग के अभाव में भी निद्रा आनंददायक है । ठीक उसी प्रकार मोक्ष तत्त्व परमानंददायक है ।

प्र.57 वर्गणा कितने प्रकार की है ? कौन कौन सी ?

उ. वर्गणा के आठ भेद है । (1) औदारिक वर्गणा (2) वैक्रिय वर्गणा (3) आहारक वर्गणा (4) तैजस वर्गणा (5) भाषा वर्गणा (6) श्वासोश्वास वर्गणा (7) मनो वर्गणा (8) कार्मण वर्गणा

प्र.58 नो कषाय कौन कौन से है ?

उ. (1) हास्य (2) रति (3) अरति (4) भय (5) शोक (6) जुगुप्सा (7) स्त्रीवेद (8) पुरुषवेद (9) नपुंसक वेद.

प्र.59 संघयण से क्या तात्पर्य है ? उसके कितने प्रकार है ?

उ. शरीर के हड्डियों के बंध को अर्थात् मजबूताई को संघयण कहते है । इसके छः प्रकार होते है । (1) वज्र ऋषभनाराय (2) ऋषभनाराच (3) नाराच (4) अर्ध्दनाराच (5) कीलीका (6) छेवट्ठु

प्र.60 संस्थान का क्या तात्पर्य है ? यह कितने प्रकार के है ?

उ. शरीर के आकार को संस्थान कहते है । यह छः प्रकार का होता है । (1) समचतुरस्र संस्थान (2) न्यग्रोध परिमंडल (3) सादि (4) वामन (5) कुब्ज (6) हुंडक

प्र.61 अंतराय कर्म के कितने भेद है ?

उ. अंतराय क़र्म के भेद है । (1) दानांतराय (2) लाभांतराय (3) भोगान्तराय (4) उपभोगान्तराय (5) वीर्यांतराय

(1) दानांतराय : दान की सामग्री व सुपात्र दोनो के होते हुए भी पूर्वकर्म के उदय से दान नहीं दिया जाता उसे दानांतराय कहते है ।

(2) लाभान्तराय : दाता व इच्छित (योग्य) वस्तु होते हुए भी उसकी प्राप्ति न होना लाभांतराय कहलाता है ।

(3) **भोगान्तराय** : पच्चक्खाण न होते हुए भी व्यक्ति इच्छित योग्य वस्तु सुलभ होते हुए भी रोगादि के कारण या कर्म के वशीभूत व्यक्ति उसे भोगने से वंचित रहता है । इसे भोगान्तराय कहते हैं ।

(4) **उपभोगान्तराय** : पच्चक्खाण न होते हुए भी व्यक्ति सुलभ उपयोग की वस्तु का कर्म के उदय से रोगादि के कारण अथवा कृपणता वशीभूत उपयोग न कर सके उसे उपभोगान्तराय कहते हैं ।

(5) **वीर्यान्तराय** : कर्म के उदय से तरुणावस्था व निरोगी शरीर होते हुए भी कर्मो के वशीभूत व्यक्ति प्राणशक्ति से रहित होवे तथा सत्त्वहीन की तरह प्रतिक्रमण आदि क्रिया आचरण करे उसे वीर्यान्तराय कहते हैं ।

प्र.62 मोहनीय कर्म की अवधि कितनी होती है ?

उ. जधन्य से अंतमूहुर्त, उत्कृष्ट से 70 कोड़ा-कोडी सागरोपम ।

प्र63 समुद्घात किसे कहते है ? उसके कितने प्रकार है ?

उ. कर्म के अंशो को उदीरणा द्वारा समय से पहले उदय में लाकर उनका घात करना समुद्घात कहलाता है । इसके 7 प्रकार है । (1) वेदना (2) कषाय (3) मरण (4) वैक्रिय (5) तेजस (6) आहारक (7) केवली

विविध प्रकार के प्रश्न

प्र.64 भव्य जीव कितने प्रकार के होते है रत्नसंचय भाग-१ कौन से ?

उ. भव्य जीव तीन प्रकार के होते है । (१) आसन्न भव्य - जल्दी मोक्ष जानेवाले (२) मध्यम भव्य - थोडे भव करने के बाद मोक्ष जानेवाले (३) दुर्भव्य काफी कालोपरान्त मोक्ष जानेवाले ।

प्र.६५ जैन धर्म कितना प्राचीन है ?

उ. जैन धर्म अनादि काल का है । इस बात के प्रमाण अन्य शास्त्रों में भी मिलते हैं । नगर पुराण में लिखा है कि -

दसभिभोजितैर्विप्रे: यत् फलं जायते कृते ।
मुनेर्हत्सुभक्तस्य, तत्फलं जायते कलौ ।।

अर्थ : यहाँ कृतयुगमें दस ब्राह्मणों को भोजन कराने से जितना पुण्य फल होता उतना कलियुग में एक अर्हत् भक्त मुनि को भोजन करवाने में होता है । इसी से जैन धर्म के पालनेवाले जैन मुनि को उत्तम कहा गया है ।

त्रैलोकस्य प्रतिष्ठान, चतुर्विंशति तीर्थकरान् ।
ऋषभाद्या, वर्धमानान्तान्, सिद्धान् शरणं प्रपद्ये ।।

अर्थ : तीन लोको में प्रतिष्ठा प्राप्त, श्री ऋषभदेव से महावीर स्वामी तक के सिद्धो के शरण स्वीकारते है । यह धर्म महाविदेह क्षेत्र में अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेगा । भरत व ऐरावत क्षेत्र में प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में 24 तीर्थंकर हुए है । अनंत तीर्थंकर प्रभु द्वारा स्थापित तीर्थ के अनुसार ही ये तीर्थ की स्थापना करते है । जिससे तीर्थोन्नति होती है । एवं प्रभु की देशना (उपदेश) से अनेकों भाविक जीवों का कल्याण होता है । प्रभु परमात्मा के उपदेश का असर भाविको पर अनिवार्ये रुप से होती है । क्योंकि वे उत्कृष्ट पुण्य के स्वामी होते है । महाविदेह क्षेत्र में सदा जधन्य से 20 तीर्थंकर होते है तथा अनेंकों केवली भगवंत विचरण करते होते है जो जिन शासन की धर्मध्वजा निरंतर लहराते रहते है । इन सब उदाहरणो व बातो से जैन धर्म का अति प्राचीन होना सिद्ध होता है ।

प्र.66 श्रावक अति उच्च आराधना के द्वारा कौन से देवलोक तक पहुंच सकता है ?

उ. श्रावक अधिक से अधिक बाहरवे देवलोक तक जा सकता है । इससे अधिक ऊँचा नही जा सकता है । जैसे जीरण शेठ ।

प्र.67 अभव्य जीव मृत्योपरान्त कहाँ तक जा सकता है ?

उ. अभव्य संयमी बनने के बाद नवम ग्रेवेयक तक जा सकता है किन्तु अनुत्तर में कभी नही जा सकता । (पन्नवणा सूत्र)

प्र.68 महाविदेह में केवली एवं साधुओं की संख्या कितनी है ?

उ. वहाँ 2 करोड केवलज्ञानी तथा 20 अरब साधु 20 अरब साध्वी है ।

प्र.69 एक बार अब्रह्म के सेवन से कितनी हिंसा होती है ?

उ. अब्रह्म के पाप से भयंकर हिंसा होती है । नौ लाख असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा होती है । (संबोध प्रकरण)

प्र.70 आगामी चोवीसी के प्रथम तीर्थकर कब होने वाले है ?

उ. आज से लगभग 81500 वर्ष उपरान्त श्रेणीक राजा - पद्मनाभ नाम के प्रथम तीर्थकर होगे ।

प्र.71 इस तीर्च्छालोक में कुल कितने सूर्य-चन्द्र है ?

उ. संपूर्ण तीर्च्छालोक में तो असंख्य सूर्य-चन्द्र है । परन्तु ढाई द्वीप में कुल 132 सूर्य एवं 132 चन्द्र है ।

प्र.72 भगवान दीक्षा लेने से पूर्व कितना दान देते है ?

उ. परमात्मा दीक्षा लेते पूर्व हंमेशा । करोड एवं 8 लाख सोनैया का दान देते है । एक सोनैया 80 रतीभार का होता है । हंमेशा 9000 मण सोना दान देते है । एक साल में 32 लाख व 40,000 मण सोना दान देते है । इस दान का प्रभाव 12 साल तक छ खंड में शांति रहती है । रोगी का रोग दूर रहता है ।

प्र.73 वज्र स्वामी के नगर व पिता का नाम क्या था ? व कब निर्वाण हुआ ?

उ. वज्र स्वामी के पिता का नाम धनगिरि था, वे तुम्बवन नगर के निवासी थे । दीक्षा पूर्व 11 अंग पढे । उनका निर्वाण वीर संवत् 584 एवं विक्रम संवत 114 में हुआ ।

प्र.74 कुमारपाल राजा का जन्म व अवसान कब हुआ था ?

उ. उनका जन्म वि.सं. 1144 में एवं देहावसान वि.सं. 1230 में हुआ था ।

प्र.75 आचार्य दुप्पहसूरिके कितने भव है ? व कौन से ?

उ. आचार्य दुप्पहसूरि के पाँच(5) भव है । पहले भव में मनुष्य जीवन में क्षायिक सम्यक्त्व किया । वर्तमान में दूसरे भव देवलोक में हैं । तीसरे भव में दूप्पहसूरि होंगे एवं चोथे भव में देवलोक तथा पाँचवे भव में मनुष्य जन्म लेकर मोक्ष जायेगें ।

प्र.76 वीस विहरमानो का जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान कब हुआ ?

उ. वीस विहरमानो का जन्म कुंथुनाथजी तथा अरनाथजी के बीच के समय में हुआ । मुनिसुव्रत स्वामी एवं नेमीनाथजी के बीच के समय में दीक्षा हुई तथा आगामी चौबीसी के सातवे व आठवे तीर्थंकरो के काल में निर्वाण होगा ।

प्र.77 शालीभद्र व धन्नाजी कौन सी गति में हैं ?

उ. ये दोनो महामुनि वर्तमान में सर्वार्थसिद्धि विमान में हैं ।

प्र.78 महाराज चेटक एवं कोणिक के युद्ध में कितनी जानहानी हुई थी ?

उ. इस युद्ध में 1 करोड 80 लाख मनुष्यों का संहार हुआ । (महाशीला कंटक युद्ध में 96 लाख मनुष्यो का संहार हुआ ।) इनमें मात्र एक मनुष्य देवलोक में, 10,000 मछुओ के पुत्र हुए तथा शेष नरक में गये ।

(भगवती सूत्र)

प्र.79 कोणिक राजा मरकर कौन सी नरक में गये ?

उ. वह मरकर छठ्ठी नरक में गये ।

प्र.80 सातवी नरक में कुल कितने प्रकार के रोग होते है ?

उ. सातवी नरक में कुल 5,68,99,584 प्रकार के रोग होते है ।

(भगवती सूत्र)

प्र.81 देवलोक में देवदेवियों के नाटक की समय सीमा कितनी होती है ?

उ. देवताओं के एक नाटक में चार हजार वर्ष जितना समय व्यतित होता है।

प्र.82 पाँचवे आरे के अंत मे कौन से सूत्र रहेंगे ?

उ. आवश्यक सूत्र दशवैकालिक एवं - अनुयोग द्वार नामके आगम रहेगे । शेष कोई नहीं रहेगे ।

प्र.83 नवकारवाली में 108 मणिये क्यों होते है ?

उ. अरिहंत के 12 गुण सिद्ध के 8 गुण, आचार्य के 36 गुण, उपाध्याय के 25 गुण, एवं साधु के 27 गुण - कुल 108 गुणों के प्रतिक रुप में 108 मणियें होते है ।

प्र.84 कार्तिक मुनि द्वादशांगी (14 पूर्व) के ज्ञाता होते हुए भी पहले देवलोक में क्यों गये ?

उ. प्रमाद वश से पूर्व भूल गये - इसलीये पहले देवलोक में गये ।

प्र.85 सूक्ष्म निगोद जीव एक वर्ष में कितने भव करता है ?

उ. सूक्ष्म निगोद जीव एक वर्ष में 70 करोड सित्तोत्तेर लाख अट्ठासी हजार आठ सो (707788800) भव करता है ।

प्र.86 जिन पूजा का वर्णन किस आगमों मे आता हैं ?

उ. रायपसेणीसूत्र, जीवाभिगम सूत्र ज्ञाता धर्मकथा, उववाई सूत्र भगवती सूत्र आदि अनेक सूत्र में वर्णन आता है ।

प्र.87 सूर्य एवं चन्द्र के विमान कितने बडे है ?

उ. चन्द्र का विमान 56/61 योजन अर्थात् लगभग 2968 मील और सूर्य का विमान 48/61 अर्थात् प्रायः 2544 मील विस्तृत है ।

प्र.88 श्रीचन्द्र केवली का नाम कितनी चोबीसी तक रहेगा ।

उ. श्रीचन्द्र केवली का नाम 800 चोबीसी तक रहेगा ।

प्र.89 समकित के पाँच भूषण कौन कौन से है ?

उ. (1) स्थैर्य (2) प्रभावना (3) भक्ति (4) जैन शासन में कुशलता (5) तीर्थसेवा (योगशास्त्र)

प्र.90 इस भरतक्षेत्र में अंतिम आचार्य कौन रहेगा ?

उ. इस भरतक्षेत्र में अंतिम आचार्य युगप्रधान दुप्पहसूरी होंगे ।

प्र.91 शाश्वती प्रतिमाओ की उंचाई कितनी होती है ?

उ. तिर्च्छालोक में शाश्वती प्रतिमाओं की उंचाई 500 धनुष प्रमाण है - तथा वे नंदीश्वर द्वीप एवं वैताढय पर्वत इत्यादि पर आई हुई है ।

प्र.92 शिवपुराण में जैन धर्म के विषय में क्या लिखा हुआ है ?

उ. (अष्टषष्टिषु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत्, आदिनाथस्य देवस्य स्मरणेनापि तद्भवेत्) एक बार आदिनाथ भगवान का नाम लेने से अडसठ तीर्थो की यात्रा का फल प्राप्त होता है ।

प्र.93 रामचंद्रजी तथा लक्ष्मणजी के कितनी रानियें थी ?

उ. रामचंद्रजी के चार - सीता, प्रभावती, रतिनिभा और श्रीदामा तथा लक्ष्मणजी की 16000 राणीयें थे । **(त्रिषष्टि पर्व - 7)**

प्र.94 साधु-साध्वी रात को संथारे के समय कान में रुई डालते है या नहीं ?

उ. उन्हें रात को संथारे के समय कान में रुई डालना चाहिये । नहीं डालने से दोष व प्रायश्चित के भागी होते है । **(महानिशीथ)**

प्र.95 प्रभु महावीर पर गौतम स्वामी के अत्यंत स्नेह व राग का क्या कारण था ?

उ. जिस भव में महावीर प्रभु का जीव त्रिपृष्ठ वासुदेव था उस समय गौतम स्वामी का जीव उनका सारथी था वहीं से राग निरंतर चला आ रहा था।

प्र.96 किसे भोजन कराने से एक लाभ साधार्मिक की भक्ति का लाभ मिलता था ?

उ. भरुच निवासी जिनदास शेठ व सुहगदेवी श्राविका को भोजन कराने से एक लाख साधार्मिक की भक्ति का लाभ होता था ।

प्र.97 24 जिन के कुल कितने शिष्य ?

उ. 24 जिन के कुल शिष्य 28 लाख 48 हजार थे ।

प्र.98 एक ही दिन में ओसीया व कोरटा ग्राम में प्रतिष्ठा किसने करवाई थी ?

उ. पार्श्वनाथ प्रभु के पाँचवे पट्टधर शिष्य आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिश्वरजी ने महा सुद / शुक्ला - 5 के दिन दोनों स्थानों पर जिनालयो की प्रतिष्ठा करवाई थी तथा हजारो क्षत्रियों को ओसवाल जैन बनाया था ।

(पार्श्वनाथ परं. इति.)

प्र.99 सूर्य - चंद्र - पृथ्वी से कितने ऊँचे है ?

उ. सूर्य का विमान पृथ्वी से 800 योजन एवं चन्द्र विमान 880 योजन ऊँचा है । **(जीवाभिगम सूत्र)**

प्र.100 अजितशान्ति स्तवन की रचना कब हुई ?

उ. नेमीनाथ प्रभु के गणधर नंदिषेण मुनि शत्रुंजय पर गये तब अजितशान्ति की रचना हुई । नेमिनाथ प्रभु के निर्वाण को छियासी हज़ार पांच सो वर्ष हो गये है । **(शत्रुंजय लघुकल्प)**

प्र.101 तीर्थंकर भगवान छः आराओ में से किस आरे में जन्म लेते हैं ?

उ. तीर्थंकर भगवान तीसरे या चोथे आरे में ही जन्म लेते हैं ।

प्र.102 देवलोक में सुधर्मावसंतक एवं ईशानावतंसक विमान कितने बडे है ?

उ. ये दोनों विमान प्रत्येक साडाबारह लाख योजन लम्बे चौडे है ।

(समवायांग सूत्र)

प्र.103 गौशालक केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद प्रथम देशना में क्या कहेगे ?

उ. प्रथम देशना में वे अपने पूर्वभव की काली कथा सुनायेगे एवं उसका उपसंहार करते हुए कहेगे की कभी भी गुरु एवं धर्म की निंदा न करे। अन्यथा मेरे जैसा भंयकर हाल होगा । **(भगवती सूत्र)**

प्र.104 कल्की राजा कब होगे ?

उ. इस पांचवे आरे में 23 उदय होंगे । उस में आठवे उदय में श्रीप्रभयुगप्रधान के समयमें कल्की राजा होगा । अभी तीसरा उदय चल रहा है । तथा उस समय के संवत के साथ 1914 संवत का मेल होगा। **(महानिशीथ सूत्र)**

प्र.105 वीर प्रभु ने 27 भवो में कौन सी बडी पदवीयाँ प्राप्त की ?

उ. 1. श्री श्रेयांसनाथ भगवान के शासन काल में 18वें भव में **त्रिपृष्ठ** नामक वासुदेव । 2. 23 वे भव में महाविदेह क्षेत्र में **प्रियमित्र** नामक चक्रवर्ती । 3. अंत में 27 वे भव में साक्षात् श्री **महावीर** स्वामी नाम के तीर्थंकर देव हुए । इस प्रकार उन्होंने तीन महान् पदवीयाँ प्राप्त की ।

प्र.106 आगामी चौवीसी के अंतिम जिन के तीर्थ का प्रमाण कितना होगा ?

उ. आनेवाली / अनागत चोवीसी के अन्तिम जिन **भद्रकृत** स्वामी का शासन संख्याता लाख पूर्व वर्ष तक चलेगा ।

प्र.107 देव कितने प्रकार के होते है ?

उ. देव पाँच प्रकार के होते है । 1. भव्यद्रव्यदेव - जो तिर्यञ्चय, मनुष्य भावि देव । 2. नरदेव - चक्रवर्ती आदि । 3. धर्मदेव - साधु आदि । 4. भावदेव - वैमानिकादि चारों प्रकार के देव । 5. देवाधिदेव - तीर्थंकर भगवान ।

(भगवती सूत्र)

प्र.108 एक क्षण का संयमी जीवन भी कितना सुखदायक होता है ?

उ. संयमी जीवन का एक क्षण 82 करोड पल्पोपम से अधिक देवलोक का सुख देता है ।

प्र.109 पांचवे आरे के अंत में किसका विच्छेद हो जायेगा ?

उ. पांचवे आरे के अंत में 21,000 वर्ष पूरे होते ही अंतिम दिन पूर्वाहण में श्रुत, सूरि, धर्म एवं संघ का विच्छेद होगा । मध्याह्न में विमलवाहन राजा एवं सुधर्म मंत्री का विच्छेद होगा एवं शाम को बादर अग्निकाय का विच्छेद होगा ।

प्र.110 चक्रवर्ती की नौ निधियों क्या विशेषताए है ?

उ. नौ निधियाँ प्रत्येक आठ आठ चक्रवाली 8 योजन ऊँची, एवं 9 योजन विस्तार / चौडी एवं 12 योजन लम्बी होती है ।

प्र.111 देवद्रव्य के भक्षण से जीवकिस गति में जाता है ?

उ. वीर प्रभुने गौतम से कहा था कि गौतम देव द्रव्य के भक्षण व परस्त्री सेवन से जीव सातवी नरक में सात बार जाता है ।

प्र.112 क्या आहार आदि लेने पर भी उपवास आदि का लाभ होता है ?

उ. हाँ, गीतार्थोने अनेक रास्ते बताये है । जो रात का चौविहार रखते है दिन को एक बार भोजन करते हैं । तथा दिन में एक स्थान पर बैठकर ताम्बूल आदि का सेवन करके गंठी सहित पच्चक्खान करते है उन्हे एक महीने में इस प्रकार के आचरण से 29 उपवास का फल मिलता है । और दिन में दो बार भोजन करने से उसे चौविहार 28 उपवास का फल मिलता है । हंमेशा एक मुहूर्त प्रमाण भी चउविहार का पच्चक्खान एक महिना तक करने से उसे परलोक में एक उपवास जितना फल मिलता है ।अन्य जैनेतर देवो के भक्त जिस तप से दश हजार वर्षो का देव आयुष्य भोगवे वे जिनेश्वर के कहे तप से करोड पल्पोपम का आयुष्य भोगते है । **(पद्म चरित्र)**

प्र.113 नारकीय जीवो तथा देवों का आयुष्य कितना ?

उ. जधन्य से 10,000 वर्ष एवं उत्कृष्ट से 33 सागरोपम ।

प्र.114 धर्म से धन्धे में लाभ की ईच्छा करने वाला प्राणी कौन सा कर्म बाँधता है ?

उ. दर्शन मोहनीय कर्म, लोकोत्तर मिथ्यात्व के कारण ।

प्र.115 63 शलाका पुरुष कौन से है ?

उ. 24 तीर्थकर, 9 वासुदेव, 9 बलदेव, 12 चक्रवर्ती, एवं 9 प्रतिवासुदेव ।

प्र.116 तीनों लोको में शाश्वता जिनालय कितने है ?

उ. आठ करोड सत्तावन लाख दोसौ बयासी ।

प्र.117 तीन लोक में शाश्वती प्रतिमाएँ कितनी है ?

उ. पन्द्रह अरब, बयालीस करोड अठ्ठावन लाख, छत्तीस हजार एवं अस्सी ।

प्र.118 नारकीय जीव कौन सी दस प्रकार की वेदना सहन करते है ?

उ. वे निम्न दस प्रकार की वेदना सहन करते है । (1) शीत (2) उष्ण (गर्मी) (3)क्षुधा (4) पिपासा (5) खंजवाल (खुजली) (6) परवशता (7) ज्वर (8) दाह (9) भय (10) शोक ।

प्र.119 वैराग्य कितने प्रकार के होते है ? कौन कौन से ?

उ. वैराग्य तीन प्रकार के होते है । (1) दु:ख गर्भित वैराग्य (2) मोह गर्भित वैराग्य (3) ज्ञान गर्भित वैराग्य

प्र.120 भवाभिनंदी से क्या तात्पर्य है ? उसके लक्षण बताइये ?

उ. भव अर्थात् अभिनंदी अर्थात् अच्छा मानने वाला भवाभिनंदी जीव के निम्न लक्षण होते है । 1. आहार हेतु धर्म करना । 2. प्रसिद्ध (मान) पाने के लिये धर्म करना । 3. उपधि प्राप्त करने हेतु धर्म करना । 4. बडप्पन पाने हेतु धर्म करना । 5. क्षुद्र अगंभीर होना । 6. लोभ के वशीभूत होना । 7. दीन को अधिक दु:ख देना । 8. भयभीत रहने । 9. शठ बुद्धि । 10. द्वेष रखना । 11. अज्ञान ।

प्र.121 मिथ्यात्व कितने प्रकार के होते है ? कौन कौन सा ?

उ. मिथ्यात्व 5 प्रकार का होता है जो निम्न है । (1) अभिग्राहिक मिथ्यात्व (2) अनभिग्राहिक मिथ्यात्व (3) आभिनिवेशिक मिथ्यात्व (4) सांशयिक मिथ्यात्व (5) अनाभोगिक मिथ्यात्व ।

प्र.122 पर्व तिथि को हरी सब्जी क्यो नही खाना चाहिये ?

उ. आयुष्य का बंध प्रायः तिथिके दिन होता है अतः एवं तिथी के दिन चन्द्र पृथ्वी एवं शरीर तीनो सीधी पंक्तिमें होने से समुद्र के पानी की तरह शरीर के जल तत्त्व में भी फेरफार (अन्तर) होता है । इससे अग्नितत्त्व मंद एव वायु तत्त्व प्रबल होता है । प्रबल वायु तत्त्व दिमाग में (मस्तक में) चढकर विकृति पैदा करता है इसी से सर्दी वगेरा रोग भी होते है । हरी सब्जी में 90 टका पानी होता है अतः उसके खाने से जल तत्त्व अधिक बढ जाता है और न खाने से जलतत्त्व .काबु में रहता है अतः इन दिनों हरी सब्जी खाने का निषेध है इसके अलावा स्वादिष्ट होने से ये रोग पैदा करती है ।

प्र.123 आलू की पापडी तलने के बाद क्यों अभक्ष्य है ?

उ. पापडी बनाते समय जीवो की हत्या होती है हम उसका सेवन करते है इसी लिये हमारे लिये वह बनाई जाती है इस प्रकार उस पाप के निमित्त हम भी है । इसके अलावा हमें उसका सेवन करते देख अन्य लोग भी खाने की प्रवृत्ति करेंगे तो दोष का भागीदार भी हम बनेगें । अतः उसे न खाना चाहिए ।

प्र.124 संसार से क्या तात्पर्य है ? क्या इसका कोई कर्ता है ?

उ. अनादि काल से जीव निगोद में आठों कर्मो के वशीभूत है । एक जीव मोक्ष जाने पर भव्यत्व के परिपाक से एक जीव बाहर निकलता है तथा अनेक जीव भेंदो में संसरण करता है उसी का नाम संसार

है । इसी संसार को कोई कर्ता नही है । किन्तु पुद्गल अनादि काल से है तथा जीव उसका उपयोग करता है । उसी के प्रभाव से जीव विभिन्न रुप धारण करता है ।

प्र.125 शुक्ला दूज के दिन चन्द्रदर्शन क्यों किया जाता है ?

उ. वृद्ध पुरुषो से एसा सुना है कि दूज के दिन चन्द्र का अन्तिम भाग (टोच) जिसमें मंदिर है उसमें शाश्वत मूर्ति है उसके दर्शन करने का रीति रिवाज दूज के दिन है तीज आदि के दिन चन्द्र का बिम्ब बडा होता है उससे (टोच) अन्तिम भाग नहि रहता है इसलिये दूसरे सभीदिन दर्शन की बात नहीं होती है चन्द्र बिम्ब में मंदिर एवं जिन मूर्ति शाश्वत है इस लिये उसे उद्देश से कभी भी दिन दर्शन करे तो विरोध नहि हैं ।

प्र.126 वंदित्ता सूत्र के रचयिता कौन है ?

उ. वंदित्ता सूत्र के कर्ता (रचयिता) गणधर भगवंत है । साथ ही जिस सूत्र के कर्ता का पता न हो तथा जो सूत्र सकल संघ में मान्य हो उसके कर्ता गणधर भगवंत माने जाते है ।

प्र.127 आर्य रक्षित सूरिजी के गुरु तथा दुर्बलिका पुष्पमित्र के दादा गुरु कौन थे ?

उ. तोषिलपुत्राचार्य ।

प्र.128 अट्ठाई का क्या तात्पर्य है ? ये कितनी है ? कौन कौन सी ?

उ. अट्ठाई के दिनों में श्रावकों को हरी सब्जी तथा आरंभ समारंभ का त्याग करना चाहिए । विशेष प्रकार से हेतु निर्धारित आठ दिन को अठाई कहते है । जो निम्न हैं ।

(1) कार्तिक चौमासा में - कार्तिक शुक्ला 7 से 14 तक, 8 दिन

(2) फाल्गुन चौमासा में - फागुन शुक्ला 7 से 14 तक 8 दिन

(3) आयंबिल ओली - चैत्र सुद 7 से 15 तक 9 दिन (4) आषाढ चौमासी - आषाढ सुद 7 से 14 तक 8 दिन (5) पर्युषण - श्रावण वद 12 (भादरवा वद 12) से भादरवा सुद 4 तक 8 दिन (6) आयंबिल ओली - आसोज शुक्ला 7 से 15 तक 9 दिन ।

प्र.129 आरती एवं मंगल दीवा करने की विधि क्या है ?

उ. आरती एवं मंगल दीवा बाई ओर ऊँचे लेकर दाहिनी ओर उतारना चाहिये । उतरते समय हाथ नाभि से नीचे व मस्तक से ऊपर नही जाने चाहिए । अन्यथा आशातना लगती है ।

प्र.130 आशातना से क्या तात्पर्य है ? ये कितनी है ? कौन कौन सी ?

उ. ऐसा व्यवहार जिससे लाभ के बजाय हानि, पुण्य के बजाय पाप हो उसे आशातना कहते हैं । जिनालय संबंधी 10 आशातनाऐं निम्न है । (1) मंदिर में पान खाना (2) पानी पीना (3) भोजन करना (4) जूतें पहनना (5) मैथुन सेवन (6) सो जाना (7) थूकना (8) पेशाब करना (9) संडास करना (10) जुआ खेलना ।

प्र.131 भावना से क्या तात्पर्य है ? ये कितने प्रकार की होती है ? कौन कौन सी ?

उ. आत्मा को शुभ भाव में रखना इर्सा को भावना कहते है । यह चार प्रकार की होती है । **(1) मैत्री भावना** - सब जीवों के प्रति मित्र भाव रखना **(2) प्रमोद भावना** - गुणी जनों के गुण देखकर हर्षित होना **(3) कारुण्य भावना** - दुःखी जीवों व धर्म हीन जीवों के प्रति दया का भाव रखना । **(4) माध्यस्थ भावना** - अज्ञानीयो अथवा मूर्खो के प्रति मध्यस्थ भाव रखना ।

जिन पूजा का प्रभाव

प्रातः कालीन पूजा - रात्री के पापो को नष्ट करती है ।
मध्याहनकालीन पूजा - आजन्म के पाप नष्ट करती है ।
सायंकालीन पूजा - सात भवो के पाप नष्ट करती है । (श्राद्ध-विधि)

संक्षिप्त - प्रश्नोत्तरी

1. रावण को कितनी पुत्री थी ? - सवालाख
2. हरिभद्रसूरी ने कितने ग्रन्थ रचे ? - 1444
3. हेमचन्द्रसूरिजी ने कितने श्लोक बनाये ? - साडे तीन करोड
4. राणकपूरजी का मंदिर किसने बंधाया ? - धरणाशाहने
5. राणकपुरजी का मंदिर की प्रतिष्ठा किसने करायी ? - सोम सुंदरसूरिजीने
6. तारंगाजी का मंदिर किसने बनाया ? - कुमारपाल राजाने
7. जगडुशाह ने कितनी दानशालाएं खोली थी ? - सातसो
8. भोजराजा प्रतिदिन कितना दान देते थे ? - सवालाख
9. विक्रमराजा प्रतिदिन कितना दान देते थे ? - सवा करोड
10. स्थूलभद्रजी का नाम कितनी चोवीशी तक अमर रहेगा ?-84 चोवीशी
11. प्रतिदिन 700 गाथा कंठस्थ करने वाला कौन ?- दुर्बलिकापुष्पमित्र
12. मरु देवी माता ने व्याकरण कब पढा ? - पूर्व कोटि वर्ष
13. कुमारपाल राजा ने व्याकरण कब पढा ?- 54 साल की उम्र में
14. महावीर स्वामीने 25वे भव में कितने मासखमण किए ?- 1180645
15. भव की गिनती कब होती है ? - समकित प्राप्त करने के बाद
16. चौद पूर्व का सार किसमें समावेश होता/समाता है ?-नवकार मंत्र में

17. वीस तीर्थंकर कहाँ पर मोक्ष पधारे ? - समेतशिखर
18. संयुक्ताक्षर रहित कौन सा सूत्र है ? - संसार दावानल
19. पुस्तक रखने का साधन कौन सा है ? - सापडा (ठवणी)
20. अनंत जीव कहां पर सिद्ध हुए ? - सिद्धगिरी पर
21. मयणा एवं श्रीपाल ने किसकी आराधना की थी ?- सिद्धचक्र की
22. चंपा नगर का द्वार किसने खोला था ? - सुभद्रा सती ने
23. भुख को शान्त करने के लिये दीक्षा किसने ली ?
- संप्रति राजा ने (पूर्व भवमें)
24. भ. महावीर की अंतिम देशना कितने समय तक चली ?- सोल प्रहर
25. भ. महावीर ने धर्म संदेश किस श्राविका को दिया था ?
- सुलसा को
26. परमात्मा कहां बैठकर देशना देते है ? - समवसरण में
27. परमात्मा के जन्म समय देवता क्या करते हैं ? - स्नात्र महोत्सव
28. गौतमस्वामीजी की जन्म भूमि कहाँ ? - गोबर गाँव
29. गौतमस्वामीजी की निर्वाण भूमि कहाँ ? - गुणीयाजी
30. एक दिन में दीक्षा लेकर केवली कौन बने ? - गजसुकुमाल
31. 18000 साधु को वंदन किसने किया था ? - कृष्ण महाराजा ने
32. इस अवसर्पिणी में सबसे प्रथम मोक्ष कौन गये ? - मरु देवीजी
33. मौन एकादशी की आराधना किसने की थी ? - सुव्रतशेठने
34. छ महीना के उपवास किस श्राविकाने किया था ?- चंपा श्राविका
35. श्रेणीक राजा किसके पास किस के लिये सामायिक का फल लेने के लिये गये ? - पुणीया श्रावक के पास, नरक तोडने के लिए
36. श्रेणीक राजा के घर कितने तीर्थंकर होंगे ?- दो, श्रेणीक व उदयन
37. वीर प्रभु का शासन कितने समय तक चलेगा ? - 21,000 वर्ष

38. एक साल से परमात्मा दीक्षा ले तब तक प्रतिदिन कितना दान देते हैं ? - एक करोड व आठ लाख
39. वीर प्रभु को समकित की प्राप्ति कब हुई ? - नयसार के भव में
40. गौतम स्वामी किसको प्रतबोध करने गये थे ? - देवशर्मा को
41. वीर प्रभु गौतमस्वामी को बार बार कहते थे ? - हे गौतम ! एक क्षण भी प्रमाद मत करना
42. गौतम स्वामी को केवल ज्ञान कब हुआ ?- का.सु. प्रतिपद की सुबह
43. नवकारमंत्र कौन सी भाषा में हैं ? - प्राकृत भाषा में
44. सिध्धाचल पर प्राचीन वृक्ष कौन सा है ? - रायणवृक्ष
45. संवच्छरी के दिन कितना लोगस्स का काउसग्ग आता है ? - 40 लोगरस व एक नवकार
46. आर्य देश कितने ? - 25 1/2 (साढे पच्चीस)
47. अनार्य देश कितने ? - 31974 1/2
48. भ. ऋषभदेवको कितने समय तक आहार न मिला ? - 400 दिन
49. साधु साध्वीजी को वहोराने से क्या लाभ ? - उनके संयम की आराधना का छट्ठा भाग
50. अपनी आराधना इस काल क्यों फल नहिं देती है ? - अविधि एवं अनादर होने से
51. रेवतीने तीर्थंकर नाम कर्म कब बांधा ? - सिंह अणगार को वहोराते समय
52. स्नानागार में कौन वैरागी बने ? - धन्यकुमार
53. जीजाजी का आवाज सुनकर साधु कौन बने ? - शालीभद्र शेठ
54. दया का पालन करने से दिवाकर कौन बने ?- धर्मरुचि अणगार
55. माया करके स्त्रीवेद किसने बांधा ?- मल्लीनाथ भ. ने पूर्वभव में

56. कार्तिक शेठने कितने के साथ दीक्षा ली ? - 1008 मित्र के साथ
57. कस-रस बिना का आहार कौन करते थे ? - धन्ना अणगार
58. चंडाल कुल में से साधु कौन बने ? - हरिकेशी मुनि
59. उद्यान में विचार करते करते उद्धार किसने किया ? - कपिल मुनि ने
60. वीर प्रभु के 14,000 साधु में श्रेष्ठ तपस्वी कौन ? - धन्ना अणगार
61. साधु को वहोराने के बाद अशुभ कर्म किसने बांधा ? - मम्मण शेठ
62. कोशा वेश्या को वीर उपासिका किसने बनायी ? - स्थूलभद्रजी
63. जिनमूर्ति को देखकर महात्मा कौन बनें ? - आर्द्रकुमार
64. वीर प्रभु के बाद **जंबूस्वामी** कब मोक्ष पधारे ? - 64 साल के बाद
65. **मरुदेवी** माता के बाद भ. ऋषभदेव कब मोक्ष पधारे ? - 1000 साल न्यून, 1 लाख पूर्व के बाद
66. पत्नी के बोध से वैरागी कौन बने ? - सोमचन्द्रराजा
67. नवांगी टीकाकार कौन हुए ? - अभयदेवसूरिजी
68. ऋध्धि के अभिमान में साधउ कौन बनें ? - तेतली पुत्र
69. वीर प्रभु के प्रथम साध्वीजी कौन ? - चंदनबाला
70. वेश्या के घर रहकर हंमेशा 10 जीवो को बोध देने वाला कौन ? - नंदिषेण मुनि
71. इस अवसर्पिणी में प्रथम साध्वीजी कौन ? - ब्राह्मी
72. पुण्यप्रकाश का स्तवन किसने रचा ? - उपा. विनयविजयजी
73. श्रावक को कैसी (कितने प्रमाणकी) दया होती है ? - सवावसा की
74. अंजना सतीने कितने साल दुःख सहा ? - बाईस साल
75. छट्ठे आरे में कितना आयुष्य होगा ? - बीस साल का
76. पौषध में 16 स्वप्न किसको आये थे ? - चन्द्रगुप्त राजा को

77. कर्म करेगा वो ही होगा एसा बोलने वाला कौन था ?- **मयणा सुंदरी**

78. हीर सूरिजी ने किसको प्रतिबोधित किया था ?
- अकबर बादशाह को

79. स्कन्धकाचार्य के कितने शिष्य घाणी में पीले गये ? **- 500**

80. किस तप से तीर्थंकर नाम कर्म निकाचित होता है ?
- वीश स्थानक तप से

81. झूले में रहकर 11 अंग का अभ्यास किसने किया ? **-वज्रस्वामीने**

82. तिर्च्छालोकमें द्वीप समुद्र कितने ? **- असंख्य**

83. थाली धोकर पीने से कितना लाभ होता है ? **- एक आयंबिल का**

84. धंधा करने से कौन सा कर्म बंध होता है ? **- चारित्र मोहनीय**

85. चन्द्र ग्रहण कब होता है ? **- नित्य राहु बीच में आने से**

86. सूर्य ग्रहण कब होता है ? **- अनित्य राहु बीच में आने से**

87. चंड कौशिक नाग मर कर कहाँ गया ? **- आठवे देवलोक में**

88. केवली बनकर छ महिने तक घर कौन रहा ? **- कूर्मापूत्र**

89. कूर्मापुत्र के शरीर की अवगाहना कितनी ? **- दो हाथ**

90. नाभि राजा के शरीर की अवगाहना कितनी ? **- 525 धनुष् प्रमाण**

91. मरुदेवी माता के शरीर की अवगाहना कितनी ?
- 500 धनुष्य प्रमाण, 525 धनुष् (प्रवचन सारोद्धार)

92. कर्माशा. राजा के पिता का क्या नाम था ? **- तोलाशाह**

93. वज्रस्वामी की जन्मभूमि कहाँ ? **- तुंबवन गाँव में**

94. बारवें देवलोक में कितने चैत्य है ? **- 300**

95. धनपाल कवि ने कौन सा ग्रंथ बनाया ? **- तिलक मंजरी आदी**

96. अशोक वृक्ष की ऊँचाई कितनी ? **- तीन कोश**

97. शीतलनाथ भ. के समवसरण की ऊँचाई ? **- तीस कोश**

98. अभिनंदन स्वामी के शरीर की अवगाहना कितनी ? - 350 धनुष्य

99. 60,000 साल तक तपस्या किसने की ? - तामली तापस ने

100. मासखमण के पारणे पर कडवी तुंबडी का आहार किसने किया ?
- धर्मरुचि अणगारने

101. नौ महीने तक तपस्या करके सर्वार्थसिद्ध विमान में कौन गया ?
- काकंदीका धन्ना अणगार

102. शय्यंभव सूरिने किसके लिये कौन सा सूत्र बनाया ?
- पुत्र मनक के लिए, दशववैकालिक सूत्र

103. तपागच्छ के अधिष्ठायक देव कौन ? - मणिभद्र सूरि

104. निगोद का वर्णन किसने किया ? - आर्यरक्षितसूरि 1 कालकचार्य

105. पांचसो कथा किस ग्रंथ में आती है ? - प्रबंध पंचशती में

106. अपने गुरु को 108 हाथ लंबा पत्र किसने लिखा था ?
- मुनिसुन्दर सूरिने

107. वीर प्रभु के गर्भ का हरण कौन से देवने किया था ?
- हरिणेगमेषे देवने

108. हरिणेगमेषी देव मरकर क्या बने ? - देवर्धिगणि क्षमाश्रमण

109. विमल मंत्रीने कितनी जिन मूर्ति की स्थापना की थी ? - दो हजार

110. वस्तुपाल-तेजपाल ने कितनी जिन मूर्ति की स्थापना की थी ?
- ग्यारह हजार

बत्रीस अनंतयाक के नाम

(1) सर्व कंद की जाति (2) भोयाकोलुं (3) लीला आदु (4) लहसुन (5) गाजर (6) किसलय पत्र (7) थेंग की भाजी (8) खिल्लुडो (9) बिलाडी के टोप (10) मसूरवल्ली (11) आलु (12) वज्रकंद (13) थोर

की जाति (14) सीतावरी वेल (15) गलो (16) लुणी वृक्ष (17) गिरिकर्णिका (18) लीली मोढ (19) अमृतवेल (20) बिदल के अंकुर (21) पल्लंका (पालक) (22) प्याज (23) हरीहल्दी (24) लीलाकचूरा (25) खरसेया (26) विष कारेली (27) लोंढक कंद (28) खरस झमबो (29) लुणी की छाल (30) मूली (31) ढक्कवत्थुल की भाजी (32) कुणी आंबली

"गुणीजनों के अनुमोदनीय गुण"

श्री वीरप्रभु की - क्षमा, गौतम स्वामी का - विनय, शालीभद्र का - त्याग, हरिचन्द्र का - सत्य, जगडुशाह का - दान, सुलसाश्राविका की - श्रद्धा, धर्मरुचि अणगार की - दया, लक्ष्मण का - सदाचार, पेथड मंत्री की - प्रभुभक्ति, एकलव्य का - सदाचार, धन्ना अणगार का - तप, श्रवण की - मातृभक्ति, जीरण शेठ की - भावना, युधिष्ठिर का - न्याय, कुमारपाल की - गुरु भक्ति, भर्तृहरी का - वैराग्य, कृष्ण महाराजा का - क्षायिक समकित, अभयकुमार की - बुद्धि, पुणीया श्रावक का - संतोष, विक्रम राजा की - परदुःखभंजनता

"आदि भावो का आख्यान"

प्रथम तीर्थंकर - ऋषभदेव, प्रथम गणधर - पुंडरीक, प्रथम केवली - ऋषभदेव, प्रथम मोक्षगामी - मरुदेवी माता, प्रथम विहरमान - सीमंधर स्वामी, प्रथम आरा - सुषम सुषम, प्रथम चक्रवर्ती - भरत राजा, प्रथम वासुदेव - त्रिपृष्ठ (वीर प्रभु का जीव), प्रथम प्रतिवासुदेव - अश्वग्रीव, प्रथम बलदेव - अचल, प्रथम साध्वी - ब्राह्मी, प्रथम श्राविका - सुंदरी.

"चरम पदार्थ का परिचय"

चरम तीर्थंकर - महावीर स्वामी, चरम गणधर - प्रभास स्वामी, चरम केवली - जंबूस्वामी, चरम आचार्य - दुप्पहसूरि, चरम साध्वी - फल्गुश्री, चरम श्रावक - नागश्री, चरम श्राविका - सत्यश्री, चरम वासुदेव - कृष्ण महाराजा, चरम बलदेव - बलभद्र, चरम व्रत - अतिथिसंविभाग, चरम मोक्षगामी - जंबूस्वामी, चरम पाप - मिथात्वशल्य, चरम सूत्र - दशवैकालिक, चरम चौदपूर्वधर - भद्रबाहु स्वामी (स्थूल भद्र), चरम आरो - दुषम दुषम, चरम चक्रवर्ती - ब्रह्मदत्त, चरम छरी - आवश्यक दोबार, चरम विहरमान - अजीतवीर्य, चरम व्यसन - परस्त्रीगमन, चरम निधि - शंख

"अतीत (भूतकालीन) चोवीशी के नाम"

(1) केवलज्ञानी, (2) निर्वाणी, (3) सागर, (4) महायश, (5) विमल, (6) सर्वानुभूति, (7) श्रीधर, (8) श्रीदत्त, (9) दामोदर, (10) सूतेजा, (11) स्वामीनाथ, (12) मुनिसुव्रत, (13) सुमति, (14) शिवगति, (15) अरत्याग, (16) नमीश्वर, (17) अनिल, (18) यशोधर, (19) कृतार्थ, (20) जिनेश्वर, (21) सुद्धमति, (22) शिवंकर, (23) स्यन्दन, (24) संप्रति

प्रतिवासुदेव एवं बलदेव के नाम

प्रतिवासुदेव	बलदेव
श्री अश्वग्रीव	श्री अचल
श्री तारक	श्री विजय
श्री मेरक	श्री भद्र
श्री नधु	श्री सुप्रभ

श्री निसंभु	श्री सुदर्शन
श्री बली	श्री आनंद
श्री प्रह्लाद	श्री नंदन
श्री रावण	श्री रामचन्द्र
श्री जरासंघ	श्री बलराम

(त्रिषष्ठि चरित्र)

"कौन सा मद (अभिमान) किसने किया"

1. जातिमद - हरिकेशीमुनिने पूर्वभव में, 2. कुलमद - मरीचीने, 3. बलमद - श्रेणीकराजाने, 4. रुपमद - सनतकुमार चक्रीने, 5. तपमद - कुरगडु के सहवासी तपस्वीने, 6. ऋध्धिमद - दशार्णभद्र राजाने, 7. विद्यामद - स्थुलभद्रजीने, 8. लोभमद - सुभुम चक्रीने

"शत्रुंजय तीर्थ के इक्कीश नाम"

1. शत्रुंजय 2. पुंडरीक गिरी 3. सिद्धक्षेत्र, 4. विमलाचल, 5. सुरगिरि, 6. महागिरि, 7. पुण्यराशि, 8. श्रीपदगिरि, 9. इन्द्रप्रकाश, 10. महातीर्थ, 11. शाश्वतगिरि, 12. द्रढगिरी, 13. मुक्तिनिलयगिरी, 14. पुष्पदंतगिरी, 15. महापद्मगिरी, 16. पृथ्वीपीठगिरी, 17. सुभद्रगिरी, 18. कैलासगिरी, 19. कदंबगिरी, 20. उज्जवलगिरी 21. सर्वकाम दायकगिरी (विद्याप्रभृत)

"सोलहसतीयाँ के नाम"

1. ब्राह्मी, 2. सुंदरी, 3. चंदनबाला, 4. राजीमती, 5. द्रौपदी, 6. कौशल्या, 7. मृगावती, 8. सुलसा, 9. सीता 10. सुभद्रा, 11. शीवा, 12. कुंती, 13 शीलवंती, 14 दमयंती, 15 प्रभावती, 16 पद्मावती

"श्रावक के इक्कीश गुण"

1. अक्षुद्र, 2. रुपवान, 3. शांत, 4. लोकप्रिय, 5. अंकुश, 6. पापभीरु, 7. अशठ, 8. दाक्षिण्य, 9. लज्जा, 10. दयालु, 11. मध्यस्थ, 12. गुणरागी, 13. सत्कथारुचि, 14. सुपक्षयुक्त, 15. दीर्घदर्शी, 16 विशेषज्ञ, 17 वृद्धानुगामी, 18. विनयी, 19. कृतज्ञ, 20. परहितार्थकारी, 21. लब्धलक्ष्य (धर्मलप्रकरण)

महावीर स्वामी के 11 गणधर एवं उनका परिवार व पर्याय

नाम	गाँव	पिता का नाम	माता का नाम	शिष्य	घरवास	छद्मस्थ काल	केवली	आयुष्य
1. इन्द्रभूति	गोबर	वसुभूति	पृथ्वी	500	50 साल	30 साल	12 साल	92 साल
2. अग्निभूति	गोबर	वसुभूति	पृथ्वी	500	46 साल	12 साल	16 साल	74 साल
3. वायुभूति	गोबर	वसुभूति	पृथ्वी	500	42 साल	10 साल	18 साल	70 साल
4. व्यक्तभूति	कुल्लाग	धर्मप्रिय	वारुणी	500	50 साल	12 साल	18 साल	80 साल
5. सुधर्मास्वामि	कुल्लाग	धर्मप्रिय	वारुणी	500	50 साल	42 साल	8 साल	100साल
6. मंडित	मोर्य	धनदेव	विजया	350	53 साल	14 साल	16 साल	83 साल
7. मोर्यपुत्र	मोर्य	मोर्य	विजया	350	65 साल	14 साल	16 साल	95 साल
8. अकंपित	मिथिला	देव	जयन्ती	300	48 साल	9 साल	21 साल	78 साल
9. अचलभ्रात	कोशल	वसु	नन्दा	300	36 साल	12 साल	14 साल	62 साल
10. मेतार्य	वच्चपुर	दत्त	वरुणदेवी	300	36 साल	10 साल	16 साल	62 साल
11. प्रभास	राजगृही	बल	अतिभद्रा	300	16 साल	8 साल	16 साल	40 साल

0 ये सभी गणधर राजगृही के वैभारगिरि पर निर्वाण पद को प्राप्त हुए ।

"वीशस्थानक के प्रत्येक पद से परमपद की प्राप्ति"

	नाम	तीर्थंकर बने		नाम	तीर्थंकर बने
1.	अरिहंतपद	- पुरुषोत्तम राजा	2.	सिद्धपद	- पद्मोत्तर राजा
3.	प्रवचनपद	- हरिवाहन राजा	4.	आचार्यपद	- कनककेतु राजा
5.	स्थविरपद	- नरवाहन राजा	6.	उपाध्यायपद	- पुरन्दर मुनि
7.	साधुपद	- सागरचन्द्र नृप	8.	ज्ञानपद	- देवपाल राजा
9.	दर्शनपद	- हस्तिपाल राजा	10.	चारित्रपद	- महेन्द्रपाल राजा
11.	ब्रह्मचर्यपद	- वीरभद्र राजा	12.	क्रियापद	- धन्ना राजा
13.	तपपद	- हरिविक्रम राजा	14.	गौतमपद	- धन्ना राजा
15.	जिनपद	- अरुणदेव राजा	16.	विनयपद	- जिनदत्त राजा
17.	संयमपद	- चन्द्रवर्मा राजा	18.	अभिनवज्ञानपद	- जीमूत केतु
19.	श्रुतपद	- रत्नचूड मुनि	20.	तीर्थपद	- मेरुप्रभ

(विशंतिस्थानक प्रकरण)

"चौद पूर्व के नाम एवं पद"

1. **उत्पाद पूर्व** - एक करोड पद, 2. **अग्रायणी** - 96 लाख पद, 3. **वीर्य प्रवाद** - 70 लाख पद, 4. **अस्ति प्रवाद** - 60 लाख पद. 5. **ज्ञान प्रवाद** - एक करोड में 10 पद न्युन. 6. **सत्य प्रवाद** - एक करोड एवं छ पद. 7. **आत्म प्रवाद** - 36 करोड पद. 8. **कर्म प्रवाद** - एक करोड एवं 80 लाख. 9. **प्रत्याख्यान प्रवाद** - 84 लाख पद. 10 **विद्या प्रवाद** - 11 करोड 1500 पद. 11. **कल्याण प्रवाद** 26 करोड पद, 12. **प्राणवाय** - 1 करोड ने 55 लाख, 13. **क्रिया विशाल** - नौ करोड, 14. **लोकबिंदु सार** - साढे बारह करोड,

चौद पूर्व के कुल 83 करोड 26 लाख 80 हजार पांच पद होते है।

चौद पूर्व को लिखने के लिये 16,383 हाथी जितनी सूकी स्याही चाहिये। (हाथी महाविदेह का 2000 हाथ ऊँचा)

प्रायः एक पद में 51 करोड, 8 लाख, 86 हजार, 840 श्लोक जाते है।

मतांतर से 51 करोड, 8 लाख, 84 हजार 621 1/2 श्लोक आते

(नंदी सूत्र)

आठ अभव्य	सात व्यसन	छ प्रकार के दर्शन
1. कालसौरिक कसाई	1. चोरी	1. जैन दर्शन
2. कपिलादासी	2. जुगार	2. मीमांसक दर्शन
3. अंगारमर्दकाचार्य	3. परस्त्रीगमन	3. बौद्ध दर्शन
4. संगमदेव	4. वेश्यागमन	4. नैयायिक दर्शन
5. पालक पुरोहित	5. शिकार	5. चार्वाक् दर्शन.
6. विनयरत्न साधु	6. दारु	6. सांख्य दर्शन
7. वैतरणीय वैद्य	7. मांस	
8. कृष्ण का पुत्र पालक		

(उपदेश प्रासाद)

"पिस्तालीस आगम के नाम"

अग्यारा अंग	बारह उपांग	'छ' छेदसूत्र
1. आचारंग सूत्र	1. औपपातिक	1. दशासूत्रस्कंध
2. सूयगडांग सूत्र	2. राजप्रश्सनीय	2. बृहत्कल्प सूत्र
3. ठाणांग सूत्र	3. जीवाभिगम	3. व्यवहार सूत्र
4. समवायांग सूत्र	4. प्रज्ञापना	4. जितकल्प सूत्र
5. विवाहपन्निति	5. जंबूद्रिप प्रज्ञप्ति	5. लघुनिशीथ सूत्र
6. ज्ञाताधर्मकथांग	6. चंद्र प्रज्ञाप्ति	6. महानिशीथ सूत्र

7. उपासकदशांग
8. अंतगड दशांग
9. अनुत्तरोपपातिक
10. प्रश्न व्याकरण
11. विपाक सूत्र

7. सूर्य प्रज्ञप्ति
8. निरयावलिका
9. कल्पवतंसिका
10. पुष्पिका
11. पुष्पचूलिका
12. वण्हिदशाण

(चार मूल सूत्र)

1. आवश्यक सूत्र
2. उत्तराध्ययन सूत्र
3. पिंड निर्युक्ति सूत्र
4. दशवैकालिक सूत्र

दशपयन्ना, दो चूलिका

दशपयन्ना : 1. चतुः शरण 2. आउर पच्चक्खान 3. महा पच्चक्खाण 4. भत्त पयन्ना 5. तंदूल वैचारिक 6. गणिविज्जा 7. चंद विज्जा 8 देविंद विज्जा 9. मरण समाधि 10. संस्तारक

दो चूलिका : 1. नंदिसूत्र 2. अनुयोग द्वार

"नौ टुंक के निर्माता"

नाम	किसने बनवायी
1. अभिनंदन स्वामी	नरशी केशवजी ने
2. आदिनाथ स्वामी	छीपावसी,
3. चिंतामणी पार्श्वनाथ	साकरचंदप्रेमचंद,
4. नंदीश्वर द्वीप	उजम फई,
5. अजितनाथ भगवान	हेमाभाई शेठ,
6. आदिनाथ भगवान	प्रेमचंद मोदी,
7. आदिनाथ भगवान	बालाभाई,
8. आदिनाथ भगवान	मोतीशा शेठ
9. आदिनाथ भगवान	कर्मशा (उद्धारक)

(शत्रुंजय - माहात्म्य)

"कृष्ण महाराजा के पांच भव"

(1) कृष्ण वासुदेव (2) नारकी (3) मनुष्य (4) वैमानिक देव (5) अमम नाम के 12 वे तीर्थंकर (अमम चरित्र)

"छः आरो का स्वरुप"

आरा का नाम	काल	आयुष्य	शरीर माप
1. सुषमसुषमा	चार कोडाकोडी सागरोपम	तीन पल्पोपम	तीन कोष
2. सुषमा	तीन कोडाकोडी सागरोपम	दो पल्पोपम	दो कोष
3. सुषमा दुषम	दो कोडाकोडी सागरोपम	एक पल्पोपम	एक कोष
4. दुषमसुषम	42000 न्युन एक कोडाकोडी सागरोम	पूर्वक्रोड साल	500 धनुष्य
5. दुषमा	इक्कीश हजार साल	130 साल	7 हाथ
6. दुषम दुषम	इक्कीश हजार साल	20 साल	दो हाथ

पौषध के अढार दोष

1. अविरतिधर के पास आहार पाणी मंगवाना, 2. पौषध के लिये सुंदर आहार लेना 3. उत्तरपारणा पेट भरकर करना. 4. पौषध के पहले अच्छी तरह शरीर साफ करना 5. पौषध के लिये वस्त्र धोना, 6. पौषध में वस्त्र रंगवाने का आदेश देना, 7. पौषध में गहने बनानेका आदेश देना, 8. पौषध में शरीर का मेल उतारना, 9. संथारा पोरिसी पढाये बिना सो जाना, 10. पौषध में स्त्रीकथा करना, 11. आहार की प्रशंसा या निंदा करना, 12. राज काज की अथवा लडाई की बात करना, 13. देश संबंधी बात करना, 14. प्रमार्जन किये बिना क्रिया करना, 15. कीसी की निंदा करना, 16. अविरतीधर के साथ बात करना, 17. चोर संबंधी बात करना, 18. स्त्री के अंगोपांग देखना.

"श्रावक के 124 अतिचार"

(1) ज्ञानाचार के - 8, (2) दर्शनाचार - 8, (3) तपाचार के - 12, (4) चारित्राचार के - 8, (5) वीर्याचार के - 3, (6) सम्यक्त्व के - 5, (7) प्रथम व्रत के - 5, (8) दुसरे व्रत के - 5, (9) तीसरे व्रत के - 5, (10) चतुर्थ व्रत के - 5, (11) पंचम व्रत के - 5, (12) छट्ठे व्रत के - 5, (13) सातवे व्रत के - 20, (14) आठवे व्रत के - 5, (15) नवमे व्रत के - 5, (16) दशवे व्रत के - 5, (17) अग्यारवे व्रत के - 5, (18) बारहवे व्रत के - 5, (19) संलेखणा व्रत के - 5, कुल - 124

"श्रावक के बारह व्रत"

1. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत, 2. स्थूल मृषावाद विरमण व्रत, 3. स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत, 4. स्वदारा संतोष परदारा विरमण व्रत, 5. स्थूल परिग्रह विरमण व्रत, 6. दिग् परिमाण विरमण व्रत, 7. भोगोपभोग विरमण व्रत, 8. अनर्थदंड विरमण व्रत, 9. सामायिक व्रत, 10. देशावगासिक व्रत, 11. पौषधोपवास व्रत, 12. अतिथि संविभाग व्रत

"महावीर स्वामी के चातुर्मास"

(1) नालंदा पाडा में - 14, (2) मिथिला नगरी में - 6 (3) वैशाली नगारी में - 12, (4) पृष्ठ चंपा में - 3, (5) भद्रिका नगरी में - 2 (6) अस्थिक गांव में - 1, (7) आलंभिक नगरी में - 1, (8) श्रावस्ती नगरी में - 1, (9) वज्रभूमि में - 1, (10) पावापुरी में - 1, कुल - 42. **(महावीर चरित्र)**

"दश अच्छेरे"

(1) महावीर स्वामी को केवलज्ञान होने के बाद गौशाला ने उपसर्ग किया। (2) महावीर स्वामी के गर्भ का संक्रमण। (3) महावीर स्वामी की प्रथम देशना में किसी को विरती का परिणाम न हुआ। (4) सूर्य व चंद्र अपने मूल विमान में देशना में आये। (5) भवनपति के देव उपर के देवलोक में नहि जाते है तो भी चमरेन्द्र सौधर्म देवलोक में गया। (6) स्त्री वेद में तीर्थंकर नहि होते है तो भी मल्लीनाथ भगवान हुए। (7) कृष्ण-वासुदेव का अपरकंका में गमन - दोनों वासुदेव के शंखनाद का मिलन। (8) हरिवंश के कुल की उत्पत्ति। (9) 500 धनुष्य की कायावाले 108 एक समयमें मोक्ष में नहि जाते है तो भी अष्टापद पर्वत पर ऋषभदेव आदि गये। (10) भगवान सुविधिनाथ के शासन में असंयति की पूजा हुई। (कल्पसूत्र)

"उपवास के लाभ व उपाय"

45 दिन नवकारशी करने से	एक उपवास का लाभ
24 दिन पोरसी करने से	एक उपवास का लाभ
20 दिन साढपोरसी करने से	एक उपवास का लाभ
12 दिन पुरिमड्ढ करने से	एक उपवास का लाभ
3 दिन नीवी करने से	एक उपवास का लाभ
2 दिन आयंबिल करने से	एक उपवास का लाभ
4 दिन एकासणा करने से	एक उपवास का लाभ
8 दिन बिआसणा करने से	एक उपवास का लाभ
20 बांधी नवकारकी माला गिनने से	एक उपवास का लाभ
2000 गाथाओ का स्वाध्याय करने से	एक उपवास का लाभ

(महानिगीथ)

"उपकारी श्रावको"

- **गौतम स्वामी** - आनंद श्रावक को मिच्छामी दुक्कडम् दिया.
- **सिंहकेसरीया मुनि** - रात में लड्डू वहोराने के बाद उपाश्रय में जाकर पोरसी कब आती है तब गुरुदेव भान में आये । (सही रस्ते पर आये)
- **शान्तु महेता** - साधु को वेश्या के गले में हाथ डालते देखा तो भी वंदन किया । साधु मिले पूछा तुम्हारे गुरु कौन ? साधुने कहा – शान्तु महेता ।

"कुमारपाल राजा का परिवार"

जन्म - वि.स. 1155 स्वर्गवास - वि.सं. 1230

- माता का नाम - काश्मीरा देवी
- पिता का नाम - त्रिभुवनपाल
- भाई का नाम - महीपाल, कीर्तीपाल
- पुत्री का नाम - प्रेमलदेवी, देवलदेवी
- जीजाजी का नाम - कृष्णदेव, अर्णोराज
- नगरी का नाम - दधिस्थली नगरी
- पत्नी का नाम - भोपल देवी ।
- पुत्र का नाम - नृपसिंह (कुमारपाल प्रबंध)

"श्रेणीक राजा की अनहोनी"

- अनाथी मुनि के सत्संग में समकित प्राप्त किया ।
- पुत्र कोणिक अंतिम समय में 100 कोडे (हंटर) लगाता (उसे समभाव से सहन किया) ।

- कोणिक जब पिता को छुडवाने गया तब हीराकणी को चूसकर आयुष्य पुर्ण किया । (पुत्र को पितृ हत्या से बचाने हेतु)
- आगामी चोवीसी में प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ नाम से प्रसिद्ध होंगे ।
- प्रभु **महावीर** का परम भक्त क्षायिक समकिती जीव ।
- एकासणा का पच्चक्खाण बोर खाकर तोडा ।
- **मम्मण** शेठ को रत्न के बैल के शींग न दे सका ।
- **वनपालक** ने जब वीरप्रभु पधारने के समाचार दिये तब वनपालक को करोड प्रमाण धन एवं सुवर्णजीभ दान में दी ।
- जलती हुई हड्डी में से वीर वीर का अवाज निकला ।

"राजगृही की आन, बान व शान"

- जहाँ महावीर स्वामी ने नालंदा पाडा में चौदह चातुर्मास किये ।
- जहाँ **श्रेणीक** राजा व **उद्यन** राजा एक घरमें दो तीर्थंकर नामकर्म उपार्जित किया ।
- जहाँ बत्तीस दोष रहित सामायिक करनेवाला **पुणीया** श्रावक निवास करता था ।
- पत्नी के चुनौति भरे शब्द सुनकर **धन्नाजी** संयमी बने ।
- जीजाजी का अवाज सुनकर **शालीभद्र** संयमी बने ।
- 99 करोड सुवर्ण का स्वामी **जंबुस्वामी** 500 चोर एवं पत्नी व उनके मातापिता के साथ संयमी बना ।
- **श्रेणिक राजा** के हाथी को **नंदिषेण** मुनिने शान्त किया ।
- वीर प्रभु की वाणी सुनकर **रोहिणीया** चोर पतन से उत्थानको प्राप्त हुआ ।
- मुनिसुव्रत स्वामी के चार कल्याणक हुए ।

- नंदमणीयार का जीव मेढक समवसरण तरफ जाते हुए श्रेणीक के घोडे के पैर के नीचे मरकर दुर्दरांक देव बना ।
- **गौतम स्वामी** के निर्वाण कल्याणक की धरा ।
- अग्यार में चक्रवर्ती की जन्म भूमि ।

"नहि बोलने से नौ गुण की प्राप्ति"

1. नहि बोलने से मर्यादा बनी रहती है व छोटे बडे का विवेक रहता है ।
2. जो बालता नहि है उसका पश्चाताप का समय नहिं आता है ।
3. कम बोलने से झगडा (विवाद) नहि होता है ।
4. (न बोलने) से वेर विरोध नहि होता है ।
5. मौन धारण करनेवाले को असत्य भाषण का दोष नहि लगता है ।
6. मौन से क्रोध करनार को असत्य भाषा का दोष नहि लगता है ।
7. समजनेवाला मानव कभी भी कारण बिना बोले नहि व बिगाडे नहि ।
8. क्लेश की परंपरा बढती नही है ।
9. मौन धारण करने से कर्मबंध नहि होता है

"प्रभु के वर्षीदान की व्यवस्था एवं अतिशय"

1. **सौधर्मेन्द्र** : शक्ति रखे जिससे प्रभु दान देते थके नहिं ।
2. **इशानेन्द्र** : रत्नजडित छडी लेकर खडा रहता है और नसीब के अनुसार याचक के पास याचना करवाता है ।
3. **चमरेन्द्र व बलीन्द्र** : प्रभु के मुष्टि में कम या ज्यादा हो तो मांगनेवाले के नसीब के अनुसार कमज्यादा करते हैं ।
4. **भवनपति** : भरतक्षेत्र के मनुष्य को उठाकर ले आता है ।

5. वाणव्यंतर - याचक को वापिस उस स्थान पर रख देते है ।
6. ज्योतिषि - विद्याधर को वर्षीदान के समाचार देते है ।

अतिशय - भव्यत्व का निश्चय, बारह साल तक छ खंड में शांति होती है ।

यदी भंडार में रखें तो बारह साल तक भंडार भरपूर रहेता है । रोगी का रोग दूर होता है,, मंद बुद्धि को बुद्धि प्राप्त होती है ।

"ज्ञान की आशातना से बचिये"

- पस्तक को पास में रखकर खाना, पीना, पेशाब संडास करने से ।
- पुस्तक का तकीया बनाकर सोने से ।
- कागज एवं पेपर पत्रिका आदि पर खाने बेठने से ।
- पुठे व पत्रिका से हवा खाने से ।
- पुस्तक पर थुंक लगाने से ।
- कागज आदि को जलाने से, कचरे या पानी में डालने से ।
- पेन से हाथ पर लिखने से ।
- पुस्तक को फेंकने से, या पुस्तक के उपर दूसरी चीज रखने से ।
- कागज पुंठे आदि पर पेर देकर पढने से ।
- सोते सोते या चलते चलते पढने से ।
- पुस्तक को जमीन पर रखने से ।
- भोजन करते समय बोलने से ।
- पेन - कागज आदि को मुंह में डालने से ।
- विष्टा दूर करने के लिये कागज पेपर आदि का उपयोग करने से ।
- M.C. के समय पर पुस्तक आदि पढने से ।

"उदयमान व अस्तमान"

- जमाली महावीर के शिष्य होते हुए भी डूबे व क्रोधी चंडरुद्राचार्य के नूतन दीक्षित तरे ।
- मरीची शरीर की ममता से डूबे व **स्कंधकाचार्य के 499 शिष्य शरीर की निर्ममता से तरे ।**
- कुलवालक मुनि गुरु के अविनय से डूबे व गुरुणी के उपालंभ से मृगावतीजी तरे ।
- कुंडरिक मुनि रस के पाप से डूबे व कुरगुड मुनि भोजन करते तरे ।
- गणिका के संग से कुलवाचक डूबे व वेश्या के संहवास से स्थूलिभद्रजी तरे ।
- सुभुम चक्रवर्ती 12 खंड की इच्छा से डूबे व भरत चक्री 6 खंड को तुच्छ मानना (अनित्य भावना) से तरे ।
- चौद पूर्वी भानुदत्त प्रमाद से डूबे व मंदबुद्धिवाले माषतुष् मुनि अप्रमत्तता से तरे ।
- गौवाला उपसर्ग करके डूबा व खरक वैद्य खीला निकालकर तरा ।
- गोशाला तेजोलेश्या छोड़कर डूबा व एक मुनि तेजोलेश्या अपने पर लेकर तरा ।

"सात निह्नव"

1. जमाली - प्रभु के केवलज्ञान के 14 साल के बाद 'कडे माणे कडे' मत का उत्थापन किया ।
2. तिष्यगुप्त - प्रभु के केवलज्ञान के 16 साल के बाद आत्मा के अंतिम प्रदेश में जीवतत्त्व माना ।

3. अषाढाचार्य- साधु है अथवा देव एसी शंका से अव्यक्त मत की स्थापना की । **(वीरनिर्वाण 214 साल के बाद)**
4. अश्वमित्राचार्य -समस्त पदार्थ को क्षण क्षण में नश्वर माना । **(वीरनिर्वाण 220 साल के बाद)**
5. गंगाचार्य - उल्लूका तीर पर एक समय में दो उपयोग माना । **(वीरनिर्वाण 228 साल के बाद)**
6. रोहगुप्त - नो जीव की प्ररुपणा करके तीन राशि में से वैशेषिक मत्त निकाला । **(वीरनिर्वाण 584 साल के बाद)**
7. गौष्ठमाहिल- साँप कांचली की तरह जीव कर्म का संबंध माना । **(वीरनिर्वाण 584 साल के बाद)**

"जिन पूजा से आठ कर्म का नाश"

1. चैत्यवंदन से ज्ञानावरणीय कर्म का नाश
2. प्रभुदर्शन से दर्शनावरणीय कर्म का नाश
3. जयणा पालन से वेदनीय कर्म का नाश
4. प्रभु की स्तुति करने से गुणगाने से मोहनीय कर्म का नाश
5. आत्मा का अविनाशीपणा स्वीकारने से आयुष्यकर्म का नाश
6. रुपस्थ अवस्था भावन से नाम कर्म का नाश
7. प्रभु के समक्ष सेवकपणा स्वीकारने से गोत्र कर्म का नाश
8. विधिपूर्वक पूजा करने से अंतराय कर्म का नाश

"सूत्र के दूसरे नाम"

1. नवकार मंत्र-पंच मंगल महाश्रुतस्कंध
2. पंचिदि-गुरु स्थापना
10. जगचिंतामणी - चैत्यवंदन
11. नमुत्थुणं - शक्रस्तव

3. ख्रमासमण-पंचांग प्रणिपात
4. इच्छकार-सुगुरु सुखशातापृच्छा
5. ईरियावही-लघु प्रतिक्रमण प्रायश्चित
6. अन्नत्थ-आगार सूत्र
7. लोगस्स-नामस्तव
8. करेमिभंते-प्रतिज्ञासूत्र
9. सामाईयजुत्तो-सामायिक पारने का सूत्र
12. सिद्धाणं बुद्धाणं-सिद्धस्तव
13. अरिहंत चेईआणं-चैत्यस्तव
14. जयवीयराय-प्रार्थना सूत्र
15. नाणंमी-अतिचार की गाथा
16. वंदित्तु-श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र
17. अब्भुटिठओ - सुगुरुवंदन
18. सकलतीर्थ - तीर्थवंदना

"बार पर्षदा"

1. अग्नि दिशा में - साधु भवनपति देवी
2. अग्नि दिशा में - वैमानक देवी
3. अग्नि दिशा में - साध्वी
4. ईशान दिशा में - वैमानिक देव
5. ईशान दिशा में - पुरुष (श्रावक)
6. ईशान दिशा में - स्त्रि (श्राविका)
7. वायव्य दिशामें
8. वायव्य दिशामें - ज्योतिष देवी
9. वायव्य दिशामें - व्यन्तर देवी
10. नैऋत्य दिशामें - भवनपति देव
11. नैऋत्य दिशामें - ज्योतिष देव
12. नैऋत्य दिशामें - व्यन्तर देवी

"वीर प्रभु की गति"

1. मनुष्य गति में - चौद बार
2. देवगति में - दशबार
2. तिर्यञ्चगति में - एक बार
4. नरकगति में - दो बार

"महावीर स्वामी के उपासक राजा"

- राजगृही के राजा श्रेणीक
- चंपा नगरी के राजा अशोक
- वैशाली नगरी के राजा चेडा
- काशी देश के नवमल्ली राजा गण
- कौशल देश के नवलच्छी राजागण
- पोलासपुर के विजय राजा
- पोतनपुर के प्रसन्नचंद्र राजा
- हस्तिनशीर्ष के अदीनशत्रु राजा
- ऋषभपुर के धनावाह राजा
- साकेतपुर के मित्रनंदी राजा
- वीतभय नगर के उदायन राजा
- कौशम्बी के शतानिक व उदयन
- उज्जैन के चंडप्रद्योतन राजा
- क्षत्रियकुंड के नंदिवर्धन राजा
- वीरपुर के वीरकृष्ण मित्र
- सौगंधिक नगर के अप्रतिपदन
- महापुर के महाबल राजा
- चंपानगरी के राजा दत्त

"64000 कलशो का विवरण"

- रत्न के - 8000 कलश
- स्वर्ण रत्न के- 8000 कलश
- रत्न व रजत के - 8000 कलश
- सोने के - 8000 कलश
- सुवर्ण व चांदी के - 8000 कलश
- चांदी के - 8000 कलश
- स्वर्ण रजत व रत्न के- 8000 कलश
- मिट्टी के - 8000 कलश

"चौवीश तीर्थंकरो का परिवार"

1. गणधर - 1452
2. केवली शिष्य - 176100
3. अवधिज्ञानी शिष्य - 133400
7. वाद लब्धिधर - 126200
8. साधु - 244800
9. साध्वी - 4436406

4. मनः पर्यवज्ञानी - 144591
5. चौदह पूर्वी - 33988
6. वैक्रिय लब्धिधर - 245208
10. श्रावक - 5548000
11. श्राविक - 105408000

(सप्तति शत स्थान प्रकरण)

"जिन धर्म से जुडे हुे पशु आदि प्राणी"

1. **बैल :** ऋषभदेव भगवान का लंछन, सीमंधरस्वामी का लंछन, महावीर के उपसर्ग में कारण भूत बने, मथुरा में जिन दास शेठ ने दो बैलो का निर्यामणा करायी इससे वे देव बने.
2. **हिरण - शान्तिनाथ** भगवान का लंछन, जंगल में मुनि को दान (भिक्षा) दिलवाया **नेमिनाथ** भ. के तोरण से विमुख होने व दीक्षा लेने के कारण बने ।
3. **घोडा - संभवनाथ** भ. का लंछन, भरुच में मुनिव्रत स्वामीने घोडे को बोध दिया ।
4. **साँप - पार्श्वप्रभु** का लंछन, वीर प्रभु ने चंडकौशिक सर्प को बोध दिया पार्श्वकुमार ने सर्प को सेवक द्वार नवकार मंत्र सुनाया एवं धरणेन्द्र बनाया ।
5. **जू-**कुमारपाल राजा के शासन में जू मारने से के प्रायश्चित में यूकाविहार मंदिर बनवाया गया ।
6. **मंकोडा** - मकोडे को बचाने के लिया कुमारपाल ने अपने पैर की चमडी को काट दी ।
7. **हाथी** - अजितनाथ भ. का लंछन, कादंबरी जंगल में पार्श्वनाथ के दर्शन से जातिस्मरण ज्ञान, मेघकुमारका जीव जो पूर्व भव में हाथी ता जीवदया से प्रेरित होकर तीन दिन तक अपने पैर उपर रख कर खरगोस को बचाया ।

8. चूहा - कुमारपाल राजाने चूहे की हत्या के प्रायश्चित स्वरुप 'मूषक विहार' नाम का जिन मंदिर बनाया । धर्मनाभ भ. के समवसरण में चूहा गया जिससे इन्द्र को आश्चर्य हुआ वही चूहे का जीव प्रथम केवली बनकर मोक्ष में गया ।

9. क्रोंचपक्षी - सुमतिनाथ भ. का लंछन, स्वर्ण जव खाने से मेतारज मुनि को घोर उपसर्ग हुआ ।

10. मेंढक - प्रभु दर्शन की शुभ भावना से समवसरण की तरफ जाते मार्ग में श्रेणीक राजा घोडे के पैर के नीचे कुचलकर मरा एवं देवलोक में गया ।

11. बन्दर - अभिनंदन स्वामी का लंछन, शिला पर नवकार मंत्र देखकर जातिस्मरण ज्ञान, बाण से बिंधे बन्दर को मुनि ने नवकार मंत्र सुनाया ।

12. समडी - नवकार द्वारा सद्गति प्राप्त की जिस स्थान पर, उसे सद्गति मीली वहाँ पुत्री के कथनुसार 'समडी विहार' का निर्माण कराया ।

13. मोर - शत्रुंजय तीर्थ पर अजितनाथ भ. की छत्रछाया में नृत्य करता एकावतारी हुआ ।

14. कछुआ - मुनिसुव्रतस्वामी भ. का लंछन, श्रीपाल को समुद्र में डूबते बचाने वाला ।

15. भैस(पाड़ा) - वासुपूज्य स्वामी का लंछन ।

16. बकरा - कुंथुनाथ भ. का लंछन, अधिष्ठित बकरे से नगरवासीयों को बोध प्राप्त हुआ ।

17. जटायु - सीता को बचाने का प्रयत्न करते हुए रावण की तलवार का भोग बना ।

"सूत्रो का क्या उपयोग"

1.	नवकार मंत्र	-	जाप ध्यान, मंत्रादि के रुप में,
2.	पंचिंदिय	-	गुरु स्थापना
3.	इच्छामिखमासमणो	-	देव गुरु के वंदन हेतु
4.	इच्छकार		सद्‌गुरु को सुखशांति पूछने हेतु
5.	इरियावहियं सूत्र	-	पाप के प्रायश्चित हेतु
6.	अन्नत्थ	-	काउसग्ग में आगार हेतु
7.	करेमि भंते	-	विरति के पच्चक्खाण हेतु
8.	समाइय वय जुत्तो	-	सामायिक पारने हेतु
9.	जगचिंतामणी	-	चैत्यवंदन, शाश्वत तीर्थ वंदन
10.	उवसग्गहरं	-	स्तवन, स्तोत्र, माला, जाप आदि हेतु
11.	जयवीयराय	-	प्रभु प्रार्थना
12.	कल्याण कंदं	-	थोय
13.	संसार दावानल	-	थोय, सज्झाय
14.	वंदित्तु	-	12 व्रत के अतिचारोका प्रतिक्रमण करने हेतु
15.	अब्भुट्ठिओ	-	गुरु विनय, आशातना की क्षमापना हेतु
16.	सातलाख	-	84 लाख योनि के साथ क्षमापना हेतु
17.	लोगस्स	-	माला, काउसग्ग, चोवीश जिन का स्मरण हेतु
18.	लघुशान्ति	-	शान्ति की उद्‌घोषणा हेतु
19.	मन्नह जिणाणां	-	श्रावक कर्तव्य की सज्झाय हेतु
20.	सकल तीर्थ	-	तीन लोक के तीर्थों की वंदना हेतु
21.	भरहेसर	-	सज्झाय महापुरुषो के स्मरण हेतु
22.	नाणंमि	-	काउसग्ग (ज्ञानाचार आदिके) आठ अतिचार के परिचय हेतु

23. आयरियउवज्झाय - आचार्य आदि एवं संघ की परस्पर क्षमापना हेतु
24. अढाईज्जेसु - ढाई द्विप में रहे हुए समस्त साधु को वंदन हेतु
25. चउक्कसाय - पार्श्वनाथ का स्तोत्र, संथारा पोरसी आदि के समय चैत्यवंदन हेतु
26. संतिकरं - स्तवन, जाप, नवस्मरण आदि हेतु
27. वांदणा - द्वादशावर्त वंदन हेतु
28. वरकनकसूत्र - 170 तीर्थंकरो को नमस्कार हेतु
29. सुअदेवया की स्तुति - श्रुत देवता आराधना हेतु
30. नमोस्तु एवं विशाल लोचन - छ आवश्यक के पूर्णाहुति के हर्ष को व्यक्त करने लिये चैत्यवंदन स्वरुप ।
31. वैयावच्चगरणं - शासन देव की आराधना हेतु ।

"पदार्थो के नाम"

छ प्रकार के अवधिज्ञान

(1) अनुगामी (2) अननुगामी (3) वर्धमान (4) हीयमान (5) प्रतिपाती (6) अप्रतिपाती

ज्ञान के पांच विनय

(1) भक्ति वियन (2) बहुमान विनय (3) भावना विनय (4) विधिग्रहण विनय (5) अभ्यास विनय

चार प्रकार के बंध

(1) प्रकृति बंध (2) स्थिति बंध (3) रस बंध (4) प्रदेश बंद

समकित के 67 बोल

चार सद्दहणा, तीन लिंग, दस विनय, तीन शुद्धि, पांच दूषण, आठ प्रभावक, पांच भूषण, पांच लक्षण, छ जयणा, छ आगार, छ भावना, छ स्थानक

चार प्रकार के निक्षेप

(1) नाम निक्षेप (2) स्थापना निक्षेप (3) द्रव्य निक्षेप (4) भाव निक्षेप

सात प्रकार के नय

(1) नैगम (2) संग्रह (3) व्यवहार (4) ऋजुसूत्र (5) शब्द (6) समभिरुढ (7) एवंभूत

तीन वाद

(1) शुष्कवाद (2) विवा द (3) धर्मवाद

दश प्रकार के यति धर्म

(1) क्षमा (2) मृदुता (3) ऋजुता (4) निलोभता (5) तप (6) संयम (7) सत्य (8) शौच (9) आकिञ्चन्य (10) ब्रह्मचर्य

चार प्रकार के मंगल

(1) नाम मंगल (2) स्थापना मंगल (3) द्रव्य मंगल भाव मंगल

समकितकी दस रुचि

(1) निसर्गरुचि (2) उपदेशरुचि (3) आज्ञा रुचि (4) सूत्र रुचि (5) अभिगम रुचि (6) बीज रुचि (7) विस्तार रुचि (8) क्रिया रुचि (9) संक्षेप रुचि (10) धर्म रुचि

तीन प्रकार की अवस्था

(1) बहिरात्मा (2) अंतरात्मा (3) परमात्मा

पांच शरीर

(1) औदारिक, (2) तैजस, (3) कार्मण, (4) वैक्रिय, (5) आहारक

चार अनुयोग

(1) द्रव्यानुयोग, (2) गणितानुयोग (3) कथानुयोग (4) चरणकरणानुयोग

चार धर्मकथा

(1) आक्षेपिनी (2) विक्षेपीनी (3) निर्वेदनी (4) संवेदिनी

पन्द्रह कर्मादान

(1) इंगालकर्म (2) वनकर्म (3) साडी कर्म (4) भाडी कर्म (5) फोडी कर्म (6) दंत व्यापार (7) लाख व्यापार (8) रस व्यापार (9) केश व्यापार (10) विष व्यापार (11) यंत्र पीलन कर्म (12) निर्ल्लाञ्छन कर्म (13) दावाग्नि कर्म (14) सरोवरादि शोषण कर्म (15) असतीपोषण कर्म

वक्ता के चौद गुण

(1) शब्द को विचार करके बोले (2) शास्त्रार्थ को जानने वाले (3) वाणी में मधुरता (4) प्रसंग-अवसर को जानने वाले (5) सत्य वचन बोलने वाले (6) श्रोता के संदेह को छेदने वाले (7) गीतार्थ (8) अर्थ विस्तार को जानने वाले (9) कर्कश भाषा न बोले (10) वाणी से सभी को खुश करे (11) श्रोता के बोध के लिये प्रश्न करे (12) अर्थ का स्पष्टीकरण करे (13) अभिमानी होकर न बोले (14) धर्मवंत एवं संतोषधारी बने

श्रोता के चौद गुण

(1) भक्तिवंत (2) मिष्ट भाषी (3) श्रवणरुचि (4) निरभिमानी (5) अचंचल (6) एकाग्रता से श्रवण करे (7) जैसा सुने वैसा बोले (8) प्रश्नो को जानने वाले (9) शास्त्र का रहस्य जाने (10) धर्मकार्य में उद्यमवंत बने (11) दातार (12) गुणज्ञ (13) निंदा न करे (14) दोष न देखे.

पांच क्षमा

(1) उपकार क्षमा (2) अपकार क्षमा (3) विपाक क्षमा (4) वचन क्षमा (5) धर्म क्षमा

दश प्राण

(1) स्पर्शेन्द्रिय (2) रसनेन्द्रिय (3) घ्राणेन्द्रिय (4) चक्षुरिन्द्रिय (5) श्रवणेन्द्रिय (6) मनोबर (7) वचनबल (8) कायबल (9) श्वासोच्छ्वास (10) आयुष्य

चौदह स्वप्न

(1) गजवर (2) वृषभ (3) केशरी सिंह (4) लक्ष्मी देवी (5) पुष्प की माला (6) चन्द्र (7) सूर्य (8) ध्वज (9) कलश (10) पद्मसरोवर (11) रत्नाकर (12) विमान (13) रत्नराशि (14) निर्धूम अग्नि

चौदह गुणस्थानक

(1) मिथ्यात्व (2) सास्वादन (3) मिश्र (4) अविरति (5) देशविरति (6) प्रमत्त (7) उप्रमत्त (8) निवृत्तिबादर (9) अनिवृत्तिबादर (10) सूक्ष्मसंपराय (11) उपशान्त मोह (12) क्षीण मोह (13) सयोगी (14) अयोगी

छः लेश्या

(1) कृष्ण (2) नील (3) कापोत (4) तेजो (5) पद्म (6) शुक्ल

बावीस अभक्ष्य

(1) मदिरा (2) माँस (3) मध (4) मक्खन (5) बरफ (6) ओले (7) जहर (8) मिट्टी (9) बोलआचार (10) रात्रिभोजन (11) द्विदल (12) चलित रस (13) बहुबीज (14) बेंगन (15) तुच्छफल (16) अनजान फल (17) वड के टेंटे (18) उंबरा के टेटे (19) काले उंबरे (20) पीपल के टेंटे (21) प्लक्ष के टेंटे (22) अनंत काय

बारह देवलोक

(1) सौधर्म (2) ईशान (3) सनत्कुमार (4) महेन्द्र (5) ब्रह्मलोक (6) लांतक (7) महाशुक्र (8) सहस्रार (9) आनत (10) प्राणत (11) आरण (12) अच्युत

सात चारित्र

(1) सामायिक (2) छेदोपस्थापनीय (3) परिहार विशुद्धि (4) सूक्ष्मसंपराय (5) यथाख्यात (6) देशविरति (7) अविरति

पांच महाव्रत

(1) सर्वथा प्राणातिपात विरमण व्रत (2) सर्वथा मृषावाद विरमण (3) सर्वथा अदत्तादान विरमण व्रत (4) सर्वथा मैथुन विरमण व्रत (5) परिग्रह विरमण व्रत

सम्यक्त्व पांच लक्षण

(1) सम, (2) संवेग, (3) निर्वेद, (4) अनुकंपा (5) आस्तिक्य

पांच ज्ञान

(1) मतिज्ञान (2) श्रुतज्ञान (3) अवधिज्ञान (4) मनःपर्यवज्ञान (5) केवलज्ञान

चार महाविगई

(1) मदिरा (2) माँस (3) मध (शहद) (4) मक्खन

"दस प्रकार के कल्पवृक्ष का प्रभाव"

(1) मतंगज - खट्टे मीठे रस को देने वाले (2) भृंग - थाली ग्लास आदि भोजन देने वाले (3) तुर्यग - वाजिंत्र, 32 बद्ध नाटक दिखलाने वाले (4) दीवांग - घर में प्रकाश आदि करने वाले (5) ज्योतिरंग - रात में सूर्य की तरह प्रकाश करने वाले (6) चित्रांग - सुगंधी पुष्प आदि देवं फल देने वाले (7) मणीताङ्ग-आभूषण आदि देने वाले (8) गेहाकार - घर, आवास आदि देने वाले (9) चित्ररसा - मन इच्छित भोजन देने वाले (10) अनीताङ्ग - वस्त्र, आसन, शय्या देने वाले.

"सूत्र के उपयोग की मुद्रा"

(1) नवकार मंत्र - जिन/काउसग्ग मुद्रा, स्थापना मुद्रा (2) पंचिंदिय - स्थापना मुद्रा (3) लोगस्स - जिन/काउसग्ग, योग मुद्रा (4) नमुत्थुणं - योग मुद्रा (5) जावंति - मुक्तासुक्ति मुद्रा (6) जयवीयराय - मुक्तासुक्ति मुद्रा (7) अरिहंत चेईआणं - जिन मुद्रा/योगमुद्रा (8) अन्नत्थ - जिन मुद्रा/योग मुद्रा (9) वांदणा - यथाजात मुद्रा (10) वंदित्तु - वीरासन मुद्रा ।

"छ आवश्यक का स्वंरुप"

1. सामायिक - 48 मिनिट की धर्मक्रिया जिससे आत्मा को समता भाव की प्राप्ति होती है ।
2. चउवीसत्थो - लोगस्स, जिससे 24 तीर्थंकरो का वंदन व स्मरण किया जाता है ।
3. वंदन - गुरु भगवंत को किया जाने वाला वंदन ।
4. प्रतिक्रमण - आत्मा में लगते हुए पापो का पश्चाताप ।
5. काउसग्ग - आसक्ति का त्याग करते हुए मन-वचन, काया त्यागपूर्वक लोगस्स का काउसग्ग ।
6. पच्चक्खाण - अविरती के त्यागपूर्वक किया जाने वाला पच्चक्खाण ।

"वीर प्रभु के दस स्वप्न का अर्थ"

1. ताल पिशाच का बंध - मोहनीय कर्म का घात
2. शुक्ल पक्षी द्वारा सेवा - शुक्ल ध्यान
3. कोयल पक्षी का गीत - द्वादशांगी की प्ररुपणा
4. गायो का समूह सेवा करता हुआ - चतुर्विध संघ की स्थापना

5. महासागर पार किया - भव भ्रमण का अंत
6. उदय होता हुआ सूर्य - केवल ज्ञान की प्राप्ति
7. मानुषोत्तरवपर्वत को घेरा डालना - तीन लोको में यश फैलाना
8. मेरु पर्वतारोहण - समवसरण में बैठकर देशना देना
9. देवो से युक्त पद्मसरोवर - ईन्द्रो द्वारा सेवा
10. पुष्पो की दो मालाए - सर्वविरति एवं देशविरती की प्ररुपणा (कल्पसूत्र)

"साध्वी तथा श्राविकाओ के उपकार"

1. बाहुबली के प्रतिबोध हेतु बहनों ने दो शब्द कहे ।
2. हरिभद्रसूरिजी याकिनी महत्तरा के दो शब्द न समझ पाने से संयमी बने ।
3. रहनेमि को राजीमति ने (भाभीने) दो शब्द कहकर स्थिर किया ।
4. माता साध्वी ने खोजकर अरणिक मनुनिवर को वेश्या के यहां से वापस लाया।
5. वेश्या के **ताना** देकर नंदिषेण को पुन: संयम पथ पर अग्रसर किया।
6. **रु द्रसोमा** माता ने **आर्यरक्षित** को मामा तोसलीपुत्राचार्य के पास पूर्व का ज्ञान प्राप्त करने हेतु भेजा ।
7. साध्वी **सुव्रताजी**ने सती **प्रभंजना**को लग्न करने जाते समय उपदेश देकर केवली बनाया ।
8. वज्रस्वामीजी ने पारणे में ग्यारह अंग साध्वी के मुंह से शीखे ।
9. साध्वी **पुष्पचूला**श्रीजीने आचार्य **अर्णिकापुत्र** को निर्दोष गौचरी अर्पित की तथा दोनों केवली बने ।

"विक्रम राजा के संघ का विवरण"

169 - सुवर्ण मंदिर, 500 - हाथीदांत के मंदिर, 800 - चंदन के मंदिर, 7600 - उंट, 5000 - सिद्धसेन दिवाकर आदि आचार्य, 1,10,09, - बैल गाडियें, 1,80,000 - घोडे, 7,600 - हाथी, 7,00,000 श्रावक परिवार ।

(प्रबंध-पंचशती)

"जैन शासन के उग्र तपस्वी"

भ.आदिनाथ - 400 दिन के उपवास, **बाहुबली** - 12 मास चोविहार उपवास, **सुन्दरी** - 60,000 वर्ष आयंबिल, **गौतम स्वामी** - 30 वर्ष छट्ठ के पारणे छट्ठ, **धन्ना शालीभद्र** - 12 वर्ष मासक्षमण, **धन्ना काकंदी** - जीवन पर्यन्त छट्ठ के पारणे आयंबिल, **नंदिषेण** - 50 वर्ष छट्ठ (वैयावच्च), **वीराचार्य** - जीवन पर्यन्त अट्ठाई छ विगई का त्याग, **जम्बूस्वामी** ने पूर्व भव में - 12 वर्ष छठ के पारणे आयंबिल, **जगत्तचन्द्राचार्य** - 12 वर्ष आयंबिल, **सिद्धसेन दिवाकर सूरि** - 8 वर्ष घोर तप, **चम्पा श्राविका** - छ महिने के उपवास, **विष्णुमुनि** - छ हजार साल घोर वीर तप, **नंदनमुनि** - 11,80,645 मासक्षमण, **शालीभद्र सूरि** - दिक्षा के दिन से छ विगई का त्याग, **मुनिचंद्र सूरि** - दीक्षा के दिन से सिर्फ 12 द्रव्य ही वापरते, **कृष्णर्षि मुनि** - सिर्फ एक साल में तेतीस दिन एकासणा करते बाकी दिन उपवास, **भद्रेश्वर सूरि** - छः विगई का त्याग, **दादा मणिविजयजी** - जीवन पर्यन्त छठ के पारणे आयंबिल

जगतगुरु हीरसूरिजी - 81 अट्ठम, 222 छठ, 3600 उपवास, 2000 आयंबिल, 2000 नीवी, वीशस्थानक तप की 20 बार आराधना, जिसमें

400 आंबिल, 400 चोथभक्त कीये, ज्ञान की आराधना के लिये बावीस महिने तक तपस्या, गुरु तप में 2 महीने तक उपवास आयंबिल, चारित्र की आराधना के लिये 11 महीने तक तपस्या की, बारह प्रतिमाओ को वहन की, प्रतिदिन 2000 गाथाओं का स्वाध्याय करते थे ।

- **आणंदविमल सूरि** - वि.सं. 1515 में हुए जिन्होनें अपने जीवनमें 181 उपवास, वीशस्थानक तप की बीस बार आराधना, 400 चोथभक्त, 500 छट्ठ एवं वीरप्रभु के 229 छट्ठ किये, नाम कर्म के सिवाय बाकी के सात कर्म के जितने भेद उतने उपवास, जैसलमेर के 64 जिन मंदिर के कांटे दूर किये। (जैन ऐति गु.का)
- **पूंजा ऋषि की घोर तपस्या** - बारह साल तक छ विगई का त्याग, पाचं साल तक ठंडी की मौसम में कांबली का त्याग, पांच साल तक करवट बदलकर सोने का त्याग । 40 उपवास - एक बार, 14 उपवास - 14 बार, 30 उपवास 50 बा, 13 उपवास 13 बार, 20 उपवास दो बार, 12 उपवास 12 12 बार, 16 उपवास 16 बार, 10 उपवास 25 बार, 8 उपवास 250 बार, 2 उपवास 70 बार, 3 उपवास 1500 बार, पारणे पर सिर्फ छास इस ऋषिने कुल 11321 उपवास किये । **(जैन परंपरा का इति)**

"फटाके फोडने से आठ कर्म का बंध"

(1) कागज जलने (जलाने) से - ज्ञानावरणीय (2) जीवों के अंगोपांग छेदने से - दर्शना. (3) जीवों को वेदना पहोंचाने से - वेदनीय (4) फोडते समय आनंदित होने से - मोहनीय (5) फोडते समय आयुष्य का बंध पडने से - आयुष्य (6) जल या झुलस कर मरने से - नाम (7) फोडते समय अभिमान करने से - गौत्र (8) नींद अथवा पढने में बाधा पडने से - अंतराय

"चक्रवर्ती के नौ निधान"

(1) नैसर्प (2) पांडुक (3) पिंगलक (4) सर्वरत्न (5) महापद्म (6) काल (7) महाकाल (8) माणवक (9) शंख

"रुप के कारण घटित दु:खद घटनाए"

1. द्रौपदी का भरे दरबार में चीरहरण का प्रयास
2. द्रौपदी के कारण ही विराट राजा के 100 साले भीम के हाथ से जलती चिता में होमे गये ।
3. हजारो राणियाँ होते हुए भी सीता के हरण से राजा रावण का नाश हुआ ।
4. द्रौपद पशु की तरह चम्पा में राजकुमारी बसुमती बैची गई ।
5. मदनरेखा के रुप में पागल बनकर मणिरथ राजा ने अपने छोटे भाई युगबाहु की हत्या की ।
6. सरस्वती साध्वी को गर्दभिल्ल राजा ने पकडवाकर अपने अंत:पुर में रखी थी ।
7. सुरसुन्दरी अनेक बार बेची गई व आखिर नर्तकी बनी ।
8. नटी के रुप पर मोहित नबकर इलाचीकुमार नट बनकर नाचने लगा ।
9. प्रजापति ने अपनी पुत्री मृगावती को राणी बनवा ली थी ।
10. चन्द्रशेखर राजा ने अपनी विवाहित बहन के साथ वर्षो तक भोग किया था ।
11. रुप के कारण दौपदी को पद्मोत्तर राजा उठा गया था ।

साधुनां दर्शनम् पुण्यम्

1. साधु दर्शन से इलायचीकुमार को केवलज्ञान हुआ ।
2. 18,000 साधुओं के वंदन से कृष्णराजा की चार नरक कम हुई ।
3. गौतमस्वामी के दर्शन से 1503 तापस संयमी बने ।
4. साधु के साथ वार्तालाप से श्रेणिक को सच्चा ज्ञान हुआ ।
5. साधु के पास खाना मांगने से द्रमक संयम लेकर आगे संप्रति राजा बना ।
6. साधु को वहोराने से शालीभद्र अपरिमित धन तथा बाद में संयम पाता है ।
7. साधु को वहोराने से नयसाक समकितधारी बनता है ।
8. उदायी मंत्री को समाधि देने वाला भाट (चारण) सच्चा संयमी बनता है ।
9. कपिल केवली के दर्शन से 500 चोर संयमी बने ।
10. संयम की बाते सुनने पर प्रभव चोर संयमी बना ।

"किस को किस प्रकार वैराग्य हुआ"

1. **गौतमबुद्ध** - म्लान पुष्प, वृद्ध मनुष्य एवं मृतदेह को देखकर ।
2. **राजा दशरथ** - कंचुकी की अत्याधिक वृद्धावस्था देखकर ।
3. **हनुमानजी** - संध्या के बादलो को देखकर ।
4. **दशार्णभद्र** - इन्द्र के स्वागत (सामैये) की ऋद्धि देखकर ।
5. **मृगापुत्र** - साधु को देखकर ।
6. **अषाढाचार्य** - मदिरामत्त पत्नी को देखकर ।
7. **आर्यरक्षित** - दबदबा युक्त स्वागत (सामैया) में माता की अनुपस्थिति देखकर

8. धन्नाजी -स्नानागार में पत्नी के ताने से
9. शालीभद्र -श्रेणीक राजा को देखकर विचार आया कि क्या मेरे परभी नाथ है
10. स्थूलभद्र -अधिकार के जोखिम व नश्वरत्व को देखकर
11. बाहुबली -उठाई हुई मुष्टि का वडीलबंधु पितातुल्य है ।
12. अभयकुमार -जा तेरा मुंहकाला कर । पिता वाक्य सुनकर ।
13. स्कंधसूरीका साला -रुधिर से भीगी महुपत्ति को देखकर
14. सिध्धर्षिगणी -जिसका दरवाजा खुल्ला हो वहाँ जा
15. प्रसन्नचन्द्र -सिर के श्वेत केश देखकर
16. नमिराजर्षि -एक कंकण से कोलाहल बंद होने से
17. नंदिषेण -"तुम दसमे हो" एसा वेश्या का वचन सुनकर

"आठ प्रभावक"

(1) प्रवचन प्रभावक - वज्रस्वामी (2) धर्मकथा प्रभावक - सर्वज्ञसूरी (3) वादी प्रभावक - मल्लवादी देवसूरी (4) निमित्तवेत्ता प्रभावक - भद्रबाहु स्वामी (5) तपस्वी प्रभावक - काष्ठमुनि (6) विद्या प्रभावक - हेमचन्द्राचार्य (7) सिद्ध प्रभावक - पादलिप्त सूरि (8) कवि प्रभावक - सिद्धसेन दिवाकर सूरी

"छद्मस्थ के अदृश्य"

(1) धर्मास्तिकाय (2) अधर्मास्तिकाय (3) आकाशास्तिकाय (4) जीव (आत्मा) (5) परमाणु पुद्गल (6) यह जीव जिन होगा या नहि (7) यह जीव सर्व दुःख का अंत करेगा या नहि ।

"वीरप्रभु के कुटुम्ब की आयु"

- सिद्धार्थराजा की - 87 साल
- त्रिशला देवी की - 59 साल
- नंदिवर्धन की - 98 साल
- सुदर्शना बहनकी - 85 साल
- सुपार्श्वकाका की - 90 साल
- ऋषभदत्त ब्राह्मण की - 100 साल
- देवानंदा ब्राह्मणी की - 105 साल
- आमलकी क्रीडा - पांच साल की उम्र में
- पाठशाला पढने हेतु गये - 7 साल की उम्र में
- यशोदा के साथ विवाह - 16/20 साल की उम्र में

(महावीर चरित्र)

"देव किसका अपहरण नहि करते"

(1) विशुद्ध ब्रह्मचारी जी साध्वी का (2) अंतकृत केवली का (3) आहारक शरीरका (4) पुलाक निर्ग्रंथ का (5) परिहार विशुद्ध चारित्री का (6) चौदह पूर्वी का (7) अप्रमत मुनि का ।

"मोती की उत्पत्ति कहाँ"

(1) हाथी के कुंभस्थल में (2) शंख में (3) मछली के मुंह में (4) वांस में (5) वणर की दाढ में (6) चाँदी के मस्तक पर (7) मेघ में (8) छीप में

"सुघोषा घंट का परिणाम"

बारह योजन चौडा, छ योजन ऊंचा, चार योजन का लोलक, एवं एक साथ में 500 देवता घंटा बजाते है ।

"अनंती दस वस्तुएं"

सिद्ध के जीव, निगोद, काल, पुद्गल, आकाशप्रदेश, केवलज्ञानी, केवल दर्शनी, वनस्पति, परमाणु, अलोक ।

"पूजा से हुए लाभ"

1 **जल पूजा :** पार्श्वनाथ प्रभु का जल अभिषेक व पुष्प पूजा करने से हाथी देवलोक में गया ।

2. **नैवेद्य पूजा :** एक किसान हंमेशा नैवेध चढाता था देवी ने उसकी परीक्षा की, सफल होने से राजा के घर उसका जन्म हुआ ।

3. **दीपक पूजा :** दीपक पूजा से धनश्री जिनमती को मुक्ति मीली ।

4. **अक्षत पूजा :** तोता मैना अपनी चोंच में अक्षत लाकर पूजा करते हुए सद्गति में गये ।

5. **पुष्प पूजा :** पांच कोडि के 18 फूल लाकर जयताक ने पूजा कि जिससे 18 देश का राजा कुमारपाल बना ।

"स्त्री को अप्राप्यभाव"

तीर्थंकर, बलदेव पद, गणधर, गणधरलब्धि, चक्रवर्ती पद, संभिन्न श्रोतो लब्धि, पुलाक लब्धि, वासुदेव पद, चारण लब्धि, आहारक शरीर

"किस को किस भावना से वैराग्य हुआ"

	12 भावनाएँ	12 महापुरुष
1.	अनित्य भावना भावते हुंए	भरत चक्रवर्ती को
2.	अशरण भावना भावते हुए	अनाथी मुनि
3.	संसार भावना भावते हुए	मल्लिनाथ के छः मित्रो को
4.	एकत्व भावना भावते हुए	नमि राजर्षि को
5.	अन्यत्व भावना भावते हुए	मृगापुत्र को
6.	अशुचि भावना भावते हुए	सनतकुमार चक्रवर्ती को
7.	आश्रव भावना भावते हुए	समुद्रपाल मुनि को
8.	संवर भावना भावते हुए	हरिकेशी मुनि को
9.	निर्जरा भावना भावते हुए	अर्जुनमाली को
10.	लोकभावना भावते हुए	शिवराजर्षि को
11.	दुर्लभ बोधि भावना भावते हुए	ऋषभदेव के 99 पुत्रो को
12.	धर्म स्वाख्यातत्त्व भावना भावते हुए	धर्म रुचि अणगार को

(सूयगडांग सूत्र)

"सात भय"

(1) इहलोक भय (2) परलोक भय (3) आदान भय (4) अकस्मात् भय (5) आजीविका भय (6) मरण भय (7) अपयश भय

"कृष्णकी आठ पट्टराणी"

पदमावत्ती, गौरी, गान्धारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जंबूवती, सत्यभामा, रुकमणी इन सभी ने दीक्षा ली थी ।

"स्थूलभद्र की सात बहन"

यक्षा, यक्षदत्ता, भूता, भूतदत्ता, सेणा, वेणा, रेणा ।

"चक्रवर्ती की ऋद्धि"

भरतक्षेत्र के छः खंड, नौ निधान, चौदह रत्न 16,000 यक्ष, 32,000 मुकुटबद्ध राजा, 1,92,000 स्त्रीये, 84 लाख सामान्य घोडे, 84 लाख हाथी, 18 करोड बडे घोडे, 84 लाख रथ, 32,000 नाटक करनेवाले, 32,000 बडे देश, 21,000 सन्निवेश, 96 करोड सैनिक, 3,600 वेलावल, 16,000 राजधानी, 99,000 द्रोणमुख (2,000 हाथ के तलाब)

96 करोड गाँव, 49,000 बाग-बगीचे, 18,000 श्रेणीकार, सात करोड कुटुम्ब, बत्तीस करोड कुल, 80,000 पंडित, 14,000 बडे मंत्री, 14,000 बुद्धि निधान मंत्री, 32,000 नौ बारही नगरी, 99 लाख पोतार, 16,000 म्लेच्छ राजा, 14,000 कर्बट (खराब नगर), 24,000 मर्टब (आधे आधे योजन पर रहे हुए गाँव), 24,000 संबाधन (धान्य रक्षण के दुर्ग), 16,000 द्विप, 72,000 पतन, 48,000 पाटण, पांच लाख दीवी धारण करनेवाले, पांच करोड दीवटीये, 84 लाख बडे ढोल, 10 करोड पंचरंगी धजाये, तीन करोड नियोगी (व्यवस्थापक), 64,000 महाकल्याणकारक, 36 करोड छोटे रसोईदार, 36 करोड गहने धारण करनेवाले, 360 चक्रवर्तीके मूल रसोईदार, तीन लाख भोजन के मंडप, एक करोड गोकुल (एक गोकुल में 10,000 गाय), तीन करोड हरदल, 99 करोड मार्टबिक, 99 करोड दासदासी, 99 करोड पौतार, 99 लाख अंगरक्षक, 50 करोड पाणी के पोठिये, तीन करोड पायक विनोदी, 18,000 (रासभ) गधे, साठ करोड तंबोली (पान बेचनार), 99 करोड पटलतारक, प्रतिदिन चार करोड मण अनाज पकाया जाता था ।

(आचार प्रदिप)

"प्रभावक आचार्यो एवं साधुओ की संख्या"

11,16,000	शासन प्रभावक राजा
11,16,000	युगप्रधान आचार्य
55,55,55,555	अधर्माचार्या
55,55,500 क्रोड	विद्वान आचार्य
1,79,121 क्रोड 16 लाख	उपाध्याय
20,00,912 क्रोड 56,36,199	सुसाध्वीजी
1,60,03,317 क्रोडने 84 लाख	सुश्रावक
25,92,532 क्रोडने 12 लाख	सुश्राविका

"तेरह काठिये का स्वरुप"

- आलस - देवगुरु के पास जाने में आलस्य आती है ।
- मोह - स्त्रीपुरुष आदि के मोह में पडा रहना ।
- अविनय - गुरु खाने को नहि देते है तो धंधा करेगे तो मिलेगा।
- अभिमान - मन में अभिमान लेकर गुरु के सन्मुख जाना ।
- क्रोध - गुरु के सामने आक्रोश पूर्वक बोलना ।
- प्रमाद - प्रमाद में पडा रहना ।
- कृपण - ये गुरु तो पैसे खर्च करवाते है अतः उनके पास नहि जाना।
- भय - व्रत-पच्चक्खाण आदि भय के कारण नहिं जाना ।
- शोक - शोक(सोग) होने से गुरु पास नहि जाना ।
- अज्ञान - अज्ञान से वशीभूत गुरु के पास नहि जाना ।
- विकथा - अनुचित्त बात में तत्पर रहना ।
- कोतुहल - मार्गमें कोतुहल (नाटक आदि) देखने खडा रहना ।
- विषय - काम-भोग में तत्पर होने से नहि जाना ।

"भाव श्रावक के छः लक्षण"

1. कृतव्रत कर्म - सद्गुरु से धर्म सुनकर समझकर स्वीकार करे एवं तदनुरुप व्रतो का पालन करे ।
2. शीलवान - बिना कार्य कही किसी के पास न जावे तथा देश के अनुकुल वेश पहने, विकारयुक्त वचन नहि बोले ।
3. गुणवान - स्वाध्याय आदि कार्य में उद्यमवंत बने, विनय करे ।
4. ऋजुव्यहारी - धर्म एवं संसार के संबंध में वेर-विरोध उत्पन्न न करे, दूसरे की छेतरपिंडी न करे, सभी के साथ मित्रता रखे ।
5. गुरुशुश्रुषा - गुरु की तन-मन-धन से सेवा करे ।
6. प्रवचनकुशलता - सूत्र, अर्थ, उत्सर्ग, अपवाद, धर्मानुष्ठान एवं व्यवहार में कुशल बने ।

कौन किस तरह केवली बने !

1. वल्कलचीरि मुनि को - पात्र पडिलेहन करते हुए ।
2. रतिसारकुमारको - पत्नी के श्रृडगार करते हुए ।
3. गुण सागर को - हस्तमिलाप के समय ।
4. भरत महाराज को - अनित्य भावना भाते हुए ।
5. कुरगडु स्वामी को - विलाप करते समय ।
6. पृथ्वीचंद्र को - राज 'सिंहासन पर बेठे बेठे गुणसागर का केवलज्ञान सुनकर।
7. गौतम स्वामी को - विलाप करते समय ।
8. इलाचीकुमार को - नाचते नाचते संवेग भावना से, उसी समय नटडी एवं राजा राणी को भी केवलज्ञान उत्पन्न होता है ।

9. अषाढाभूति को - भरतचक्री नाटक करते करते ।
10. अईमुत्तामुनि को - इरियावही करते हुए ।
11. नागकेतु को - पुष्पराजा करते हुए ।
12. मरुदेवी माता को - पुत्रका समवसरण देखते समय ।
13. साध्वी पुष्पचूला को - आचार्य श्री को गोचरी देते समय ।
14. प्रसन्नचन्द्र ऋषि को - काउसग्ग ध्यान में मस्तक को मुण्डित जानकर।
15. कसाई के नौकर को - मछलीयें चीरते समय ।
16. कुर्मापुत्र को - जिनवाणी सुनते जातिस्मरण से घर बेठे बेठे ।
17. मेतारज मुनि को - चमडे के पट्टे के बंधन से आंख बहार आते हुए।
18. बाहुबलीजी को - छोटे भाईओ के वंदन हेतु पाँव उठाने से ।
19. ढंढण ऋषि को - गौचरी परठवते समय
20. स्कंधकसूरि के 499 शिष्यो को - कुल्य (घाणी) में पिलते समय ।
21. पुण्याढ्य राजा को - जिन दर्शन करते ।
22. गजसुकुमाल मुनि को - अंगारे से सिर जलते जलते ।
23. चंडरुद्राचार्य के शिष्य को - विहार में गुरु की मार व गालिये खातें समय।
24. मृगावती साध्वी को - गुरुणी को क्षमापना करते हुए ।
25. चन्दनबाला साध्वी को - केवली शिष्या को क्षमापना करते हुए ।
26. चंडरुद्राचार्य को - केवली शिष्या को क्षमापना करते हुए ।
27. खंधक ऋषि को - चमडी उतारते समय ।
28. झांझरिया मुनि को - वधित होते हुए ।
29. पांचसो तापसों को - भोजन करते करते ।
30. अर्णिका पुत्राचार्य को - नदी उतरते खोपडी टूटते ।

सिद्धगिरि पर सिध्धि को प्राप्त आत्माए

कौन	कितने के साथ	किस दिन
पुंडरिक गणधर	पांच करोड	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा
द्राविड़-वारिखिल्लजी	दस करोड	कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा
शांब-प्रद्युम्न	साठे साठे करोड	फाल्गुन शुक्लत्रयोदशी
पांच पांडव	वीस करोड	आसोज शुक्ला पूर्णिमा
नमिविनमि	दो करोड	फाल्गुन शुक्ला दसमी

कौन	कितने के साथ
नारदजी	91 लाख
भरत	1000
वासुदेव की पत्नी	35000
भरत मुनि	5 करोड
अजित जिन के साधु	10000
वैदर्भी	4400
बाहुबलीजी के पुत्र	1008
थावच्चा पुत्र	1000
सेलकाचार्य	500
राम-भरत	3 करोड
सोमयशा राज	13 करोड
सागर मुनि	1 करोड
अजित मुनि	17 करोड
श्रीआर मुनि	1 करोड
आदित्ययशा	1 लाख

दमितारी	14000
शुक परिव्राजक	1000
कालिक	1000
सुभद्रमुनि	1000
कदम्ब गणधर	1 करोड

(शत्रुञ्जय महात्म्य)

किसके समय में कितने संघपति हुए

- पांडवो के समय में - 258575000 राजा संघपति बने ।
- भरत राजा के समय में - 9989884000 राजा संघपति बने ।
- सागर चक्री के समय में - 509575000 राजा संघपति बने ।
- जावडशाह के समय में - 384000 राजा संघपति बने । उसके बाद 70000 भावसार संघपति बने । 16000 राजपुत्र संघपति बने, 15000 जैन ब्राह्मण संघपति बने ।, 5054 कंसारा संघपति बने, 700 चंडाल संघपति बने, 500 उक्कुड ढैढ संघपति बने (जो तलेटी की प्रदक्षिणा देकर वापिस आये)

(प्रबंध पञ्चशती)

आम राजा का एक प्रसंग

श्री बप्पभट्टिसूरिने व्याख्यान में गिरनार तीर्थ का महिमा सुनाया । यह सुनकर आम राजा एवं उनके साथ 1000 श्रावको ने यह अभिग्रह किया कि नेमिनाथ प्रभु के दर्शन के बाद ही भोजन करेंगे । तुरन्त संघ की तैयारी की एवं संघ का प्रयाण हुआ जिसमें एक लाग सुभट, एक लाख घोडे, 700 हाथी, 2000- उंट, तीन लाख भैंसे, एवं 20000 श्रावक के परिवार थै । बतीसवें दिन संघ गिरनार पहोंचा । उस समय गिरनार दिगम्बर के आधीन था । उस तीर्थ को श्वेताम्बर के स्वाधीन करके संघ माला पहनी तथा उसके बाद पारणा किया ।

"गिरनार की गरिमा"

- आगामी चोवीसी कें पद्मनाभादि चोवीस तीर्थंकर इस तीर्थ पर निर्वाण पद को प्राप्त करेंगे ।
- तेवीसवें एवं चोबीसवें तीर्थंकरो के दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक इस तीर्थ पर होंगे ।
- गत चौवीसी के 17 से 24 भगवंतो को दीक्षा, केवलज्ञान व निर्वाण कल्याणक यहाँ हुए थे ।
- नेमिनाथ प्रभु का दीक्षा, केवलज्ञान व निर्वाण कल्याणक यहाँ हुए थे ।
- महावीर प्रभुने सौधर्मेन्द्र को इस तीर्थ का वर्णन सुनाया था ।
- नेमनाथ भ. के 8,000 साल बाद सौराष्ट्र में कांपिल्यपुर नगर में रत्न श्रावक हुआ जिसने काश्मिर से गिरनार का संघ निकाला था । गिरनार पर नेमनाथ भ. की लेपमय मूर्ति की प्रक्षालपूजा करते मूर्ति नष्ट हो गई तब रत्न श्रावक ने अभिग्रह लिया की जब तक दूसरी मूर्ति प्रगट न होगी तब तक अन्न जल त्याग (20 दिन) इक्कीसवें दिन देवी प्रगट हुई और रत्न श्रावक को गुफा में ले गई वहाँ पर 18 सुवर्ण, 18 रत्न की, 18 रजत की, 18 वज्रमय की ऐसी 72 मूर्ति थी उसमें से ब्रह्मेन्द्र के हाथ भरायी हुई मूर्ति पसंद की सूतर के तांतणे से लाकर मूर्ति की प्रतिष्ठा की उस समय देवी ने कल्पवृक्ष के फूल की माला रत्न श्रावक को पहनायी थी ।

यह मूर्ति 136250 साल तक गिरनार पर रहेगी छठे आरे में अंबिकादेवी इस मूर्ति की पूजा करेगी ।

(प्रबंध पंचशती)

"गिरनार तीर्थ के नाम एवं ऊंचाई"

पहली आरे में	26 योजन	कैलासगिरि
दूसरे आरे में	20 योजन	उज्जयन्तगिरि
तीसरे आरे में	16 योजन	रैवतगिरि
चतुर्थ आरे में	10 योजन	स्वर्गगिरि
पंचम आरे में	2 योजन	गिरनारगिरि
छठे आरे में	100 धनुष	नंदभद्रगिरि

(उपदेश सप्ततिका)

"भावी तीर्थंकरो की यादी"

किसका जीव	अब कहाँ है	किस नामके जिन बनेंगे
श्रेणीक राजा	पहेली नरक में	पद्मनाभ
वीरप्रभु के काका	भवनपति में	सुदेव
श्रेणीक पुत्र उदय	भवनपति में	सुपार्श्व
पोट्टिल मुनि	चोथे देवलोकमें	स्वयंप्रभ
द्रढायु श्रावक	दुसरे देवलोकमें	सर्वानुभूति
कार्तिक शेठ	प्रथम देवलोकमें	देवश्रुत
शंख श्रावक	बारहवें देवलोकमें	उदय
आनंद श्रावक	प्रथम देवलोकमें	पेढाल
सुनंदा श्राविका	पांचवे देवलोकमें	पोट्टिल
शतक श्रावक	तीसरी नरक में	शर्तकीर्ति
कृष्ण की माता देवकी	आठवें देवलोक में	मुनिसुव्रत
कृष्ण महाराजा	तीसरी नरक में	अमम

सत्यकी विद्याधर	पांचमें देवलोक में	निष्कषाय
बलदेव	पांचवे देवलोक में	निष्पुलाक
सुलसा श्राविका	पांचवे देवलोक में	निर्मम
बलभद्र की माता रोहिणी	दूसरे देवलोक में	चित्रगुप्तत
रैवती श्राविका	बारहवें देवलोक में	समाधि
शताली श्रावक	बारहवें देवलोक में	संवर
द्विपायन	अग्निकुमारभवन में	यशोधर
कर्णराजा	बारवें देवलोक में	विजय
नारदजी	पांचवें देवलोक में	मल्ल
अंबड श्रावक	बारवें देवलोक में	देव
अमर श्रावक	नवम् ग्रैवेयके	अनंतवीर्य
स्वाति बुद्ध	सर्वार्थ सिद्ध विमान में	भद्र

"निगोद जीवों के भव"

- एक श्वासोच्छवास में सत्तर से अधिक भव करतें हैं ।
- एक मुहूर्त 65535 भव करते हैं ।
- एक दिन में 1966080 भव करते हैं ।
- एक मास में 59982400 भव करते हैं ।
- एक वर्ष में 707788700 भव करते हैं ।

"वस्तुपाल तेजपाल के सुकृत"

- 13574 जिन मंदिर बनाये
- 700 मठ बनाये
- 500 हाथी दांत के सिंहासन

- 1500 साधु प्रतिदिन बहोरने आते
- 18 क्रोड ने 96 लाख द्रव्य सिद्धाचल पर खर्चा
- 10 क्रोड द्रव्य सोमेश्वर तीर्थ में खर्च किया
- 284 पाषाणबद्ध सरोवर बनाये
- 12600 जिन मूर्ति भरायी
- 984 पैषधशाला
- 24 सुवर्ण कलश चढाये
- 700 ब्रह्मशाला बनायी
- शत्रुंजय के साढे बारह संघ निकाले
- हर साल 23 बार संघ पूजा करते
- हर साल 24 बार संघ वात्सल्य करते
- दो लाख द्रव्य शुक्ल तीर्थ में खर्चा
- दर्भावती के वैद्य को 12000 द्रव्य दिया
- वाराणसी में एक लाख द्रव्य खर्च किया
- 161000 द्रव्य द्वारिका में दिया
- 1 लाख द्रव्य प्रयाग तीर्थ में दिया
- 2 लाख द्रव्य शंखेश्वर में दिया
- 84 मसीत तुरक लोक की बनायी
- 100 पाणी की परब बनायी
- 21 आचार्य पदवी दी
- 2000 जीर्णोद्धार किया
- 300 माहेश्वर के जीर्णोद्धार किये
- 4000 पाषाण के मठ बनाये
- 700 कुए बनाये
- 12 करोड ने 80 लाख गिरनार में खर्चा

- 12 करोडने 86 लाख आबुजी पर खर्चा
- 1000 भिक्षुक प्रतिदिन भोजन करते
- 1000 गायो का दान दिया
- 700 ब्रह्मपुरी बनायी
- 465 वावडी बनायी
- 5 लाख भरुच तीर्थ में खर्च किया
- 18 करोड द्रव्य जैन एवं माहेश्वर के ग्रंथ लेखन में खर्च किया ।
- 1 लाख द्रव्य सेरीसा तीर्थ में खर्चा
- पांच लाख द्रव्य गंगा तीर्थ में खर्चा
- 1 लाख द्रव्य स्तंभन तीर्थ में खर्चा
- 1 लाख द्रव्य सोपारक तीर्थ में खर्चा
- 1 लाख द्रव्य तापी तीर्थ में खर्चा
- 416 दुर्गो बनायें
- 1 लाख माहेश्वर के लिंग स्थापे

"मंत्रीश्वर की समृद्धि"

1800 सुभट मंत्री अंग रक्षा के लिए

14000 योध्धायें 500 नामी घोडे

300 गाये, 2000 बैल

10000 नोकर (सेवक)

"मंत्रीश्वर का परिवार"

- पिता का नाम - आसराज
- चार पुत्र - लुणिग, मल्लदेव, वस्तुपाल, तेजपाल

- वस्तुपाल का पुत्र - जयंतसिंह, तेजपाल का पुत्र - लवणसिंह
- सात पुत्री : 1. जाबू देवी, 2. माकु देवी, 3. साकु देवी, 4. वन देवी, 5. सोहगा देवी, 6. वयजुका देवी, 7. पद्मल देवी ।
- वस्तुपाल का स्वर्ग गमन सं. 1298 में
- तेजपाल का स्वर्ग गमन 1308 में.

"मंत्रीश्वर द्वारा किया गया वीश स्थानक तप का उद्यापन"

- कर्णावती आदि शहरो में वीश जिन मंदिरो पर स्वर्ण कलश की स्थापना की ।
- वीश पंचवर्णी प्रतिमा भरायी ।
- बारह व्रतधारी को वात्सल्यपूर्वक लाखो द्रम्न दिये ।
- श्रुतभक्ति के लिये 24 तीर्थंकरो के चरित्र लिखायें ।

(वस्तुपाल चरित्र)

"सत्संग के सद्योग की प्राप्ति"

- अत्यंत कामांध वणकर जो मृत्यु को कुछ मिनिट पूर्व सत्संग से नवकार मंत्र सुनकर देवलोक में गया ।
- शराब बिना एक घंटे तक भी न रह सकने वाला भयंकर शराबी सत्संग के प्रभाव से मृत्यु उपरान्त कपर्दी नापक शत्रुञ्जय तीर्थ का अधिष्ठायक देव हुआ ।
- राजा कुमारपाल भी पूर्व भव में जयताक नामका डाकू था आचार्य यशोभद्रसूरिजी के सदुपदेश से उसने अपना जीवन बदल दिया ।
- अभयकुमार जैसे कल्याण मित्र के सत्संग से अनार्यदेश में उत्पन्न होने वाला आर्द्रकुमार ने दीक्षा ली तथा ईसी कल्याण मित्र के सत्संग से सुलस भी धर्मात्मा बना ।

- द्रढ पहारी एवं चिलाती जैसे डाकुओं को उसी भव में मुक्ति की माला पहनाने का श्रेय साधुओं के सत्संग को जाता है ।
- हंमेशा सात जीव की हत्या करनेवाले अर्जुनमालीने भी सुदर्शन शेठ के सत्संग से वीरप्रभु के पास दीक्षा ली ।
- प्रभु महावीर के सत्संग से इन्द्रभूति (गौतम) एवं चंडकोशिक नाग के जीवन में कषायों का शान्त होने से परिवर्तन आ गया ।
- खुद महावीर प्रभु के जीव ने भी नयसार के भव में साधुओं के सत्संग से सम्यग्दर्शन प्राप्त किया था ।
- भाई मुनि को वापिस घर लाने हेतु गया हुआ छोटा भाई फल्गुमित्र वहाँ के सत्संग में स्वयम् साधु बन गया ।
- साधु को रात्रि में मारने गये हुए डाकु भी धर्मात्मा बने ।
- बचपन में चारण मुनि के सत्संग से भीष्म को आजीवन ब्रह्मचर्य एवं अहिंसा का व्रत लेने का बल मिला ।
- गरुड पक्षी भी रामचन्द्रजी का सत्संग पाकर धर्मात्मा बना
- एक शेठ के यहाँ नोकरी करनेवाला घांची जाति का नौकर भी शेठ के सत्संग से साधु बन गया ।

"सत्संग से होनेवाले छ लाभ"

1. हितकारी शीख मिलती है ।
2. सत्पुरुषो के जीवन प्रसंग सुनने मिलते है ।
3. सत्पुरुषो का परिचय होता है ।
4. ज्ञानीयों के गुण जीवन में उतरते हैं ।
5. कर्म का क्षय होता है ।
6. जीवन में नम्रता का गुण आता है ।

"गिरिराज की महिमा"

- अतिमुक्तक केवलीने नारद ऋषि से गिरिराज की महिमा का निम्नानुसार वर्णन किया था ।

1. अन्य तीर्थ पर उग्र तपस्या एवं ब्रह्मचर्य पालने से जो लाभ होता है वही लाभ इसी तीर्थ पर निवास से प्राप्त होता है ।
2. इस तीर्थ पर एक उपवास करने से एक करोड लोगों को भोजन कराने का बराबर लाभ होता है ।
3. इस तीर्थ के स्पर्श मात्र से तीनों लोकों के दर्शन का लाभ मिलता है ।
4. गिरिराज को वंदन करने से, जहाँ जहाँ केवलज्ञानियों एवं साधुओं का निर्वाण हुआ है उन सब स्थानों की वंदन स्वतः हो जाती है ।
5. अष्टापद, समेतशिखर, पावापुरी, गिरनार, चंपापुरी आदि तीर्थो के दर्शन वंदन से सो गुना अधिक फल इस तीर्थ के वंदन स्मरण मात्र से मिलत है ।
6. जो जहाँ प्रतिमा भरवाता है व अवश्य चक्रवर्ती पद को पाता है ।
7. शत्रुञ्जय नदी में स्नान करनेवाला भव्यात्मा होता है ।

(सारावली - पयन्ना)

- इस तीर्थ पर धूपपूजा करने से 15 उपवास एवं कपूर का धूप करने से 30 उपवास का लाभ होता है ।
- इस तीर्थ पर नवकारशी करने से - दो उपवास, पोरसी करने से तीन उपवास, आयंबिल करने से 15 उपवास, पुरिमट्ठ करने से - चार उपवास, उपवास करने से - 30 उपवास, एकासणा करने के - पांच उपवास का लाभ होता है । **(शत्रुंजय - कल्पवृत्ति)**

"सिद्धगिरि की वर्तमान कालीन विशेषता"

27007 जिन मूर्ति	150 चरण पादुका
3364 सिद्धियें	200 फूट ऊँचाई
3500 जिन मंदिर	साढे सात मील का घेराव

"गौरवशाली की गौरव गाथा"

- पूज्यवादिदेवसूरिजीने साढे तीन लाख लोको को जैन बनाया था ।
- भरतचक्री वंश परंपरा में आये हुए सूर्ययशा एवं चन्द्रयशा नाम के राजा अष्टमी चतुर्दशी को पौषध के पूर्व दिन समस्त नगर में घोषणा करवाते थे कि कल पर्व दिन है ।
- पूर्व की जैन संस्थाओ में एसा नियम था जिस गाँव में जैन मंदिर न हो उस ग्राम के साथ 'श्री' शब्द नहि जोड़ा जाता था ।
- सम्राट अशोक के पौत्र ने कुल सवा लाख जिनमंदिर एवं छत्रीस हजार जिर्णोद्धार करवायें ।
- आम राजाने गोवर्धन पर्वत पर साढे तीन करोड स्वर्णमुद्राए खर्च करके जिनालय बनाया । उसके मूल मंडप में सवा लाख स्वर्ण मुद्राएं तथा रंग मंडप में 21 लाख स्वर्णमुद्राए खर्च की थी
- जब खंभात में स्तंभन पार्श्वनाथ की मूर्ती कि चोरी हुई तब पूरा खंभात उपवास पर बैठ गया था । सभी घर पर ढुंढते ढुंढते जब सुनार के घर से मूर्ति मिलि तब सभी ने पारणा किया ।
- आ. शीलभद्रसूरिजीने बारह साल की उम्र में दीक्षा ली थी उसी दिन से उन्होने छः विगई का त्याग किया था । कहा जाता है कि इस तपस्वी की देशना कभी भी निष्फल नही गई । यही आचार्य फाल्गुमित्र नाम से युगप्रधान बने ।

- कुमारपाल राजा प्रतिदिन वीतराग स्तोत्र एवं शास्त्र का स्वाध्याय करते थे अष्टमी चतुर्दशीके दिन पौषध सुबह शाम सामायिक, आरती आदि करते थे ।
- वि.सं. 1294 में वीरधवल राजा की मृत्यु हुई तब उसके विरह में 120 व्यक्ति उनकी चिता में कूदकर जल मरे थे ज्यारा जनहानी न हो इसलिये सरकार ने तुरंत पक्का चारो तरफ कोट कर दिया ।
- राजा धंधूक परमार के शासन काल में आबू पहाड की तलहटी में 444 जैन मंदिर 999 शिव के मंदिर एवं 360 करोडपति बसते थे । ये सभी करोडपति आबू के जिन मंदिर में बारी बारी से पूजा पढाते थे तथा वहाँ आने वाले आगन्तुक को एक ही दिन में धनाढ्य बना देते थे ।
- आचार्य शान्तिसूरिजीने अपने जीवन काल में 415 राजकुमारो को तथा 700 श्रीमाली परिवारो को मृत्यु के मुख से बचाकर जैनधर्म के अनुयायी बनाये थे ।
- हेमचन्द्राचार्य के अग्नि संस्कार के बाद उनकी राख लेने में इतनी पडापडी हुई कि जब राख न बची तब उस स्थान की धूल उठाकर लोग ले गये थे । जिससे उस स्थान पर खड्डा पड गया था । जिसका नाम 'हेमखाड' पडा ।
- शान्तनुं मंत्री ने चोरासी हजार सुवर्ण मुद्राएँ खर्च करके एक बडा महेल बनाया पूज्य वादिदेव सूरिजी के उपदेश से उस महल को पौषधशाला के नाम से घोषित किया ।
- आचार्य पादलिप्त सूरि 10 साल की छोटी उम्र में आचार्य बने थे ।
- तक्षशीला में 500 जिन मंदिर और लाखो जैनो की बस्ती थी ।
- राजा विक्रम ने एक करोड सुवर्णमुद्रा मे आ. सिद्धसेनदिवाकर सूरिजी का गुरुपूजन किया था ।

- आम राजा ने सवा करोड सुवर्ण मुद्रा से गुरुपुजन किया था और बप्पभट्टीसूरिजी के आचार्य पदवी के समय एक करोड स्वर्ण मुद्राऐं खर्च की थी ।
- श्रेणीक राजा आगामी चोवीशी के तीसरे आरे के 89 पक्ष व्यतीत होने के बाद शतद्वार नगर में समुचि राजा की भद्रा नामक राणी के गर्भ से उत्पन्न होंगे । चैत्र सुद 13 के दिन उनका जन्म होगा पद्मनाभ नामसे तीर्थंकर बनेगे उनका निर्वाण दिवाली के दिन होगा । महावीर प्रभु एवं पद्मनाभ के बीच में 84 हजार सात साल एवं पांच मास का अन्तर काल रहेगा ।
- शत्रुजंय तीर्थ का अंतिम जीर्णोद्धार आचार्य दुष्पहसूरिजी के सदुपदेशसेविमलवाहन राजा करवायेगे ।
- कुमारपाल राजा हेमचन्द्राचार्य की प्रतिदिन 108 सुवर्ण कमलो से गुरु पूजा करते थे ।
- आ. हीरसूरिजी के उपदेश से तेजपाल सुनार ने सं. 1950 में शत्रुंजय के अनेक जीर्ण मंदिर का उद्धार कराया था ।
- सर्व प्रथम पूर्व में आदिनाथ प्रभु के आदेश से पुंडरिक गणधर ने सवालाख श्लोक का 'शत्रुजंय महात्मय' ग्रन्थ रचा था । बाद में वीर प्रभु के उपदेश से सुधर्मास्वामीने 24000 श्लोक से संक्षिप्त बनाया । तदन्तर इसी ग्रंथ को शिलादित्य राजा के आग्रह से वल्लभीपुर में. आ. धनेश्वरसूरि ने गीर्वाण भाषा में 9000 श्लोक प्रमाण में रचना की ।
- आचार्य तुलसी (तेरापंथी) ने शत्रुंजय की प्रशंसा की जिससे उनके एक भक्त ने महामूल्यवान एक मणि कि भेट दादा के चरणों में की जो मणि आज भी पेढी में विद्यमान है ।

- श्री कृष्ण वासुदेवने 18000 साधुओ को विधि पूर्वक वंदन करके तीर्थंकर नाम, कर्म, क्षायिक समकित तथा चार नारकी के दुःख भोगने के कर्म का क्षय इस तरह तीन लाभ प्राप्त किये ।
- राजा कुमारपाल ने अंतिम चौदह साल में चौदह करोड स्वर्ण मुद्राऐं साधर्मिक भक्ति में व्यय की .
- वादिदेव सूरिजीने जिस समय दिगम्बराचार्य पर विजय प्राप्त की तब उनके अेक भक्तने तीन लाख स्वर्ण मुद्राऐं दीन दुःखी को बांटी ।
- दया के अवतार भीनमाल के माघ कवि ने पिता के डांटे हुए 36000 द्रव्य के भरे हुए चरु गरीबो को दे दिये । बाद में भोज राजा ने चार लाख स्वर्णमुद्राऐं भेट की वह भी याचक को दान में दे दी ।
- सूरत का अेक संगीतकार आफ्रिका में कार्यक्रम के लिये गया । वहां से 25000 रुपये लाये सूरत स्टेशन पर उतरते ही सारा द्रव्य याचको को दे दिया ।
- मल्ल श्रेष्ठिने वादिदेव सूरि की गुरुपूजा 50,000 द्रव्य से की थी ।
- धारा नगरी के भोजराजा ने वादिवेताल शान्तिसूर की 12,60,000 द्रव्य से पूजा की थी । उसमें से 12 लाख द्रव्य मालवा में एवं 60,000 द्रव्य थराद में चैत्य की देवकुलिकाए बनवायी थी ।

"साधर्मिक भक्ति"

- राजा दंडवीर्य अपने आंगन में आये समस्त साधर्मिको को भोजन कराने के बाद ही भोजन करने वाला था । एक समय इन्द्र ने उसकी परीक्षा की आठ दिन तक निरंतर साधर्मिक भेजते रहे इससे राजा ने आठ दिन उपवास किए इससे प्रसन्न होकर इन्द्र ने राजा को दिव्य धनुष्य कुन्डल आदि भेट किये ।

- थराद के आभू संघवी ने 360 साधर्मिक को अपने जैसे श्रीमंत बना दिया था ।
- देवगिरि में जगसिंह नाम के शेठ ने अपने 360 साधर्मिक को अपने जैसे मालदार बनाया था ओर उस गांव में सभी बारी में साधर्मिक वात्सल्य करते थे रोज का खर्च 72 टाक जितना होता था ।
- संभवनाथ प्रभुने तीसरे भव में तीर्थकर नाम कर्म उपार्जित किया उसका प्रमुख कारण दुष्काल में की गई साधर्मिक भक्ति था ।
- मांडवगढ में एसा नियम था कि कोई भी नया साधर्मिक गाँव में आये तो उसको एक इंट एवं एक सुवर्णमुद्रा देते थे जिससे, एक दिन में धनाढ्य बन जाता था ।
- दानवीर जगडुशाने सं. 1315 के समय मे दुकाल के समय विभिन्न देशो में दानशालाएँ खोली थी । जैसे -

  रेवाकांठा में - 33, सोरठ देश में - 33, गुजरात में - 33, लाट देश में - 30, कच्छ में - 30, मेवाड में - 40, मालव देश में - 40, भाल देश में - 40, उत्तरप्रदेश में - 12, एवं राजा को इतना दान दिया था...
- राजा विसलदेव को - 800 मूडा
- सिंघ का हमीर देव को - 12000 मूडा
- दिल्ही के सुलतान को - 21000 मूडा
- मालवा के राजवी को - 18000 मूडा
- मेवाड के राजवी को - 32000 मूडा अन्न दान दिया था

(100 मण - 1 मूडा होता है)

- वस्तुपाल मंत्रीने 36000 श्रावकों को सुवर्णतिलक से विभूषित किया था ।

"सांसारिक संबंधो की उपेक्षा"

- राज्य के लोभ से कोणिक ने श्रेणिक को केद किया - पिता-पुत्र
- भरत ने चक्ररत्न के लिये बाहुबली के साथ लडाई की - भाई-भाई
- ब्राह्मणीने धन के लिये अमर को बेच दिया - मा-पुत्र
- मणिरथ भाभी पर विषयांध बनकर छोटे भाई युगबाहु की हत्याकी - भाई भाई
- विषयांध राणीने परदेशी राजा का गला दबा दिया - पति-पत्नी
- अंजनाको ससुराल एवं मायके दोनो तरफ से निकाली गई - संसारी संबंध की
- कोणिक के चेटक मामा के सामने युद्ध छेडा - मामा-भांजा
- करकंडु ने दधिवाहन राजा के साथ लडाई की. - पिता-पुत्र
- राज्य के लोभ से पिताने अनेक पुत्र को विकलांग बनाया - पिता-पुत्र
- कंस ने देवकी के संतान को जन्मते ही मार डाला - मामा-भांजा
- हरिषेण ने भीमसेन को बंदी बनाने का आदेश दिया - भाई-भाई
- कमठने मरुभूति का मस्तक पत्थर से छूंद डाला - भाई-भाई
- सोमिलविप्र ने गजसुकुमाल मुनि के शिर पर आग लगाई - ससरा-जमाई

कौन कहां है ?

कौन	कहां है ?	आधार ग्रंथ
रामचंद्रजी	मोक्ष में	पद्मचरित्र
सीता	बारवे देवलोक में	जैन रामायण
अनुपमादेवी	महाविदेह में केवली	जैन इतिहास
श्रेणिक	नरक में	वीर चरित्र
द्रोपदी	12 वे देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
वसुदेव	देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
रोहिणी	देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
देवकी	देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
बलदेव	देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
रथकार	पांचवे देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
चेटकराजा	देवलोक में	कुमारपाल प्रति.
दशर्ण भद्र	मोक्ष में	ठाणांग सूत्र
नेदिषेण	मोक्ष में	उपदेश प्रासाद
अषाढा भूति	मोक्ष में	उपदेश प्रासाद
कैकेयी	मोक्ष में	जैन रामायण
हनुमान	मोक्ष में	जैन रामायण
लव-कुश	मोक्ष में	जैन रामायण
भरत	मोक्ष में	जैन रामायण
हेमचंद्राचार्य	चोथे देवलोक में	विचार सार संग्रह
कुमारपाल	व्यन्तर में	विचार सार संग्रह
इन्द्रजित	मोक्ष में	शत्रुञ्जय महा.

मेघनाद	मोक्ष में	शत्रुञ्जय महा.
लक्ष्मण	चोथी नरक में	नेमिनाथ चरित्र
रावण	चोथी नरक में	नेमिनाथ चरित्र
पांच पांडव	मोक्ष में	पांडव चरित्र
मम्मण शेठ	सातवी नरक में	उपदेश प्रासाद
चंदनबाला	मोक्ष में	उपदेश प्रासाद
मरुदेवी माता	मोक्ष में	उपदेश प्रासाद
गौशाला	बारवें देवलोक में	महावीर चरित्र

श्रेणिक राजा का परिवार

23 रानीये	23 पुत्र	पुत्रका दीक्षा पर्याय	पुत्र कहाँ उत्पन्न हुए
नंदा	जाली	16 साल	विजय विमान में
नंदमति	मयाली	16 साल	विजयंत विमान में
नंदोतरा	उवयाली	16 साल	जयंत विमान में
नंदसेना	पुरुषेना	16 साल	अपराजित विमान में
मरुता	वारिषेण	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
सुमुरुता	दीर्घदंत	12 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
महासमरुता	लष्टदंत	12 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
मरुदेवा	वेहल	पांच साल	अपराजित विमान में
भद्रा	वहेरा	पांच साल	जयंत विमान में
सुभद्रा	अभयकुमार	16 साल	विजय विमान में
सुजाता	दीर्घसेन	16 साल	विजय विमान में
सुमनातीता	महासेन	16 साल	विजय विमान में

भूतदिन्ना	लष्टदंत	16 साल	विजय विमान में
काली	गुढदंत	16 साल	वेजयंत विमान में
सुकाली	शुद्धदंत	16 साल	जयंत विमान में
महाकाली	हल्ल	16 साल	जयंत विमान में
कृष्णा	द्रुम	16 साल	अपराजित विमान में
महाकृष्णा	द्रुमसेन	16 साल	अपराजित विमान में
वीरकृष्णा	महाद्रुमसेन	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
रामकृष्णा	सिंह	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
पितृसेन्नकृष्णा	सिंहसेन	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
रामसेन कृष्णा	महासिंहसेन	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में
चेलणा	पर्हासेन	16 साल	सवार्थसिद्ध विमान में

(अनुत्तरोववाई सूत्र)

"श्रेणीक राजा के दस पौत्र की गति"

1. पद्मकुमार - सौधर्म देवलोक में
2. महापद्म - ईशान देवलोक में
3. भद्रकुमार - सनत्कुमार देवलोक में
4. सुभदकुमार - माहेन्द्र देवलोक में
5. पद्मभद्र - ब्रह्म देवलोक में
6. पद्मसेण - लांतक देवलोक में
7. पद्मगुल्म - महाशुक्र देवलोक में
8. नलिन गुल्म - सहस्रार देवलोक में
9. आनंदकुमार - प्राणत देवलोक में
10. नंदनकुमार - अच्युत देवलोक में(निरयावलिका सूत्र)

"एसे थे पेथड़ मंत्री"

- माधव नाम के भाट ने एक ही दिन में 40 से अधिक माईल का रस्ता काटकट मंत्री पेथड़ को धर्मघोषसूरिजी के आगमन की सूचना दी थी । इस समाचार से हर्षित होकर मंत्रीश्वर ने सोने की जीभ, हीरे के बत्तीस दांत एवं पांच जोडी रेशमी वस्त्र तथा एक गाँव भेट किया ।
- इस आचार्य के नगर प्रवेश में मंत्रीश्वरने 72 लाख द्रव्य खर्च करके समस्त मांडवगढ को शानदार ढंग से सझाया था ।
- भगवती सूत्र का व्याख्यान, सुनते समय उस में आनेवाले प्रत्येक 'गोयमा' शब्द के समय एक सोनामोहर से पूजा करते थे । एसे 36,000 स्वर्णमुद्राओ से पूजा की । उस द्रव्य से भरुच में सात ज्ञान भंडार स्थापन किये । एवं आगम लिखवायें ।
- जब मंत्रीश्वरने प्रथम व्रत ग्रहण किया तब एक स्वर्णमुद्रावाले लड्डु की प्रभावना तथा चतुर्थ व्रत स्विकार किया तब 16,000 द्रव्य व्यय करके महोत्सव किया था । एवं 1,400 श्रावको को पांच पांच रेशमी वस्त्र भेट किये थे ।
- 18 लाख द्रव्य व्यय करके शत्रुन्जयावतार नामका 72 देवकुलिका से युक्त भव्य मंदिर बनाया, उसके अलावा 84 गाँवो में जिनमंदिर बनवायें । मांडवगढ के 300 जिनमंदिर का जिर्णोद्धार करके स्वर्णकलश व ध्वजाए चढाई ।
- गिरनार तिर्थयात्रा के समय दिगम्बरो के साथ प्रतिस्पर्धा होने से 22,400 तोला (56 धडी) सुवर्ण मुद्रा बोलकर, प्रथम तीर्थमाला पहनी थी ।
- पालखी में बैठकर राजमहल जाते समय 'उपदेश माला' नामका ग्रंथ कंठस्थ करते थे ।

- राजवी जयसिंह को सात व्यसन छुडवाकर दस पर्व तिथि के दिन समस्त राज्य में सात व्यसनों की मुक्ति के लिये घोषणा करवाई थी ।
- पेथड़ मंत्री की पत्नी प्रतिदिन मंदिर जाते समय सवाशेर स्वर्ण का दान देती थी, उस प्राप्त करने हेतु याचको की भीड लगती थी ।
- देवगीरी का मंदिर पूर्ण होने की बधाई देनेवाले को मंत्रीश्वरने सवा लाख टांक का दान दिया था । (टांक - टांकणा से खोदकर बनाया हुआ सुवर्णरजत का असली सिक्का) खंभात में पादशाह ने सुवर्ण की महोर से वीस गुना ज्यादा वजन का सुवर्ण एवं रज के टांक बहार पाडे थे ।
- सात करोड सुवर्णमुद्रा खर्च करके अनेक आगम ग्रंथ लिखवाये थे ।
- मंत्रीश्वर की पुष्पपूजा देखकर राजा सारंगदेव को भी आश्चर्य हुआ था ।
- बत्तीस साल की उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत स्विकार किया था ।
- पेथड़ मंत्री के पिता देदाशा ने काशमीर से आये हुए सार्थवाह के पास से 50 पोठे (बोरी) केशर की खरीदी की थी । वो सार्थवाह 10,000 बैलो के साथ 360 तरह - तरह के करियाणे लेकर आया था । देदाशाने 50 पोठे में से 49 पोठे चूे में डालकर उपाश्रय बनाया । जो कुंकमरोल नाम से प्रसिद्ध हुआ । उस उपाश्रय में केशर की सुगंध - सुगंध हो गई । बाकी की एक पोठ जिन मंदिरो में भेट की ।
- 56 धड़ी सुवर्ण की बोली बोलकर गिरनार तीर्थ पर इन्द्र माला पहनी ।
- 56 धडी सुवर्ण की बोली बोलकर गिरनार को श्वेतांबर बनाया ।
- 21 धडी सुवर्ण की बोली बोलने के बाद एक घटिका में एक योजन चल सके एसी (सांढ) उपर सुवर्ण आने के बाद उसको भरकर तीसरे दिन मंत्रीश्वर ने पारणा किया ।

- मांडवगढ से दो कोष दूर साधु भगवंत बिराजमान हो वहां जाकर प्रतिक्रमण करते एवं चार कोष की दूरी पर जाकर पक्खी प्रतिक्रमण करते।
- इस मंत्रीश्वरने हेमंडमंत्री के नाम से तीन साल तक दानशाला खुल्ली रखी जिस में सवा करोड का खर्च हुआ ।
- पेथड़ मंत्री को राज्य की तरफ से सालभर में 147 किलो सुवर्ण मिलता था ।
- इस मंत्रीने नमस्कार महामंत्र का उद्यापन किया था जिस में 68 - सुवर्ण के गोले, 68 सभी प्रकार के फल, 68 सभी तरह के सुवर्ण - रजत के सिक्के, 68 रेशमी वस्त्र, 68 ध्वजा आदि ।
- जब मंत्रीश्वरने सम्यक्त्व व्रत ग्रहण किया तब 1,24,000 साधार्मिक को एक लड्डु में एक सुवर्णमुद्रिका भेट की थी ।
- मंत्रीश्वरने 11 लाख द्रव्य व्यय करके शत्रुंजय का संघ निकाला था । जिस में सात लाख मनुष्य, बावन जिनमंदिर, 12,000 गाडे थे ।

(सुकृत सागर - उपदेशसार)

"अयोध्या नगर का वर्णन"

- इस नगर का कोट 1,200 धनुष उंचा एवं 700 योजन पृथ्वी में था ।
- किल्ले का प्रकार 100 धनुष ।
- कोट के उपर का भाग (कोशीका) 500 धनुष ।
- 400 दरवाजे, 1,68,000 खिड़की, तलहटी 6 योजन ।
- कोठा (बुर्ज) 72 लाख, बिजेहरा 94 लाख ।
- नाभि राजा के लिए सात मंजिला स्वर्ण आवास ।
- ऋषभकुमार के लिए 21 मंजिला स्वर्ण आवास जो तीनो लोक में सुंदर है उसमें 1008 खिडकीयाँ ।

- 98 भाईयो के अलग अलग 98 आवास ।
- राणी को शास्त्रभंडार व सुन्दरी को नौ निधियें सुप्रत की ।
- क्षत्रियों व कारीगरो के लिए पृथक पृथक आवास । **(जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति)**

"वस्तुपाल-तेजपाल के भव"

- वस्तुपाल के स्वर्गारोहण से ही वर्धमानसूरिने जीवन पर्यन्त आयंबिल तप किया था ।
- वर्धमानसूरि अंत समय में शंखेश्वर प्रभु का ध्यान धरते धरते कालधर्म को प्राप्त हुए और शंखेश्वर तीर्थ के अधिष्ठायक देव बने ।
- इस अधिष्ठायक देव ने महाविदेह में जाकर सीमंधर स्वामी को पूछा तब सीमंधर स्वामीने कहा की तेजपाल की पत्नी अनुपमा देवी महाविदेह में एक शेठ की पुत्री के रुप में उत्पन्न हुई है । उसने आठ वर्ष की आयुः में संयम स्विकार करके घाती कर्मो का नाश करके केवलज्ञान प्राप्ति किया है । वर्तमान में देवताओं से वंदित बार पर्षदा में बिराजमान है । कोटि वर्ष पर्यन्त संयम पालकर मोक्ष में जायेगी ।
- तेजपाल का जीव यहाँ से प्रथम देवलोक में जायेगां वहाँ से मनुष्य भव में चारो प्रकार की आराधना कर के चोथे भव में मोक्ष जायेगां ।
- वस्तुपाल का जीव यहाँ से च्यवन होकर पुष्कलावती विजय में पुंडरिकीणी नगरी में कुरुचन्द्र नाम का राजा हुआ वहाँ से राजपाट का त्याग कर दीक्षा का पालन कर के विजय विमान में अहमिंद्र बने वहाँ से च्यवन होकर वापिस महाविदेह के विजय में उत्पन्न होकर राजपाट का वैभव भोगकर संयम लेगा और उसी भव में केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में जायेगां ।

(शंखेश्वर इतिहास)

"आम राजा की पौषधशाला"

गोपगिरि के आमराजा ने गुरुभक्ति हेतु एक विशाल पौषधशाला बनवायी। जिस में 100 थंभे, तीन प्रवेशद्वार, विशाल व्याख्यान मंडप था। इसमें एक ज्योतिषी मणिओं से अलंकृत घंटा है। चन्द्रकान्त मणियों से उसका तल बना था। उस में कुल तीन लाख द्रव्य का व्यय हुआ।

"अकबर बादशाह की क्रूरता"

1. चित्तोड विजय के समय में लाखो स्त्री-पुरुषो व पशुओ का निर्ममतापूर्वक संहार किया था।
2. असंख्य ब्राह्मणो का संहार किया जिसके जनेऊ (जनोई) का वजन 74 1/2 मण हुआ था।
3. लाहोर के जंगल में एक लाख पशुओं का कत्ल किया था।
4. सं. 1620 में गोडवाड की राणी दुर्गावती के साथ युद्ध में भयंकर आचरण किया था।
5. शिकार करने के रीसालें में उसके पास 500 भेंसे, 30,000 कुत्ते, 20,000 वाघरी, 500 चीत्ते एवं बाज व शिकारा पक्षी थे।
6. छोटी सी भूल के कारण अपने बारह साल के नोकर को महल की खिडकी से बाहर फेंक दिया जिससे वो तत्काल मर गया।
7. अपनी खुशामत न करनेवाले गंग कवि को हाथी कें पेंरो तले कुचलकर मरवाया था।

एसे क्रूर अकबर को हीरसूरिजीने बिल्कुल अहिंसक बना दिया।

"पंचम काल में सत्य होते हुए तीस वाक्य"

1. नगर गाँव जैसे होंगे ।
2. राजा यमदंड़ जैसे कठोर होंगे ।
3. प्रधान रिश्वत खोर होंगे ।
4. गाँव स्मशान बन जायेंगे ।
5. कुटुंबी दास जैसे बनेंगे ।
6. सुखी व्यक्ति निर्ल्लज्ज बनेंगे ।
7. कुलवंती नारी वेश्यासम होगी ।
8. पुत्र स्वच्छंदी बनेंगे ।
9. शिष्य गुरु का सामान करेंगे ।
10. दुर्जन सुखी होंगे ।
11. सज्जन दुःखी होंगे ।
12. देश में दुष्काल पडेगा ।
13. पृथ्वी दुष्ट सत्वाकुल होगी ।
14. ब्राह्मण अर्थलोभी एवं अस्वाध्यायी होंगे ।
15. श्रमण गुरुकुल को छोड देंगे ।
16. यतिकषाययुक्त मंदमतिवाले होंगे ।
17. समकिति देव एवं मनुष्य अल्पबली होंगे ।
18. विद्या-मंत्र-औषध का प्रभाव कम होगा ।
19. मनुष्य को देवदर्शन नहि होंगे ।
20. दूध-कर्पूर-कस्तुरी वर्ण विहीन बनेंगे ।
21. बल-धन व आयुष्य का हास होगा ।
22. मास कल्प के योग्यक्षेत्र नहि रहेंगे ।
23. ग्यारह प्रतिमा का विच्छेद होगा ।
24. आचार्य शिष्य को नहि पढायेंगे ।
25. शिष्य कलह करनेवाले होंगे ।
26. श्रमण कम एवं मुंड ज्यादा बनेंगे ।
27. आचार्य अपना मत प्रसारित करेंगे ।
28. म्लेच्छों के राय शक्तिशाली बनेंगे ।
29. आर्य देश के राजा अल्पबली बनेंगे ।
30. मिथ्यादृष्टि देव बलवान होंगे ।

"नवपद के नाम गुण व वर्ण"

नाम	गुण	वर्ण	नाम	गुण	वर्ण
अरिहंत	12	सफेद	दर्शन	67	सफेद
सिद्ध	8	लाल	ज्ञान	51	सफेद
आचार्य	36	पीला	चारित्र	70	सफेद
उपाध्याय	25	हरा	तप	12	सफेद
साधु	27	काला			

प्रभु के आगमन की बधाई लानेवाले को दिया जानेवाला दान

1. चक्रवर्ती - साढे बार लाख वृत्तिदान एवं साढे बारह क्रोड स्वर्ण मुद्राऐं का प्रीतीदान देते हैं ।
2. वासुदेव - साढे बारह हजार वृत्तिदान एवं साढे बारह लाख रुपये प्रीतिदान देते है ।
3. महाराजा-गण - साढे बाहर हजार वृत्तिदान एवं साढे बारह लाख रुपये प्रीतिदान देते हैं ।
4. नगर शेठ, मंत्री, सेनापति आदि अपने वैभव अनुसार दान देते है ।

(आवश्यक निर्युक्ति)

"प्रभु का प्रमाद काल"

ऋषभदेव प्रभु का छद्मस्थ अवस्था में - अहोरात्र ।

वीरप्रभु का छद्मस्थ अवस्था में - अहोरात्र ।

शेष तीर्थंकरो का छद्मस्थ अवस्था में - अभाव ।

"हरिवंश की उत्पत्ति"

श्री शीतलनाथ प्रभु के शासन काल में पूर्व संबंध बैरी देव ने हरिवर्ष के युगलिये को वहाँ से लाकर भारतक्षेत्र में रखा वहाँ से हरिवंश की उत्पत्ति हुई ।

"वीतराग की विशिष्टता"

- ऋषभादि आठ जिनेश्वरो को प्रथम भिक्षा देनेवाले उसी भव में मोक्ष गये। शेष नौ से सोलह तक के जिनेश्वरो को प्रथम भिक्षा देनेवाले उसी भव में अथवा दूसरे या तीसरे भव में मोक्ष गये अथवा जायेंगे ।
- तेवीस जिनेश्वरों को दिन के पूर्व भाग के प्रथम प्रह में केवलज्ञान प्राप्त हुआ । एवं वीरप्रभु को दिन के पश्चिम भाग के अंतिम प्रहर में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ।
- प्रभु को दान देते समय देनेवाले के घर प्रगट होनेवाले 5 दिव्य लक्षण ।
  1. जल एवं पुष्पो की वृष्टि.
  2. साढे बारह करोड स्वर्ण की वृष्टि
  3. वस्त्रो की वृष्टि
  4. देव दुंदभिनाद
  5. "अहो सुदान" की तीन बार घषणा ।
- ऋषभदेव प्रभु के तीर्थ में उत्कृष्ट तप - एक वर्ष ।
- चौदह पूर्व की प्रवृत्ति का काल ऋषभदेव से कुंथुनाथजी के काल में असंख्यात काल । विच्छेद संख्यातकाल ।
- अरनाथजी से पार्श्वनाथजी तक संख्यात काल । विच्छेद - असंख्यात काल ।
- वीर प्रभु के शासन में 1,000 साल । विच्छेद - 20,000 साल ।

(सप्रति शतस्थान प्रकरण)

"भावी तीर्थंकर"

- श्री ऋषभदेव के तीर्थ में मरीची नाम का पौत्र महावीर का जीव प्रसिद्ध हुआ ।
- सुपार्श्वनाथ के तीर्थ में वर्मराजा का जीव प्रकट हुआ ।
- शीतलनाथ के तीर्थ में श्रीकेतु, त्रिपृष्ठ, मरुभूति, अमिततेज एवं धन नाम के जीव प्रकट हुए ।
- मुनिसुव्रत स्वामी के तीर्थ में रावण एवं नारद का जीव प्रकट हुआ।
- नेमिनाथ के तीर्थ में प्रसिद्ध कृष्ण भावि जिन बनेंगे ।
- पार्श्वनाथ के तीर्थ में अंबड, सत्यकि एवं आनंद का जीव प्रकट हुआ।
- महावीर स्वामी के तीर्थ में श्रेणीक, सुपार्श्व, पोट्टिल, उदायी, शंख, द्रढायु, शतक, रेवती एवं सुलसा ये नौ जीव प्रगट हुए। ये सभी भावी तीर्थंकर बनेंगे ।

"होली का प्रायश्चित"

- गुलाल (रंग) उडाने पर 10 उपवास
- एक मटका पानी गिराने पर 10 उपवास
- मूत्र डालने पर 50 उपवास
- एक कंडा (छाणा) डालने पर 25 उपवास
- गाली बोलने पर 15 उपवास
- असभ्य गीत गाने से 150 उपवास
- नगारा (ढोल) बजाने पर 70 उपवास

- होली में लकडी जलाने पर 20 उपवास
- होली में हार (माला) डालने पर 100 बार जलकर मरना पडेगा
- श्रीफल (नारियल) डालने पर 1000 बार जलकर मरना पडेगा
- धूल डालने पर 25 बार जलकर मरना पडेगा
- होली के लिये खड्डा खोदने पर 100 बार जलकर मरना पडेगा
- होली जलाने से 100 बार चंडाल कुल में जन्म होगा
- होली का व्रत करने से 1000 म्लेच्छ कुल में जन्म होगा
- सुपारी डालने से 50 बार मरना पडेगा ।

(होली पर्व कथा)

"मंगल चैत्य"

- श्रावक के घर के द्वार शाख के काष्ट पर मध्य भाग में जिन प्रतिमा होनी चाहिए । उसे 'मंगल चैत्य' कहते है । प्राचीन काल में मथुरा नगर के प्रत्येक घर के द्वार पर प्रतिमा स्थापन की जाती थी ।

(प्रवचन सारोद्धार)

- केवल एक बार शहद (मध) बिन्दु का भक्षण करने से सात गाँव जलाने जितना पाप होता है । **(उपदेश प्रसाद)**

"जानने योग्य"

- भरत महाराजाने अपने ५०० पुत्रों एवं ७०० पौत्रो को दीक्षा दिलवायी थी ।
- कृष्ण राजा एवं चेटक राजा को एसा नियम था कि अपनी संतान

की भी शादी न करना । उन्होनें अपनी पुत्रीयें एवं थावच्चा आदि पुत्र को दीक्षा दिलवायी थी ।

- नलराजा का भाई कुबेर नव परिणित होते हुए भी ज्ञानी के मुख से अपनी आयु सिर्फ नव प्रहर (एक दिन व तीन घंटा) शेष जानकर संयम अंगीकार किया एवं सर्वार्थ सिद्धि विमान में उत्पन्न हुआ ।
- गुणवर्मा राजा के १७ पुत्रो ने मिलकर १७ प्रकारी पूजा में से एक एक प्रकार की पूजा की - फल स्वरुप १७ पुत्र उसी भव में मोक्ष गयें ।

"विद्वान आचार्य एवं साधु"

- महोपाध्याय समय सुंदर गणिने सं.१६५२ में लाहोर में 'राजा नो ददते सौख्यम्' चरण के आठ लाख अर्थ किये थे । जिस ग्रंथ का नाम अष्टलक्षी अर्थरत्नावली हैं ।
- आ. देवरत्नसूरिजीने 'नमो लोए सव्व साहूणं' पद में सिर्फ सव्व शब्द के ३९ अर्थ किये थे । जो 'आगमिक' गच्छ के थे ।
- उपाध्याय लाभविजयजी ने 'नमो दूर्वार रागादि के' ५०० अर्थ किये थे ।
- पंन्यास हर्षकुल गणिने 'नमो अरिहंताणं' पद के ११० अर्थ किये थे ।
- कवि श्रीपालने 'भूभारोद्धरणो' पद के दश में श्लोक के १०० अर्थ किये थे ।
- आ. जयसुंदरसूरिजीने 'योगशास्त्र' के पांचवे श्लोक के १०० अर्थ किये थे ।
- खरतरगच्छाचार्य जिनप्रभसूरि प्रतिदिन नयी पांच गाथा बनाने के बाद आहार पाणी करते थे ।

- आ. विजयप्रभ सूरि के शिष्य मुनि जितविजयजी जब दिन का अंतिम प्रहर बाकी रहता चार घटिका में ३६० नयी गाथा करते थे ।
- आ. धर्मघोषसूरि सिर्फ छ घटिका में ५०० श्लोक कंठस्थ करते थे ।
- आ. विजयसेन सूरिजी ने 'नमो दुर्वार रागादि' के ७०० अर्थ किये थे ।
- आ. मल्लवादी सूरीने केवल एक श्लोक के आधार से १०,००० श्लोक प्रमाण 'द्वादशार नयचक्र' की रचना की थी ।
- उपा. यशोविजयजीने सिर्फ एक रात्रि के समय में ४००० श्लोक एवं उपा. विनय विजयजीने ३००० श्लोक कंठस्थ कीये थे ।

(जैन परंपरा का इतिहास)

"बालक हुए सूरीश्वर"

- आ. हेमचन्द्राचार्य-पांच साल के उम्र में संयम अंगीकार किया (प्रभावक च.)
- आ. आनंदविमलसूरि - पांच साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. विजयसेन सूरी - नौ साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. विजयदेव सूरी - नौ साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. सोमसुन्दरसूरी - सात साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. विजयानंदसूरी - नौ साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. विजयप्रभसूरी - नौ साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. मुनिसुन्दरसूरी - सात साल की उम्र में संयम अंगीकार किया
- आ. बलभद्रसूरी - सात साल की उम्र में संयम अंगीकार किया

हमारे अन्य प्रकाशन

Serving JinShasan
198098
gyanmandir@kobatirth.org

श्री पारस-गंगा ज्ञान मंदिर

प्राप्ति स्थान

बी-103,104, केदार टावर, राजस्थान होस्पीटल के सामने, शाहीबाग,
अमदावाद - 4. फोन : 22860247 M.: 9426539076 (राजेन्द्रभाई)

NAVNEET PRINTERS M. 98252 64177